X Class Hindi First Language

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

उमंग-2

FREE

हिंदी

प्रथम भाषा

कक्षा-10

X Class Hindi First Language

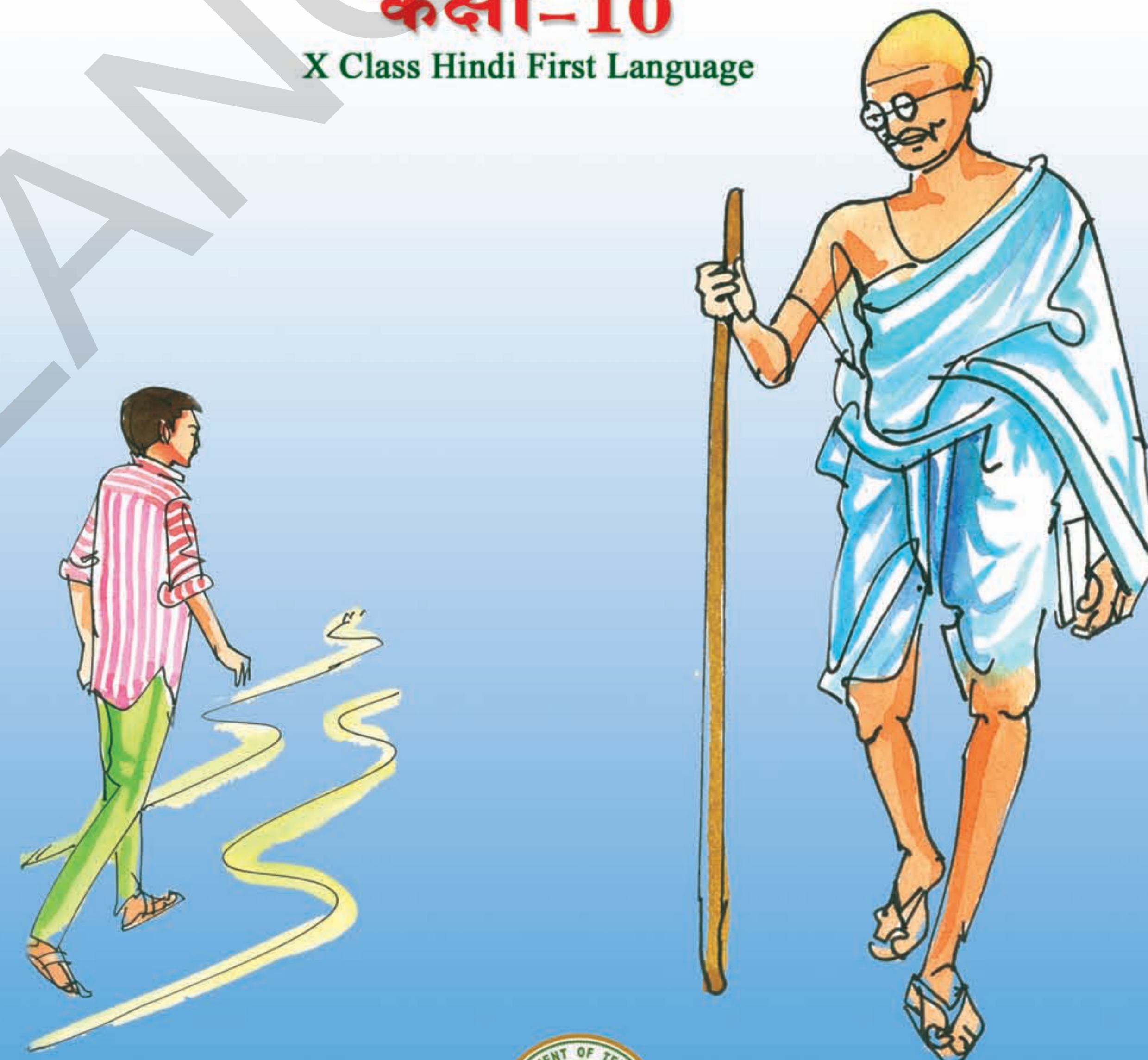

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

SCERT TELANGANA

विद्यार्थियों के लिए विशेष सूचनाएँ

* यह पाठ्यपुस्तक आप के स्तर और रुचियों के अनुरूप बनायी गयी है। इससे आप भाषा के सभी कौशलों का विकास कर सकते हैं। इसके लिए आप अध्यापक का मार्गदर्शन व सहयोग ले सकते हैं।
* मार्गदर्शिका, विषय सामग्री, प्रश्नोत्तरी आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए। 'शब्दकोश' का उपयोग कर सकते हैं। इसके साथ-साथ समाचार पत्र, पुस्तकालय की पुस्तकें, बाल साहित्य आदि का पठन करना चाहिए।
* हर पाठ के प्रारंभ में उन्मुखीकरण दिया गया है। इसके सहारे पाठ्य विषय समझने की कोशिश करनी चाहिए।
* हर पाठ में 'अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया' के अभ्यास दिये गये हैं। इसमें 'सुनो-बोलो' और 'पढ़ो' अभ्यास के प्रश्न हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार कर देने चाहिए। 'पढ़ो' प्रश्नों के उत्तर पाठ पढ़कर देने चाहिए। इसका उद्देश्य वाचन व अर्थग्राह्यता की क्षमता का विकास करना है। इन प्रश्नों के उत्तर विचारात्मक होने चाहिए। इससे आपकी बौद्धिक क्षमता का विकास होगा।
* हर पाठ में 'अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता' के अभ्यास दिये गये हैं। इसमें 'लिखो', 'सृजनात्मक अभिव्यक्ति' और 'प्रशंसा' के प्रश्न हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में देना चाहिए।
* हर पाठ में 'भाषा की बात' के अभ्यास दिये गये हैं। इसमें शब्द-भंडार व व्याकरणांश के अभ्यास हैं। इन अभ्यासों का हल समूहों में बैठकर करना चाहिए। आवश्यकतानुसार अध्यापक का सहयोग भी लेना चाहिए।
* 'परियोजना कार्य' शोध एवं खोज की प्रवृत्ति पैदा करता है। इसे आप व्यक्तिगत या समूह में कर सकते हैं। इसमें संग्रह कर कक्षा में प्रदर्शन करने के कार्य दिये गये हैं। आपके द्वारा की गयी परियोजनाएँ अध्यापक के पास सुरक्षित रखनी चाहिए।
* पाठ्य पुस्तक भाषा विकास और सर्वांगीण विकास में सहायक व साधन मात्र है। साध्य नहीं। अतः हमें किसी भी प्रश्न का उत्तर सोच विचार कर अपने शब्दों में लिखने का भरपूर प्रयास करना चाहिए। यह पाठ्य पुस्तक रटंत शिक्षा का खुलकर विरोध करती है। क्योंकि शिक्षा का अर्थ अंतर्निहित क्षमताओं का बहिर्मुखी विकास करना है न कि रटना।

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य—भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह—

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें।

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखें और उनका पालन करें।

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखें।

(घ) देश की रक्षा करें और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करें।

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों।

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करें।

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहें।

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करें, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सकें।

SCERT TELANGANA

उमंग - २

कक्षा - 10 हिंदी (प्रथम भाषा)

Class-X Hindi (First Language)

संपादक

प्रो. शकुंतला रेड्डी
क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

श्रीमती फराह नसरीन
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, गवर्नमेंट आई.ए.एस.ई. हैदराबाद

प्रो. शुभदा वांजपे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

डॉ. अनीता गांगुली
सहायक प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

प्रधान समन्वयक

श्री सय्यद मतीन अहमद
समन्वयक, हिंदी विभाग,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा राज्य , हैदराबाद

सह-समन्वयक

श्री सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा राज्य

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा राज्य

विशेष सलाहकार

डॉ. रमाकांत अग्निहोत्री
भारतीय भाषा आधार पत्र संपादक, दिल्ली वि.वि., दिल्ली

श्री सुवर्ण विनायक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, हैदराबाद

पाठ्यपुस्तक विकास एवं प्रकाशन समिति

श्री जी. गोपाल रेड्डी
निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा राज्य

डॉ. एन. उपेंदर रेड्डी
अध्यक्ष, सीएंडटी, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा राज्य

श्री बी. सुधाकर
निदेशक, सरकारी पाठ्यपुस्तक प्रेस, तेलंगाणा राज्य

विद्या से बढ़ें।
विनय से रहें।

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

क़ानून का आदर करें।
अधिकार प्राप्त करें।

SCERT TELANGANA

© Government of Telangana State, Hyderabad

First Published 2014
New Impressions - 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020

All rights reserved

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Director of School Education, Hyderabad, Telangana State.

SCERT TELANGANA

This Book has been printed on 70 G.S.M. Maplitho
Title Page 200 G.S.M. White Art Card

Free Distribution by T.S. Government 2020-21

Printed in India
at Telangana State Govt.Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad,
Telangana State.

आमुख

बालक भाषा अधिगम साधारणतया सहज व व्यावहारिक रूप में करते हैं। इसके साथ ही एन.सी.एफ-2005, एस.सी.एफ-2011 एवं आधार पत्र-2011 के सुझावों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्यपुस्तक का सृजन किया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 सुझाती है कि बच्चों के जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

पुस्तक की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह और समय की आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गयी सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों को अनदेखा करने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सृजन और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की आवश्यकता हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव कराने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

पाठ्यपुस्तक के विकास एवं निर्माण हेतु प्रशिक्षण देने के लिए प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री को विशेष आभार प्रकट किया जाता है। एन.सी.ई.आर.टी. की ओर से गठित पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा राज्य, हैदराबाद कृतज्ञता प्रकट करती है।

इस पाठ्यपुस्तक के विकास में अनेक विद्वतजनों का सहयोग प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से प्राप्त हुआ है। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया है। इस पाठ्यपुस्तक में जिन लेखकों और कवियों की रचनाएँ सम्मिलित की गई हैं, उनके एवं उनके प्रकाशकों के प्रति परिषद आभार व्यक्त करती है। पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता में सुधार हेतु राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा राज्य, हैदराबाद आपके सुझावों का स्वागत करेगी।

निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
तेलंगाणा राज्य

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

सहभागी गण

श्री सय्यद मतीन अहमद
समन्वयक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा राज्य

श्री सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा राज्य

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

कुमारी ऋतु भसीन
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

श्रीमती कविता
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

श्रीमती जी. किरण
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

श्री बी. रमेश बाबू
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

मुहम्मद उसमान
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

मुहम्मद उमर अली
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

श्री एस. मोगलय्या 'सागर'
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

डॉ. शेख हाजी नूरानी
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

श्रीमती रेशमा बेगम
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

डॉ. सैयद एम.एम. वजाहत
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

डॉ. शेख अब्दुल ग़नी
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

मुहम्मद सुलेमान 'आदिल'
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

श्री के. शिवराजन
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

डॉ. दुर्गेश नंदिनी
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

श्रीमती वै. शारदा
जेड.पी.एच.एस. ताडूर, महबूबनगर

श्रीमती ए.वी. रमणा
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

चित्रांकन

श्री वड्डेपल्ली वेंकटेश्वर
जेड.पी.एच.एस. नकरेकल, नलगोंडा

श्रीमती पार्वती
हिंदू कॉलेज हाई स्कूल, गुंटूर

श्री कुरेल्ला श्रीनिवास
जेड.पी.एच.एस. कुरमेड, नलगोंडा

श्री किशोर
सी.यू.पी.एस. अलवाला, नलगोंडा

डी.टी.पी., ले आउट & डिज़ाइन
श्रीमती के. पावनी, श्रीमती आरिफ़ा सुल्ताना,
श्रीमती अख्तर बेगम, श्रीमती परवीन सुल्ताना, श्रीमती एन. हेमलता,
हिंदी अकादमी, नामपल्ली, हैदराबाद

SCERT TELANGANA

अध्यापकों से

- इस पाठ्यपुस्तक का अच्छी तरह से उपयोग करने के लिए 'आमुख', 'विद्यार्थियों के लिए विशेष सूचनाएँ' और 'छात्र निम्नलिखित दक्षताएँ प्राप्त करें' अवश्य पढ़ें। आवश्यकतानुसार अध्यापक छात्रों को समझाएँ।
- इस पाठ्यपुस्तक को लगभग 180 कालांशों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इनमें 160 कालांश पाठ शिक्षण के लिए और 20 कालांश उपवाचक पर चर्चा करने के लिए निर्धारित किये गये हैं।
- हर पाठ के लिए औसतन 12 कालांशों की आवश्यकता होती है।
- 'उन्मुखीकरण, प्रश्न, उद्देश्य, विधा विशेष, कवि परिचय, व छात्रों के लिए सूचनाएँ' के लिए एक या दो कालांशों का उपयोग कर सकते हैं।
- पाठ्य विषय पर चर्चा करने तथा उसकी अर्थग्राह्यता के लिए पाठ की सामग्री के आधार पर तीन या चार कालांशों का उपयोग कर सकते हैं।
- अभ्यासों के लिए चार या पाँच कालांशों का उपयोग कर सकते हैं।
- पाठ के आरंभ में दिया गया 'उन्मुखीकरण' अंश का उद्देश्य प्रस्तावना प्रश्नों के माध्यम से पूर्ण कक्षा क्रियाकलाप करवाना है।
- पाठ में उन्मुखीकरण के प्रश्न, उद्देश्य, विधा विशेष, कवि परिचय आदि छात्रों से पढ़वाने चाहिए। चर्चा भी करवानी चाहिए।
- 'छात्रों के लिए सूचनाएँ' का उद्देश्य छात्रों में अर्थ संग्रहण की क्षमता का विकास करना है। इसके लिए आवश्यकतानुसार कक्षा में शब्दकोश का प्रयोग करवाएँ।
- पाठ के विषय की अर्थग्राह्यता के लिए चर्चा पद्धति, प्रश्नोत्तर पद्धति, कथोपकथन, प्रदर्शन पद्धति, नाटकीकरण आदि पद्धतियों का उपयोग पाठों के स्वभाव के अनुरूप करना चाहिए।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

- पाठ शिक्षण का अर्थ पाठ्य सामग्री समझाना मात्र नहीं है। उसमें निहित मूल्य, रचनाकार का उद्देश्य, पाठ का मूल भाव छात्रों को समझ में आना चाहिए। इसके लिए विचारात्मक प्रश्न पूछने चाहिए। शब्द विन्यास, मुहावरे, कहावतें, विचारात्मक और संदेशात्मक वाक्यों का अर्थ छात्र स्वयं ज्ञात कर सके, ऐसा शिक्षण हो। छात्रों को विचार प्रकट करने में, समकालीन घटनाओं पर चर्चा करने में व बहुकोणीय विश्लेषण करने में सक्षम बनाना चाहिए।
- छात्रों में भाषाई क्षमताओं का विकास करने के लिए हर पाठ के अंत में अभ्यास दिये गये हैं। इन्हें छात्रों को स्वयं करने के अवसर देने चाहिए। इसके लिए अध्यापक आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।
- एक-एक अभ्यास के लिए एक-एक कालांश दिया गया है। अतः निर्धारित कालांशों में छात्र को लेखन के आवश्यक सुझाव दें। छात्रों द्वारा किये गये लिखित कार्य की जाँच करनी चाहिए।
- छात्रों को स्व लेखन के लिए प्रेरित करना चाहिए। **गाइड, स्टडी मटेरियल, क्वश्चन बैंक** आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए । कारण, बोर्ड परीक्षा में पाठ्यपुस्तक में से जैसे के तैसे प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे, बल्कि उस स्वभाव वाले प्रश्न पूछे जा सकते हैं। ऐसे प्रश्नों के उत्तर स्व लेखन अभ्यास करने वाले छात्र को सरल लगेंगे।
- 'अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया' में दिये गये 'अ' उपशीर्षकीय प्रश्न 'सुनिए-बोलिए' के लिए दिये गये प्रश्न हैं। इसे पूर्ण कक्षा क्रियाकलाप के रूप में करवाना चाहिए। 'आ', 'इ', 'ई' उपशीर्षकीय प्रश्न 'पढ़िए-समझिए' के लिए दिये गये हैं। इन्हें व्यक्तिगत रूप से करवाना चाहिए।
- 'अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता' अभ्यास के प्रश्नों में 'अ', 'आ' उपशीर्षकीय प्रश्न स्वरचना के प्रश्न हैं। इसमें 'अ' प्रश्न के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में और 'आ' प्रश्न के उत्तर 'दस-बारह' पंक्तियों में लिखने के लिए छात्रों को प्रेरित करें। इन्हें कक्षा में समूह कार्य के रूप में करवाना चाहिए। तत्पश्चात व्यक्तिगत तौर पर लिखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इस तरह लिखे गये उत्तर कक्षा में पढ़वाने चाहिए। छात्रों द्वारा लिखे गये उत्तरों की जाँच भाव, वाक्य, शब्द, अक्षर आदि दोष सुधारते हुए करनी चाहिए।

SCERT TELANGANA

■ 'इ' प्रश्न का संबंध 'सृजनात्मक अभिव्यक्ति' से है। इसके लिए छात्रों को पर्याप्त उदाहरण देने चाहिए। समूह में लिखने के लिए कहना चाहिए। प्रस्तुत करते समय इन्हें सुधारना चाहिए।

■ 'परियोजना कार्य' करवाने से पूर्व उचित दिशा-निर्देश देने चाहिए। परियोजना कार्य का प्रदर्शन कक्षा में करवाना चाहिए।

■ 'उन्मुखीकरण' से लेकर 'परियोजना कार्य' तक दिये गये सभी क्रियाकलाप उचित दिशा-निर्देश द्वारा करवाने पर ही निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हो सकती है। इसके लिए अध्यापक वार्षिक योजना और पाठयोजना भी बना लें।

■ भाषा शिक्षण को केवल पुस्तकों तक ही सीमित नहीं करना चाहिए। पाठशाला पुस्तकालय, इंटरनेट, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, बाल साहित्य आदि का उपयोग करना चाहिए।

■ कक्षा में भाषाई वातावरण की स्थापना के लिए आवश्यक शब्दकोश, कवियों की जीवनियाँ, दृश्य-श्रवण सामग्री आदि की व्यवस्था करनी चाहिए।

■ पाठशाला में भाषा विकास के लिए आवश्यक क्रियाकलाप जैसे- भाषा मेला, भाषा उत्सव, विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम, बालकवि सम्मेलन, भाषण, निबंध प्रतियोगिताओं, वार्षिक उत्सव आदि सहगामी क्रियाओं का आयोजन करना चाहिए ताकि छात्र स्वच्छंद रूप से इसमें भाग ले सकें।

■ छात्रों के सृजनात्मक कार्यों का प्रदर्शन कक्षा में करवाना चाहिए।

■ भाषा विचारों के आदान-प्रदान का अपूर्व साधन है। भाषा एक मानव संस्कृति है। इसमें हमारी सभ्यता निहित है। इसका कोई रंग-रूप, आकार, जात-पाँत, धर्म या वर्ग नहीं होता। यह तो असीम संपदा है जिसे पाने का अधिकार हर किसी को है। ईश्वर ने बालक को भाषागत विकास करने की प्राकृतिक सत्ता दे रखी है। केवल उसके अनुकूल वातावरण बनाये रखकर उचित मार्गदर्शन करने से बालक भाषा में अपूर्व विकास कर सकते हैं। अतः अध्यापक को शिक्षण की तुलना में भाषाई क्रियाकलापों का अत्यधिक क्रियान्वयन करना चाहिए।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे!
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे।
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा!
जन-गण-मंगलदायक जय हे!
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे!

- रवींद्रनाथ टैगोर

वंदेमातरम्

वंदेमातरम् वंदेमातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
सस्यश्यामलाम् मातरम् वंदेमातरम्
शुभ्रज्योत्सना पुलकित यामिनी
पुल्लकुसुमिता द्रुमदल शोभिनी
सुहासिनी सुमधुर भाषिणी
सुखदाम् वरदाम् मातरम्
वंदेमातरम्

- बंकिमचंद्र चटर्जी

सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलसिताँ हमारा।।
परबत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।
गोदी में खेलती हैं, इसकी हज़ारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दम से, रश्क-ए-जिनाँ हमारा।।
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।
हिंदी हैं हम वतन हैं हिंदोस्ताँ हमारा।।

- मोहम्मद इकबाल

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है। मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूँगा। मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा समस्त गुरुजनों का आदर करूँगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूँ। उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

- पैडिमर्रि वेंकट सुब्बाराव

SCERT TELANGANA

विषय सूची

इकाई - I

1. सुंदर भारत (कविता) *श्रीधर पाठक* - 1
2. नेताजी का चश्मा (कहानी) *स्वयंप्रकाश* - 5
3. एक कहानी यह भी (आत्मकथा) *मन्नू भंडारी* - 13

(उपवाचक) मंगल, मानव और मशीन (एकांकी) *विनोद रस्तोगी* - 22

इकाई - II

4. कवित्त (कविता) *पद्माकर* - 29
5. गोभी का फूल (कहानी) *केशवचंद्र वर्मा* - 33
6. राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद (कविता) *तुलसीदास* - 39

(उपवाचक) बड़े भाई साहब (कहानी) *प्रेमचंद* - 43

इकाई-III

7. अन्वेषण (कविता) *रामनरेश त्रिपाठी* - 50
8. बच्चों से न छीने उनका हक़ (संपादकीय) - 54
9. बाल अदालत (एकांकी) - 59

(उपवाचक) गुड़ियों का त्यौहार (अनूदित कहानी) *डॉ. विजयराघव रेड्डी* -66

इकाई-IV

10. कन्यादान (कविता) *ऋतुराज* - 72

(उपवाचक) साये (कहानी) *हिमांशु जोशी* - 76

11. बाट की पहचान (कविता) *हरिवंशराय बच्चन* - 81
12. सफलता की चुनौतियाँ (साक्षात्कार) - 87

(उपवाचक) गजनंदनलाल पहाड़ चढ़े (कहानी) *विष्णु प्रभाकर* - 94

इकाइयों का मासिक विभाजन इस तरह है -

पहली इकाई - जून, जुलाई

दूसरी इकाई - अगस्त, सितंबर

तीसरी इकाई - अक्तूबर, नवंबर

चौथी इकाई - दिसंबर, जनवरी

SCERT TELANGANA

छात्र निम्नलिखित दक्षताएँ प्राप्त करें -

1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

- गद्य, गीत, कविता, वार्तालाप आदि सुनकर, पढ़कर समझ सकें। अपने शब्दों में कह सकें।
- संबंधित अंशों के कारण बता सकें।
- पद्य, गीत धाराप्रवाह के साथ गा सकें। सारांश अथवा भाव अपने शब्दों में लिख सकें।
- अपठित अंश पढ़कर अर्थग्राह्यता के साथ उत्तर दे सकें।
- पाठ्यांश के आधार पर दिये गये प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट रूप से दे सकें।
- सूचित अंश का शीर्षक दे सकें। अलग-अलग अंशों में क्रमिकता बता सकें।

2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

- पाठ्यांश की घटनाओं, अंशों, पात्रों, स्थानों, विषयों के बारे में समझकर अपने शब्दों में लिख सकें।
- अधूरे विषय, कहानी, कविता आगे बढ़ा सकें।
- अलग-अलग घटनाओं में स्वयं को रखकर घटना आगे बढ़ा सकें।
- कवि या लेखकों की रचनाओं की समीक्षा कर सकें।
- प्रेरणा देने वाले किसी भी अंश की लिंग, धर्म, वर्ग भेद रहित प्रशंसा कर सकें।
- भिन्न संस्कृति, संप्रदायों की प्रशंसा कर सकें।
- पद्य या गद्य को एक विधा से दूसरी विधा में बदल सकें।
- निमंत्रण, बधाई पत्र, दीवार पत्रिका आदि तैयार कर सकें।
- चित्र देखकर वर्णन कर सकें।

3. भाषा की बात

- शब्दों का विविध संदर्भों में सही पद्धति से वाक्य प्रयोग कर सकें।
- पर्याय शब्दों के अर्थ ग्रहण कर दैनिक जीवन में उपयोग कर सकें।
- भाषा खेल, वर्ग पहेली आदि की सहायता से शब्द लिख सकें।
- अव्यय शब्द, विभक्ति पहचान सकें।
- वाक्य भेद पहचान कर वाक्यों के प्रकार समझ सकें व वाच्य भी समझ सकें।
- काल, संधि और समास के बारे में जानकरी प्राप्त कर सकें।

SCERT TELANGANA

इकाई - I

1. सुंदर भारत

- श्रीधर पाठक

उन्मुखीकरण

यह है भारत देश हमारा
इसके पर्वत नदियाँ नाले;
हरे - भरे ये खेत निराले;
सबको हर्षित करने वाले ।
सुंदरता में सबसे न्यारा
यह है भारत देश हमारा
सबसे ऊँचा इसे उठायें
सब देशों का मुकुट बनायें
इसकी सेवा में जुट जायें
वारे इस पर जीवन सारा,
यह है भारत देश हमारा

प्रश्न

1. भारत देश में खेत कैसे हैं ?
2. देश की शान बढ़ाने के लिए हम क्या कर सकते हैं?
3. इस कविता का संदेश क्या है ?

विधा विशेष

- प्रस्तुत पाठ एक गेय कविता है। कविता साहित्य की सशक्त विधा है। यह कविता सौंदर्यानुभूतिभाव तथा सौंदर्य ध्वनि का उदाहरण है।

उद्देश्य

गीत एक सशक्त विधा है। विद्यार्थियों के हृदय में रमणीय वस्तुओं के प्रति रुचि उत्पन्न करना और उन्हें कविता, गीत आदि की रचना करने की प्रेरणा देते हुए देशभक्ति की भावना को जागृत करना इस कविता का मुख्य उद्देश्य है।

कवि परिचय

श्रीधर पाठक का जन्म 11 जनवरी 1859 को उत्तर प्रदेश के जौंधरी नामक गाँव में हुआ। इनकी शिक्षा संस्कृत और फ़ारसी में हुई । सरकारी सेवा करने के पश्चात् वे प्रयाग में आकर रहने लगे। इन्होंने ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली में कविताएँ लिखीं। उनकी मुख्य रचनाएँ मनोविनोद, काश्मीर-सुषमा, गोपिका गीत एवं भारत गीत है। आपने खड़ी बोली में काव्य रचना कर पद्य व गद्य में एकता स्थापित करने का प्रयास किया। इन्होंने अंग्रेजी तथा संस्कृत की पुस्तकों के पद्यानुवाद भी किये। वे प्राकृतिक सौंदर्य, स्वदेश-प्रेम तथा समाज सुधार की भावनाओं के कवि हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

सौंदर्य का आदर्श सादगी और शांति है। - गेटे

विषय प्रवेश : भारत सुंदर देश है। भिन्न धर्मावलंबियों का देश है। यहाँ की जनता में कर्मनिष्ठता है। लोगों में प्रेम और ममता की अपार दौलत है। यहाँ की प्राकृतिक शोभा ने भारतवासियों के हृदय पर असीम छाप डाली है। इस तरह भारत वंदनीय है।

भारत हमारा कैसा सुंदर सुहा रहा है
शुचि भाल पै हिमाचल, चरणों पै सिंधु-अंचल
उर पर विशाल-सरिता-सित-हीर-हार-चंचल
मणि-बद्धनील-नभ का विस्तीर्ण-पट अचंचल
सारा सुदृश्य-वैभव मन को लुभा रहा है।
भारत हमारा कैसा सुंदर सुहा रहा है ।।

उपवन-सघन-वनालि, सुखमा-सदन, सुखाली
प्रावृट के सांद्र धन की शोभा निपट निराली
कमनीय-दर्शनीया कृषि-कर्म की प्रणाली
सुर-लोक की छटा को पृथिवी पे ला रहा है।
भारत हमारा कैसा सुंदर सुहा रहा है ।।

सुर-लोक यहीं पर, सुख-ओक है यहीं पर
स्वाभाविकी सुजनता गत-शोक है यहीं पर
शुचिता, स्वधर्म-जीवन, बेरोक है यहीं पर
भव-मोक्ष का यहीं पर अनुभव भी आ रहा है।
भारत हमारा कैसा सुंदर सुहा रहा है ।।

हे वंदनीय भारत, अभिनंदनीय भारत
हे न्याय-बंधु, निर्भय, निर्बंधनीय भारत
मम प्रेम-पाणि-पल्लव-अवलंबनीय भारत
मेरा ममत्व सारा तुझमें समा रहा है।
भारत हमारा कैसा सुंदर सुहा रहा है ।।

प्रश्न
1. नभ का पट कैसे दिख रहा था?
2. भारत सुंदर व सुहावना लगता है। इसके कारण बताइए।

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. भारत रंगबिरंगे फूलों का उपवन है। स्पष्ट कीजिए।
2. भारत में ममता समायी हुई है। इससे कवि का आशय क्या है ?

(आ) भाव स्पष्ट कीजिए ।

1. मणि-बद्धनील-नभ का विस्तीर्ण-पट अचंचल
   सारा सुदृश्य-वैभव मन को लुभा रहा है।

SCERT TELANGANA

2. भव-मोक्ष का यहीं पर अनुभव भी आ रहा है।
भारत हमारा कैसा सुंदर सुहा रहा है ।

(इ) निम्नलिखित भाव को व्यक्त करने वाली कविता की पंक्तियाँ लिखिए ।

1. भारत अपनी न्याय बंधुता के लिए अभिनंदनीय है ।
2. स्वर्ग यहीं पर है ।

(ई) पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर है,
सूर्य चंद्र युग मुकुट में कला रत्नाकर है,
नदियाँ प्रेम प्रवाह फूल तारे मंडल है,
बंदी जन खग वृंद शेष फन सिंहासन है,
करते अभिषेक पयोद है बलिहारी इस वेश की,
हे, मातृभूमि तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेष की,
निर्मल तेरा नीर अमृत के सम उत्तम है,
शीतल मंद सुगंध पवन हर लेता श्रम है,
षटऋतुओं का विविध दृश्य युत अद्भुत क्रम है,
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है,
शुचि-सुधा सींचता रात में तुझ पर चंद्र प्रकाश है,
हे मातृभूमि दिन में तरणि, करता तम पर नाश है ।

प्रश्न

1. काव्यांश में हरित पट किसे कहा गया है?
2. कवि को अपनी सुंदर मातृभूमि कैसी दिखायी देती है?
3. खग, पयोद व नदी शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए ।
4. षट्ऋतुओं के संबंध में कवि की कल्पना क्या है ?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए।

1. भारत देश की सुंदरता का वर्णन कीजिए ।
2. भारत की प्रकृति निराली है । यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य सारी दुनिया को लुभाता है । इसे अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए ।

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर दस-बारह पंक्तियों में लिखिए।

1. कवि ने भारत देश की तुलना स्वर्ग से क्यों की होगी? स्पष्ट कीजिए।
2. कृषि-कर्म से क्या तात्पर्य है ?

SCERT TELANGANA

(इ) **दिये गये चित्र का वर्णन करते हुए एक छोटी-सी कविता की रचना कीजिए।**

(ई) **"पेड़,पर्वत,नदी,सागर,झील,जलाशय,वन आदि प्रकृति की अपार संपत्ति है । इन्हीं से धरती सजी है ।"उदाहरण सहित अपने शब्दों में प्रशंसा कीजिए ।**

भाषा की बात

(अ) **सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।**

1. उर, नभ (पर्यायवाची शब्द लिखिए।)
2. रुचि, चंचल, सुंदर (विलोम शब्द लिखकर उससे वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. संध्या, आम्र, मयूर (तद्‌भव रूप लिखिए।)

(आ) **सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।**

1. दर्शनीय, स्वाभाविक, सुजनता (प्रत्यय पहचानकर लिखिए।)
2. हिमालय, महोत्सव, स्वागत (विच्छेद कर संधि पहचानिए।)
3. सुजनता में 'सु' उपसर्ग है ऐसे 'सु' उपसर्ग का प्रयोग करते हुए पाँच शब्द लिखिए।
4. भारत की परंपरा हज़ारों वर्ष पुरानी है। (ऐसे तीन संख्यावाचक विशेषण वाक्य लिखिए।)

(इ) **पाठ के आधार पर उपसर्ग और प्रत्यय के उदाहरण समझिए।**

1. अभिनंदन-अभिनंदनीय, दर्शन-दर्शनीय, अवलंबन-अवलंबनीय
2. वन-उपवन, लोक-सुरलोक, धर्म-स्वधर्म

(ई) **नीचे दिये गये मुहावरों का वाक्य प्रयोग कर अर्थ लिखिए ।**

1. सोने पे सुहागा
2. गले का हार बनना

परियोजना कार्य

भारत के प्रकृति सौंदर्य का वर्णन करते हुए कई गीत व कविताएँ रची गई हैं । इनमें से कोई एक गीत या कविता का संकलन कर कक्षा में प्रदर्शन कीजिए ।

SCERT TELANGANA

2 नेताजी का चश्मा

– स्वयंप्रकाश

उन्मुखीकरण

एक अच्छे सैनिक के गुण हैं देशभक्ति, सजगता, धैर्य, साहस और अनुशासन। भारतीय सैनिकों में ये गुण कूट-कूट कर भरे हैं। यही नहीं बाढ़, तूफ़ान, भूकंप, सूखा, आदि प्राकृतिक विपदाओं के समय वे जिस प्रकार की सहायता करते हैं, इससे उनकी सेवा-भावना का भी परिचय मिलता है।

प्रश्न

1. आदर्श सेना की क्या-क्या विशेषताएँ हो सकती हैं?
2. प्राकृतिक विपदाओं के समय सैनिकों का क्या सहयोग होता है?
3. आप अपना देश-प्रेम कैसे प्रकट करेंगे?

उद्देश्य

छात्रों में कहानी लेखन कौशल का विकास करना, शब्द भंडार में वृद्धि करना, कहानी द्वारा कल्पना-शक्ति का विकास करना और कहानी की भाषा शैली का विकास करना इसका मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

किसी घटना या बात का सुंदर ढंग से प्रस्तुतीकरण ही कहानी है। कहानी एक लघु आकार की गद्य रचना है। कथावस्तु, पात्र, संवाद, वातावरण, भाषा शैली, उद्देश्य आदि इसके तत्व हैं। यह एक ऐतिहासिक कहानी है। इसकी शैली वर्णनात्मक है।

लेखक परिचय

स्वयंप्रकाश का जन्म सन् 1947 में इंदौर, मध्यप्रदेश में हुआ। आठवें दशक में उभरे स्वयं प्रकाश आज समकालीन कहानी के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। उनके 13 कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। जिनमें सूरज कब निकलेगा, आयेंगे अच्छे दिन भी, आदमी जात का आदमी और संधान उल्लेखनीय है। मध्यवर्गीय जीवन के कुशल चितेरे स्वयं प्रकाश की कहानियों में वर्ग शोषण के विरुद्ध चेतना है तो हमारे सामाजिक जीवन के भेद-भाव के खिलाफ़ प्रतिकार का स्वर भी है। रोचक किस्सागोई शैली में लिखी गई उनकी कहानियाँ हिंदी की वाचिक परंपरा को समृद्ध करती हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

विषय प्रवेश : *चारों ओर सीमाओं से घिरे भूभाग का नाम ही देश नहीं होता। देश बनता है इसमें रहने वाले सभी नागरिकों, नदियों, पहाड़ों, पेड़-पौधों, वनस्पतियों, पशु-पक्षियों से। इन सबसे प्रेम करने तथा इनकी समृद्धि के लिए प्रयास करने का नाम देशभक्ति है। इस कहानी में देश के निर्माण में सब अपने-अपने तरीके से सहयोग देते हैं, बड़े ही नहीं बच्चे भी इसमें शामिल हैं। हालदार साहब ने पानवाले से पूछा क्यों भाई, क्या बात है? यह तुम्हारे नेता जी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है? पानवाले ने कहा, कैप्टन चश्मेवाला करता है। आइए, उस चश्मेवाले के बारे में जानेंगे जो एक देशभक्त ही नहीं बल्कि देशभक्तों का भी प्रेमी है।*

हालदार साहब को हर पंद्रहवें दिन कंपनी के काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुज़रना पड़ता था। कस्बा बहुत बड़ा नहीं था। जिसे पक्का मकान कहा जा सके वैसे कुछ ही मकान और जिसे बाज़ार कहा जा सके वैसा एक ही बाज़ार था। कस्बे में एक लड़कों का स्कूल, एक लड़कियों का स्कूल, एक सीमेंट का छोटा-सा कारखाना, दो ओपन एयर सिनेमाघर और एक नगरपालिका भी थी। नगरपालिका थी तो कुछ-न-कुछ करती भी रहती थी। कभी कोई सड़क पक्की करवा दी, कभी कुछ पेशाबघर बनवा दिये, कभी कबूतरों की छतरी बनवा दी तो कभी कवि सम्मेलन करवा दिया। इसी नगरपालिका के किसी उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने एक बार 'शहर' के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी। यह कहानी उसी प्रतिमा के बारे में है, बल्कि उसके भी एक छोटे से हिस्से के बारे में।

पूरी बात तो अब पता नहीं, लेकिन लगता है कि देश के अच्छे मूर्तिकारों की जानकारी नहीं होने और अच्छी मूर्ति की लागत और अनुमान और उपलब्ध बजट से कहीं बहुत ज्यादा होने के कारण काफ़ी समय ऊहापोह और चिट्ठी-पत्री में बरबाद हुआ होगा और बोर्ड की शासनावधि समाप्त होने की घड़ियों में किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय किया गया होगा, और अंत में कस्बे के इकलौते हाई स्कूल के इकलौते ड्राइंग मॉस्टर मान लीजिए मोतीलाल जी-को ही यह काम सौंप दिया गया होगा, जो महीने-भर में मूर्ति बनाकर 'पटक देने' का विश्वास दिला रहे थे।

जैसा कि कहा जा चुका है, मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची। जिसे कहते हैं बस्ट। और सुंदर थी। नेताजी सुंदर लग रहे थे। कुछ-कुछ मासूम और कमसिन। फ़ौजी में। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो....' वगैरह याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह सफल और सराहनीय प्रयास था। केवल एक ही चीज़ की कसर थी जो देखते ही खटकती थी। नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं था। यानी चश्मा तो था, लेकिन संगमरमर का नहीं था। एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था। हालदार साहब जब पहली बार इस कस्बे से गुज़रे और चौराहे पर पान खाने रुके तभी उन्होंने इसे लक्षित किया और उनके चेहरे पर एक कौतुक भरी मुसकान फैल गयी। वाह भई! यह आइडिया भी ठीक है। मूर्ति पत्थर की, लेकिन चश्मा रियल! जीप कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गयी तब भी हालदार साहब इस मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे, और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कुल मिलाकर कस्बे के नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय ही कहा जाना चाहिए। महत्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का हैं। वरना तो देश-भक्ति भी आजकल मज़ाक की चीज़

SCERT TELANGANA

होती जा रही है।

दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुज़रे तो उन्हें मूर्ति में कुछ अंतर दिखायी दिया। ध्यान से देखा तो पाया कि चश्मा दूसरा है। पहले मोटे फ्रेमवाला चौकोर चश्मा था, अब तार के फ्रेमवाला गोल चश्मा है। हालदार साहब का कौतुक और बढ़ा। वाह भई! क्या आइडिया है। मूर्ति कपड़े नहीं बदल सकती लेकिन चश्मा तो बदल ही सकती है।

तीसरी बार फिर नया चश्मा था।

हालदार साहब की आदत पड़ गयी, हर बार कस्बे से गुज़रते समय चौराहे पर रुकना, पान खाना और मूर्ति को ध्यान से देखना। एक बार जब कौतूहल दुर्दमनीय हो उठा तो पानवाले से ही पूछ लिया, क्यों भई! क्या बात है? यह तुम्हारे नेताजी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है?

पानवाले के खुद के मुँह में पान ठूँसा हुआ था। वह एक काला मोटा और खुशमिज़ाज आदमी था। हालदार साहब का प्रश्न सुनकर वह आँखों-ही-आँखों में हँसा। उसकी तोंद थिरकी। पीछे घूमकर उसने दुकान के नीचे पान थूका और अपनी लाल-काली बत्तीसी दिखाकर बोला, कैप्टन चश्मेवाला करता है।

क्या करता है? हालदार साहब कुछ समझ नहीं पाये।

चश्मा चेंज कर देता है। पानवाले ने समझाया।

क्या मतलब? क्या चेंज कर देता है? हालदार साहब अब भी नहीं समझ पाये।

कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन किधर से लाएगा? तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उधर दूसरा बिठा दिया।

अब हालदार साहब को बात कुछ-कुछ समझ में आयी। एक चश्मेवाला है जिसका नाम कैप्टन है। उसे नेताजी की बगैर चश्मेवाली मूर्ति बुरी लगती है। बल्कि आहत करती है, मानो चश्मे के बगैर नेताजी को असुविधा हो रही हो। इसलिए वह अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से एक नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता है। लेकिन जब कोई ग्राहक आता है और उसे वैसे ही फ्रेम की दरकार होती है जैसा मूर्ति पर लगा है तो कैप्टन चश्मेवाला मूर्ति पर लगा फ्रेम संभवतः नेताजी से क्षमा माँगते हुए लाकर ग्राहक को दे देता है और बाद में नेताजी को दूसरा फ्रेम लौटा देता है। वाह! भई खूब! क्या आइडिया है।

लेकिन भाई! एक बात अभी भी समझ में नहीं आयी। हालदार साहब ने पानवाले से फिर पूछा, नेताजी का ओरिजिनल चश्मा कहाँ गया?

पानवाला दूसरा पान मुँह में ठूँस चुका था। दोपहर का समय था, 'दुकान' पर भीड़-भाड़ अधिक नहीं थी। वह फिर आँखों- ही-आँखों में हँसा। उसकी तोंद थिरकी। कत्थे की डंडी फेंक,पीछे मुड़कर उसने नीचे पीक थूकी और मुसकराता हुआ बोला, मास्टर बनाना भूल गया।

प्रश्न

1. गाँवों में मुख्य रूप से क्या-क्या सुविधाएँ होनी चाहिए?
2. सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा क्यों लगायी गयी होगी?
3. हालदार को पानवाले की बातें सुनकर आश्चर्य क्यों हुआ होगा?
4. हालदार साहब ने उस कस्बे के नागरिकों को क्यों सराहा होगा?

SCERT TELANGANA

पानवाले के लिए यह एक मज़ेदार बात थी लेकिन हालदार साहब के लिए चकित और द्रवित करने वाली। यानी वह ठीक ही सोच रहे थे। मूर्ति के नीचे लिखा 'मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल' वाकई कस्बे का अध्यापक था। बेचारे ने महीने-भर में मूर्ति बनाकर पटक देने का वादा कर दिया होगा। बना भी ली होगी लेकिन पत्थर में पारदर्शी चश्मा कैसे बनाया जाए-काँचवाला- यह तय नहीं कर पाया होगा। या कोशिश की होगी और असफल रहा होगा। या बनाते-बनाते 'कुछ और बारीकी' के चक्कर में चश्मा टूट गया होगा। या पत्थर का चश्मा अलग से बनाकर फिट किया होगा और वह निकल गया होगा। उफ़ ....।

हालदार साहब को यह सब कुछ बड़ा विचित्र और कौतुकभरा लग रहा था। इन्हीं खयालों में खोए-खोए पान के पैसे चुकाकर चश्मेवाले की देश-भक्ति के समक्ष नतमस्तक होते हुए वह जीप की तरफ़ चले, फिर रुके, पीछे मुड़े और पानवाले के पास जाकर पूछा, क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है? या आज़ाद हिंद फ़ौज का भूतपूर्व सिपाही?

पानवाला नया पान खा रहा था। पान पकड़े अपने हाथ को मुँह से डेढ़ इंच दूर रोककर उसने हालदार साहब को ध्यान से देखा, फिर अपनी लाल-काली बत्तीसी दिखाई और मुसकराकर बोला- नहीं साब! वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल! वो देखो, वो आ रहा है। आप उसी से बात कर लो। फ़ोटो-वोटो छपवा दो उसकी कहीं।

हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मज़ाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। मुड़कर देखा तो अवाक् रह गये। एक बेहद बूढ़ा मरियल-सा लँगड़ा आदमी सिर पर गाँधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाये एक हाथ में एक छोटी-सी संदूकची और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टँगे बहुत-से चश्मे लिए अभी-अभी एक गली से निकला था और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था। तो इस बेचारे की दुकान भी नहीं! फेरी लगाता है। हालदार साहब चक्कर में पड़ गये। पूछना चाहते थे, इसे कैप्टन क्यों कहते हैं? क्या यही इसका वास्तविक नाम है? लेकिन पानवाले ने साफ़ बता दिया था कि अब वह इस बारे में और बात करने को तैयार नहीं। ड्राइवर भी बेचैन हो रहा था। काम भी था। हालदार साहब जीप में बैठकर चले गये।

दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुज़रते रहे और नेताजी की मूर्ति में बदलते हुए चश्मों को देखते रहे। कभी गोल चश्मा होता, तो कभी चौकोर, कभी लाल, कभी काला, कभी धूप का चश्मा, कभी बड़े काँचों वाला गोगो चश्मा ..... पर कोई-न-कोई चश्मा होता ज़रूर.... उस धूलभरी यात्रा में हालदार साहब को कौतुक और प्रफुल्लता के कुछ क्षण देने के लिए।

फिर एक बार ऐसा हुआ कि मूर्ति के चेहरे पर कोई भी, कैसा भी चश्मा नहीं था। उस दिन पान की दुकान भी बंद थी। चौराहे की अधिकांश दुकानें बंद थीं।

अगली बार भी मूर्ति की आँखों पर चश्मा नहीं था। हालदार साहब ने पान खाया और धीरे से पानवाले से पूछा- क्यों भई, क्या बात है? आज तुम्हारे नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं है?

पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला- साहब! कैप्टन मर गया।

और कुछ नहीं पूछ पाये हालदार साहब। कुछ पल चुपचाप खड़े रहे, फिर पान के पैसे

SCERT TELANGANA

चुकाकर जीप में आ बैठे और रवाना हो गये।

बार-बार सोचते, क्या होगा उस क़ौम का जो अपने देश की ख़ातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ होम देनेवालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है। दुखी हो गये। पंद्रह दिन बाद फिर उसी कस्बे से गुज़रे। कस्बे में घुसने से पहले ही खयाल आया कि कस्बे की हृदयस्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिष्ठापित होगी, लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा।.....क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया। .....और कैप्टन मर गया। सोचा, आज वहाँ रुकेंगे नहीं, पान भी नहीं खाएँगे, मूर्ति की तरफ़ देखेंगे भी नहीं, सीधे निकल जाएँगे। ड्राइवर से कह दिया, चौराहे पर रुकना नहीं, आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे।

लेकिन आदत से मजबूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ़ उठ गयीं। कुछ ऐसा देखा कि चीखे, रोको! जीप स्पीड में थी, ड्राइवर ने ज़ोर से ब्रेक मारे। रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रुकते-न-रुकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज़-तेज़ क़दमों से मूर्ति की तरफ़ लपके और उसके ठीक सामने जाकर अटेंशन में खड़े हो गये।

5. कस्बेवाले चश्मेवाले को कैप्टन क्यों कहते थे?
6. चश्मेवाले को चश्मा लगाते देखकर हालदार साहब ने क्या सोचा होगा?
7. चश्मे के बारे में पूछने पर पानवाला उदास क्यों हुआ?

मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। हालदार साहब भावुक हैं। इतनी-सी बात पर उनकी आँखें भर आयीं।

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सीमा पर तैनात फ़ौजी ही देशप्रेम का परिचय नहीं देते। हम सभी अपने दैनिक कार्यों में किसी न किसी ढंग से देशप्रेम प्रकट करते हैं। जैसे कि सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुँचाना, पर्यावरण संरक्षण आदि। अब बताइए कि आप किन-किन कामों से देशभक्ति प्रकट करते हैं?
2. कस्बों, शहरों, महानगरों के चौराहों पर किसी न किसी क्षेत्र में प्रसिद्ध व्यक्ति की मूर्ति लगाने का प्रचलन सा हो गया है। बताइए कि ऐसा करने का क्या उद्देश्य है?

(आ) पाठ पढ़कर उत्तर दीजिए।

1. चश्मेवाले के बारे में जानने के लिए हालदार साहब उत्सुक क्यों थे?
2. चश्मेवाला सच्चे अर्थों में देशभक्त था। पाठ के आधार पर बताइए।
3. हालदार साहब नेताजी की मूर्ति के सामने भावुक क्यों हुए?

(इ) निम्नलिखित शब्दों से जुड़े वाक्य पाठ में कहाँ-कहाँ हैं। ढूँढ़कर लिखिए।

1. संगमरमर 2. देशभक्ति 3. खुशमिज़ाज

SCERT TELANGANA

(ई) निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

सरलता मानव का स्वाभाविक गुण है। आडंबर जीवन को जटिल बनाता है और हृदय में विकार उत्पन्न करके उसे कलुषित बनाता है। अहंकार, आडंबर आदि तुच्छ विचारों के कुप्रभाव से मनुष्य अब कृत्रिम बन रहा है। सरल, सहज और सादा जीवन हमें प्रकृति से जोड़ता है।

संसार के किसी भी देश में महान् व्यक्तियों का अभाव नहीं रहा है। कुछ व्यक्ति अपने ही देश में ख्याति पाते हैं और कुछ व्यक्तियों की ख्याति संसार में फैल जाती है। संसार के विख्यात व्यक्तियों के जीवन पर यदि दृष्टि डाली जाए तो चाहे वह देशभक्त हो या वैज्ञानिक, साहित्यकार हो या दार्शनिक अथवा उद्योगपति, सभी में कुछ विशेषता अवश्य ही मिलेगी। ऐसे व्यक्ति संसार में बहुत कम हैं, जो जन्म से ही विख्यात हुए हों। अधिकांशतः लोगों को यह ख्याति उनके चरित्र-बल और उद्यम से ही प्राप्त होती है। संसार में ऐसे मनुष्य कम नहीं हैं, जिनका साधारण परिवार में जन्म हुआ, किंतु वे अपनी बुद्धि और लगन के कारण बहुत ऊँचे उठ गये। प्रतिदिन संसार में अनेक मनुष्य जन्म लेते हैं और मरते हैं, पर सभी का नाम उनकी मृत्यु के बाद यहाँ नहीं टिका रहता।

मनुष्य में विनय, उदारता, कष्ट-सहिष्णुता, साहस आदि चारित्रिक गुणों का विकास अत्यावश्यक है। इन गुणों का प्रभाव उसके जीवन पर पड़ता है। ये गुण व्यक्ति के जीवन को अहंकारहीन या सादा बनाते हैं। सादा जीवन या सादगी का अर्थ है- रहन-सहन, वेशभूषा और आचार-विचारों का एक निर्दिष्ट स्तर। जीवन में सादगी लाने के लिए दो बातें विशेष रूप से करणीय हैं। पहला, कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में धैर्य को न छोड़ना, दूसरा, अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम बनाना। हमारी वास्तविक आवश्यकताएँ बहुत कम होती हैं। अपनी आवश्यकताओं को हम स्वयं बढ़ाते हैं, जो बाद में हमारे जीवन को विषम बना देती हैं। इसलिए सादा जीवन व्यतीत करना चाहिए और अपने विचारों को उच्च बनाये रखना चाहिए।

प्रश्न

1. मनुष्य के जीवन को जटिल बनानेवाले कारण क्या हो सकते हैं?
2. कैसा जीवन हमें प्रकृति से जोड़ता है?
3. अधिकांशतः लोगों को ख्याति कैसे प्राप्त होती है?
4. हमें किन पर संयम बनाये रखना चाहिए।
5. गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए।

1. चश्मेवाले का संक्षिप्त परिचय अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'बार-बार सोचते, क्या होगा उस क़ौम का जो अपने देश की ख़ातिर घर-गृहस्थी-जीवन-ज़िंदगी सब कुछ होम देने वालों पर भी हँसती और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।' इन पंक्तियों के द्वारा लेखक क्या कहना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

SCERT TELANGANA

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर दस-बारह पंक्तियों में लिखिए।

1. भई खूब! क्या आइडिया है।' इस वाक्य को ध्यान में रखते हुए बताइए कि एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों के आने से क्या लाभ होते हैं?
2. 'नेताजी का चश्मा' में देश-भक्ति का मार्मिक प्रतिबिंब है। इसे अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

(इ) हालदार और पानवाले के बीच जो बातचीत हुई, उसे संवाद के रूप में लिखिए।

(ई) देश के प्रति श्रद्धा, भक्ति, प्रेम और समर्पण की भावना देश को विकसित और समृद्ध बनाती है। अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर लिखिए।

1. निष्कर्ष, सराह, ऊहापोह (पर्यायवाची शब्द लिखिए।)
2. वास्तविक, सफल, सामान्य (विलोम शब्द लिखिए।)
3. गिराक, आइडिया, प्लीज़ (उत्पत्ति की दृष्टि से कैसे शब्द हैं? पहचानकर लिखिए।)
4. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित कारकों से कीजिए।
   1. अब हालदार साहब .... बात कुछ कुछ समझ .... आयी।
   2. हालदार साहब .... हर पंद्रहवें दिन कंपनी .... काम .... सिलसिले ...... उस कस्बे .... गुज़रना पड़ता था।
   3. दोपहर .... समय था। 'दुकान' ...... भीड़-भाड़ अधिक नहीं थी।

(आ) सूचना पढ़कर उसके अनुसार लिखिए।

1. रंगरूप, देशभक्ति, चौराह (विग्रह कर समास पहचानिए।)
2. भावुक, सदैव (विच्छेद कर संधि पहचानिए।)
3. नीचे दिए गये वाक्य पढ़िए। वाक्यों में प्रयुक्त 'निपात' समझिए। इनका प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए।
   1. नगरपालिका भी तो कुछ न कुछ करती ही रहती थी।
   2. किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय दिया गया होगा।
   3. अगली बार भी मूर्ति की आँखों पर चश्मा नहीं था।
   4. हालदार साहब अब भी नहीं समझ पाये।
   5. दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुज़रते रहे।

SCERT TELANGANA

(इ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. इस कहानी में मुहावरों का सुंदर प्रयोग हुआ है। प्रयुक्त मुहावरों के अर्थ जानकर एक तालिका बनाइए।

जैसे –

1. आँखें भर आना	दुःखी होना

(ई) इस कहानी में निजवाचक सर्वनाम का प्रयोग हुआ है। जैसे : अपने देश के ख़ातिर। इस तरह का प्रयोग समझकर अभ्यास पूरा कीजिए।

हालदार साहब
- .... एक कर्त्तव्य निभा रहे थे।
- .... घर जा रहे थे।
- .... मित्र से मिल रहे थे।
- .... मित्रों से मिल रहे थे।
- .... बात समझा रहे थे।
- .... भावनाएँ व्यक्त कर रहे थे।

रिक्त स्थानों की पूर्ति अपना, अपने या अपनी शब्दों में से उचित शब्द का चयनकर कीजिए।

परियोजना कार्य

एक नागरिक को दूसरे नागरिकों का भी ख्याल रखना चाहिए। एक आदर्श नागरिक के रूप में अपनी ओर से किसी को कोई क्षति या कठिनाई न हो, इसीलिए मानव मूल्यों के साथ-साथ सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का अनुसरण भी हमारे लिए बेहद ज़रूरी है। इस तरह एक आदर्श नागरिक के रूप में हम में किन-किन आदर्शों का होना आवश्यक है? इसकी जानकारी इकट्ठा कर एक सूची बनाइए और कक्षा में उसका प्रदर्शन कीजिए।

SCERT TELANGANA

3 एक कहानी यह भी

– मन्नू भंडारी

उन्मुखीकरण

नारी में अनेक गुणों का समन्वय है। उसमें प्राकृतिक अनुराग है, सौंदर्यानुभूति है, संवेदना है और साथ ही साहस भी। वेदों में भी नारी की प्रशस्ति गायी गयी है। इस तरह यह सिद्ध होता है कि नारी ही दिव्य स्वरूपिणी है।

प्रश्न

1. समाज के विकास में नारी की क्या भूमिका है?
2. नारी को दिव्य स्वरूपिणी क्यों कहा गया होगा?
3. किसी महान नारी द्वारा किये गये कुछ महत्वपूर्ण कार्यों का उल्लेख कीजिए?

उद्देश्य

छात्रों को लेखन की विविध शैलियों से परिचित कराते हुए आत्मकथा लेखन विधा का ज्ञान कराना, उसकी भाषा शैली से अवगत कराना और उन्हें आत्मकथा लेखन की प्रेरणा देना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

आत्मकथा का अर्थ है – 'अपनी कहानी'। आत्मकथा में लेखक निष्पक्ष भाव से अपने गुण-दोषों की सम्यक अभिव्यक्ति करता है और अपने चिंतन, संकल्प, विचार एवं अभिप्राय को व्यक्त करने हेतु जीवन के अनेक महत्वपूर्ण पक्षों को उद्घाटित करता है। इसे यों भी कहा जा सकता है कि इस साहित्यिक विधा में लेखक अपने वैयक्तिक जीवन के ही खट्टे-मीठे अनुभवों को क्रमानुसार स्मृति के आधार पर लिपिबद्ध करता है। इस तरह बीते हुए जीवन का सिंहावलोकन आत्मकथा का मूल तत्व होता है। लेखिका ने इसमें अपने संघर्षमय जीवन की घटनाओं को चुनौतियों के साथ सुंदर भाषा शैली में लिपिबद्ध किया है।

लेखिका परिचय

मन्नू भंडारी एक कुशल लेखिका हैं। इनका जन्म सन् 1931 में मध्यप्रदेश के भानपुरा नामक गाँव में हुआ है। नारी जीवन की समस्याओं का चित्रण करने, उनकी मानसिक स्थिति का विश्लेषण करने तथा युगीन समाज का यथार्थ वर्णन करने में वे अत्यंत लोकप्रिय हैं। मैं हार गयी, तीन निगाहों की एक तस्वीर, अकेली, एक प्लेट सैलाब, यही सच है, आपका बंटी, एक इंच मुस्कान आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

विषय प्रवेश : शीला अग्रवाल ने साहित्य का दायरा ही नहीं बढ़ाया था बल्कि घर की चारदिवारी के बीच बैठ कर देश की स्थितियों को जानने समझने का जो सिलसिला पिताजी ने शुरु किया था उन्होंने वहाँ से खींच कर उसे भी स्थितियों की सक्रिय भागीदारी में बदल दिया।

शीला अग्रवाल के भाषण से मन्नू भंडारी ने प्रेरणा पाकर देश के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया वे एक महान लेखिका के रूप में उभर कर आयी हैं। आइए, उस महान लेखिका के बारे में जानेंगे।

जन्मी तो मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव में थी, लेकिन मेरी यादों का सिलसिला शुरु होता है अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के उस दो-मंज़िला मकान से, जिसकी ऊपरी मंज़िल में पिताजी का साम्राज्य था, जहाँ वे निहायत अव्यवस्थित ढंग से फैली-बिखरी पुस्तकों-पत्रिकाओं और अख़बारों के बीच या तो कुछ पढ़ते रहते थे या फिर 'डिक्टेशन' देते रहते थे। नीचे हम सब भाई-बहिनों के साथ रहती थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी व्यक्तित्व विहीन माँ...सवेरे से शाम तक हम सबकी इच्छाओं और पिता जी की आज्ञाओं का पालन करने के लिए सदैव तत्पर। अजमेर से पहले पिता जी इंदौर में थे जहाँ उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था। कांग्रेस के साथ-साथ समाज-सुधार के कामों से भी जुड़े हुए थे। शिक्षा के वे केवल उपदेश ही नहीं देते थे, बल्कि उन दिनों आठ-आठ, दस-दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया है जिनमें से कई तो बाद में ऊँचे-ऊँचे ओहदों पर पहुँचे। ये उनकी खुशहाली के दिन थे और उन दिनों उनकी दरियादिली के चर्चे भी कम नहीं थे। एक ओर वे बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी।

पर यह सब तो मैंने केवल सुना। देखा, तब तो इन गुणों के भग्नावशेषों को ढोते पिता थे। एक बहुत बड़े आर्थिक झटके के कारण वे इंदौर से अजमेर आ गये थे, जहाँ उन्होंने अपने अकेले के बल-बूते और हौंसले से अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश (विषयवार) के अधूरे काम को आगे बढ़ाना शुरु किया जो अपनी तरह का पहला और अकेला शब्दकोश था। इसने उन्हें यश और प्रतिष्ठा तो बहुत दी, पर अर्थ नहीं और शायद गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरु कर दिया। सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती-थरथराती रहती थीं। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी वे जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते ही रहते।

पर यह पितृ-गाथा मैं इसलिए नहीं गा रही कि मुझे उनका गौरव-गान करना है, बल्कि मैं तो यह देखना चाहती हूँ कि उनके व्यक्तित्व की कौन-सी खूबी और खामियाँ मेरे व्यक्तित्व के ताने-बाने में गुँथी हुई हैं या कि अनजाने-अनचाहे किये उनके व्यवहार ने मेरे भीतर किन ग्रंथियों को जन्म दे दिया। मैं काली हूँ। बचपन में दुबली और मरियल भी थी। गोरा रंग पिता जी की कमज़ोरी थी सो बचपन में मुझसे दो साल बड़ी, खूब गोरी, स्वस्थ और हँसमुख बहिन सुशीला से हर बात में तुलना और फिर उसकी प्रशंसा ने ही, क्या मेरे भीतर ऐसे गहरे हीन-भाव की ग्रंथि पैदा नहीं कर

SCERT TELANGANA

दी कि नाम, सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावजूद आज तक मैं उससे उबर नहीं पायी? आज भी परिचय करवाते समय जब कोई कुछ विशेषता लगाकर मेरी लेखकीय उपलब्धियों का ज़िक्र करने लगता है तो मैं संकोच से सिमट ही नहीं जाती बल्कि गड़ने-गड़ने को हो आती हूँ। शायद अचेतन की किसी पर्त के नीचे दबी इसी हीन-भावना के चलते मैं अपनी किसी भी उपलब्धि पर भरोसा नहीं कर पाती... सब कुछ मुझे तुक्का ही लगता है। पिता जी के जिस शक्की स्वभाव पर मैं कभी भन्ना-भन्ना जाती थी, आज एकाएक अपने खंडित विश्वासों की व्यथा के नीचे मुझे उनके शक्की स्वभाव की झलक ही दिखायी देती है...बहुत 'अपनों' के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा से उपजा शक। होश सँभालने के बाद से ही जिन पिता जी से किसी-न-किसी बात पर हमेशा मेरी टक्कर ही चलती रही, वे तो न जाने कितने रूपों में मुझमें हैं...कहीं कुंठाओं के रूप में, कहीं प्रतिक्रिया के रूप में तो कहीं प्रतिच्छाया के रूप में। केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परंपरा और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का बिलकुल अहसास नहीं होता कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाये बैठा रहता है!समय का प्रवाह भले ही हमें दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए...स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दे, हमें पूरी तरह उससे मुक्त तो नहीं कर सकता!

प्रश्न

1. मन्नू भंडारी के पिताजी कैसे स्वभाव के थे?
2. लेखिका के बचपन के समाज व आज के समाज में क्या अंतर है?
3. आजकल के पड़ोस कल्चर के बारे में लेखिका के क्या विचार हैं?

पिता के ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी माँ। धरती से कुछ ज़्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी शायद उनमें। पिता जी की हर ज़्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित फ़रमाइश और ज़िद को अपना फर्ज़ समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थीं वे। उन्होंने ज़िंदगी भर अपने लिए कुछ माँगा नहीं, चाहा नहीं...केवल दिया ही दिया। हम भाई-बहिनों का सारा लगाव (शायद सहानुभूति से उपजा) माँ के साथ था लेकिन निहायत असहाय मजबूरी में लिपटा उनका यह त्याग कभी मेरा आदर्श नहीं बन सका...न उनका त्याग, न उनकी सहिष्णुता। खैर, जो भी हो, अब यह पैतृक-पुराण यहीं समाप्त कर अपने पर लौटती हूँ।

पाँच भाई-बहिनों में सबसे छोटी मैं। सबसे बड़ी बहिन की शादी के समय मैं शायद सात साल की थी और उसकी एक धुँधली-सी याद ही मेरे मन में है, लेकिन अपने से दो साल बड़ी बहिन सुशीला और मैंने घर के बड़े से आँगन में बचपन के सारे खेल खेले-सतोलिया, लँगड़ी-टाँग, पकड़म-पकड़ाई, काली-टीलो...तो कमरों में गुड्डे-गुड़ियों के ब्याह भी रचाये, पास-पड़ोस की सहेलियों के साथ। यों खेलने को हमने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता

SCERT TELANGANA

था और हमारी सीमा थी घर। हाँ, इतना ज़रूर था कि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है। मेरी कम-से-कम एक दर्जन आरंभिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के हैं जहाँ मैंने अपनी किशोरावस्था गुज़ार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था। एक-दो को छोड़कर उनमें से कोई भी पात्र मेरे परिवार का नहीं है। बस इनको देखते-सुनते, इनके बीच ही मैं बड़ी हुई थी लेकिन इनकी छाप मेरे मन पर कितनी गहरी थी, इस बात का अहसास तो मुझे कहानियाँ लिखते समय हुआ। इतने वर्षों के अंतराल ने भी उनकी भाव-भँगिमा, भाषा किसी को भी धुँधला नहीं किया था और बिना किसी विशेष प्रयास के बड़े सहज भाव से वे उतरते चले गये थे। उसी समय के दा साहब अपने व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ पाते ही 'महाभोज' में इतने वर्षों बाद कैसे एकाएक जीवित हो उठे, यह मेरे अपने लिए भी आश्चर्य का विषय था...एक सुखद आश्चर्य का।

उस समय तक हमारे परिवार में लड़की के विवाह के लिए अनिवार्य योग्यता थी- उम्र में सोलह वर्ष और शिक्षा में मैट्रिक। सन् 1944 में सुशीला ने यह योग्यता प्राप्त की और शादी करके कोलकाता चली गयी। दोनों बड़े भाई भी आगे पढ़ाई के लिए बाहर चले गये। इन लोगों की छत्र-छाया के हटते ही पहली बार मुझे नये सिरे से अपने वजूद का एहसास हुआ। पिता जी का ध्यान भी पहली बार मुझ पर केंद्रित हुआ। लड़कियों को जिस उम्र में स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुघड़ गृहिणी और कुशल पाक-शास्त्री बनाने के नुस्खे जुटाये जाते थे, पिता जी का आग्रह रहता था कि मैं रसोई से दूर ही रहूँ। रसोई को वे भटियारखाना कहते थे और उनके हिसाब से वहाँ रहना अपनी क्षमता और प्रतिभा को भट्टी में झोंकना था। घर में आये दिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े होते थे और जमकर बहसें होती थीं। बहस करना पिता जी का प्रिय शगल था। चाय-पानी या नाश्ता देने जाती तो पिता जी मुझे भी वहीं बैठने को कहते। वे चाहते थे कि मैं भी वहीं बैठूँ, सुनूँ और जानूँ कि देश में चारों ओर क्या कुछ हो रहा है। देश में हो भी तो कितना कुछ रहा था। सन् 1942 के आंदोलन के बाद से तो सारा देश जैसे खौल रहा था, लेकिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों की नीतियाँ, उनके आपसी विरोध या मतभेदों की तो मुझे दूर-दूर तक कोई समझ नहीं थी। हाँ, क्रांतिकारियों और देशभक्त शहीदों के रोमानी आकर्षण, उनकी कुर्बानियों से ज़रूर मन आक्रांत रहता था।

सो दसवीं कक्षा तक आलम यह था कि बिना किसी खास समझ के घर में होने वाली बहसें सुनती थी और बिना चुनाव किये, बिना लेखक की अहमियत से परिचित हुए किताबें पढ़ती थी। लेकिन सन् 1945 में जैसे ही दसवीं पास करके मैं 'फर्स्ट इयर' में आयी, हिंदी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल से परिचय हुआ। सावित्री गर्ल्स हाई स्कूल...जहाँ मैंने ककहरा सीखा, एक साल पहले ही कॉलिज बना था और वे इसी साल नियुक्त हुई थीं, उन्होंने बाकायदा साहित्य की दुनिया में प्रवेश

SCERT TELANGANA

करवाया। मात्र पढ़ने को,चुनाव करके पढ़ने में बदला...ख़ुद चुन-चुनकर किताबें दीं...पढ़ी हुई किताबों पर बहसें कीं तो दो साल बीतते-न-बीतते साहित्य की दुनिया शरत-प्रेमचंद से बढ़कर जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा तक फैल गयी और फिर तो फैलती ही चली गयी। उस समय जैनेंद्र जी की छोटे-छोटे सरल-सहज वाक्यों वाली शैली ने बहुत आकृष्ट किया था। 'सुनीता' (उपन्यास) बहुत अच्छा लगा था, अज्ञेय जी का उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी' पढ़ा ज़रूर पर उस समय वह मेरी समझ के सीमित दायरे में समा नहीं पाया था। कुछ सालों बाद 'नदी के द्वीप' पढ़ा तो उसने मन को इस कदर बाँधा कि उसी झोंक में शेखर को फिर से पढ़ गयी...इस बार कुछ समझ के साथ। यह शायद मूल्यों के मंथन का युग था...पाप-पुण्य, नैतिक-अनैतिक, सही-गलत की बनी-बनायी धारणाओं के आगे प्रश्न चिह्न ही नहीं लग रहे थे, उन्हें ध्वस्त भी किया जा रहा था। इसी संदर्भ में जैनेंद्र का 'त्यागपत्र', भगवती बाबू का 'चित्रलेखा' पढ़ा और शीला अग्रवाल के साथ लंबी-लंबी बहसें करते हुए उस उम्र में जितना समझ सकती थी, समझा।

4. पिताजी ने रसोईघर को भटियारखाना क्यों कहा था?
5. लेखिका के पिताजी उन्हें बहसों में बैठने को क्यों कहा करते थे?
6. लेखिका का साहित्य से संबंध कैसे जुड़ा?
7. शीला अग्रवाल से लेखिका कैसे प्रभावित हुई?

शीला अग्रवाल ने साहित्य का दायरा ही नहीं बढ़ाया था बल्कि घर की चारदीवारी के बीच बैठकर देश की स्थितियों को जानने-समझने का जो सिलसिला पिता जी ने शुरु किया था, उन्होंने वहाँ से खींचकर उसे भी स्थितियों की सक्रिय भागीदारी में बदल दिया। सन् 1946-47 के दिन...वे स्थितियाँ, उसमें वैसे भी घर में बैठे रहना संभव था भला? प्रभात-फेरियाँ, हड़तालें, जुलूस, भाषण हर शहर का चरित्र था और पूरे दमखम और जोश-खरोश के साथ इन सबसे जुड़ना हर युवा का उन्माद। मैं भी युवा थी और शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने रगों में बहते खून को लावे में बदल दिया था। स्थिति यह हुई कि एक बवंडर शहर में मचा हुआ था और एक घर में। पिता जी की आज़ादी की सीमा यहीं तक थी कि उनकी उपस्थिति में घर में आये लोगों के बीच उठूँ-बैठूँ, जानूँ-समझूँ। हाथ उठा-उठाकर नारे लगाती, हड़तालें करवाती, लड़कों के साथ शहर की सड़कें नापती लड़की को अपनी सारी आधुनिकता के बावजूद बर्दाश्त करना उनके लिए मुश्किल हो रहा था तो किसी की दी हुई आज़ादी के दायरे में चलना मेरे लिए। जब रगों में लहू की जगह लावा बहता हो तो सारे निषेध,सारी वर्जनाएँ, सारा भय कैसे ध्वस्त हो जाता है,यह तभी जाना और अपने क्रोध से सबको थरथरा देने वाले पिता जी से टक्कर लेने का जो सिलसिला तब शुरु हुआ था, राजेंद्र से शादी की, तब तक वह चलता ही रहा।

यश-कामना बल्कि कहूँ कि यश-लिप्सा, पिता जी की सबसे बड़ी दुर्बलता थी और उनके जीवन की धुरी था यह सिद्धांत कि व्यक्ति को कुछ विशिष्ट बन कर जीना चाहिए...कुछ ऐसे काम करने चाहिए कि समाज में उसका नाम हो, सम्मान हो, प्रतिष्ठा हो, वर्चस्व हो। इसके चलते ही मैं दो-एक बार उनके कोप से बच गयी थी। एक बार कॉलिज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि पिता जी आकर मिलें और बतायें कि मेरी गतिविधियों के कारण मेरे खिलाफ़ अनुशासनात्मक कार्रवाई क्यों

SCERT TELANGANA

न की जाए? पत्र पढ़ते ही पिता जी आग-बबूला। ''यह लड़की मुझे कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रखेगी...पता नहीं क्या-क्या सुनना पड़ेगा वहाँ जाकर! चार बच्चे पहले भी पढ़े, किसी ने ये दिन नहीं दिखाया।'' गुस्से से भन्नाते हुए ही वे गये थे। लौटकर क्या कहर बरपा होगा, इसका अनुमान था, सो मैं पड़ोस की एक मित्र के यहाँ जाकर बैठ गयी। माँ को कह दिया कि लौटकर बहुत कुछ गुबार निकल जाए, तब बुलाना। लेकिन जब माँ ने आकर कहा कि वे तो खुश ही हैं, चली चल, तो विश्वास नहीं हुआ। गयी तो सही, लेकिन डरते-डरते। ''सारे कॉलिज की लड़कियों पर इतना रौब है तेरा...सारा कॉलिज तुम तीन लड़कियों के इशारे पर चल रहा है? प्रिंसिपल बहुत परेशान थी और बार-बार आग्रह कर रही थी कि मैं तुझे घर बिठा लूँ, क्योंकि वे लोग किसी तरह डरा-धमकाकर, डाँट-डपटकर लड़कियों को क्लासों में भेजते हैं और अगर तुम लोग एक इशारा कर दो कि क्लास छोड़कर बाहर आ जाओ तो सारी लड़कियाँ निकलकर मैदान में जमा होकर नारे लगाने लगती हैं। तुम लोगों के मारे कॉलिज चलाना मुश्किल हो गया है उन लोगों के लिए।'' कहाँ तो जाते समय पिता जी मुँह दिखाने में घबरा रहे थे और कहाँ बड़े गर्व से कहकर आये कि यह तो पूरे देश की पुकार है...इस पर कोई कैसे रोक लगा सकता है भला? बेहद गद्‌गद् स्वर में पिता जी यह सब सुनाते रहे और मैं अवाक्। मुझे न अपनी आँखों पर विश्वास हो रहा था, न अपने कानों पर। पर यह हकीक़त थी।

एक घटना और। आज़ाद हिंद फ़ौज़ के मुकदमे का सिलसिला था। सभी कॉलिजों, स्कूलों, दुकानों के लिए हड़ताल का आह्वान था। जो-जो नहीं कर रहे थे, छात्रों का एक बहुत बड़ा समूह वहाँ जा-जाकर हड़ताल करवा रहा था। शाम को अजमेर का पूरा विद्यार्थी-वर्ग चौपड़ (मुख्य बाज़ार का चौराहा) पर इकट्‌ठा हुआ और फिर हुई भाषणबाजी। इस बीच पिता जी के एक निहायत दकियानूसी मित्र ने घर आकर अच्छी तरह पिता जी की लू उतारी, ''अरे, उस मन्नू की तो मत मारी गयी है पर भंडारी जी आपको क्या हुआ? ठीक है, आपने लड़कियों को आज़ादी दी, पर देखते आप, जाने कैसे-कैसे उलटे-सीधे लड़कों के साथ हड़तालें करवाती, हुड़दंग मचाती फिर रही है वह। हमारे-आपके घरों की लड़कियों को शोभा देता है यह सब? कोई मान-मर्यादा, इज़्ज़त-आबरू का ख़याल भी रह गया है आपको या नहीं?''

वे तो आग लगाकर चले गये और पिताजी सारे दिन भभकते रहे, ''बस, अब यही रह गया है कि लोग घर आकर थू-थू करके चले जाएँ। बंद करो अब इस मन्नू का घर से बाहर निकलना।''

इस सबसे बेखबर मैं रात होने पर घर लौटी तो पिता जी के एक बेहद अंतरंग और अभिन्न मित्र ही नहीं, अजमेर के सबसे प्रतिष्ठित और सम्मानित डॉ. अंबालाल जी बैठे थे। मुझे

8. मन्नू के पिताजी उनके घर से निकलने पर क्यों रोक लगाना चाहते थे?
9. 'आज़ाद हिंद फ़ौज' के बारे में तुम क्या जानते हो?
10. लेखिका के पिताजी किन अंतर विरोधों में रहकर जीवन बिता रहे थे?
11. मन्नू से नाराज़ पिताजी उन्हें देखकर गर्व का अहसास क्यों कर रहे थे?
12. 15 अगस्त, 1947 के महत्व के बारे में बताइए।

SCERT TELANGANA

देखते ही उन्होंने बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया, आओ, आओ मन्नू। मैं तो चौपड़ पर तुम्हारा भाषण सुनते ही सीधा भंडारी जी को बधाई देने चला आया। 'आई एम रिअली प्राउड ऑफ़ यू'...क्या तुम घर में घुसे रहते हो भंडारी जी...घर से निकला भी करो। 'यू हैव मिस्ड समथिंग, और वे धुआँधार तारीफ़ करने लगे वे बोलते जा रहे थे और पिता जी के चेहरे का संतोष धीरे-धीरे गर्व में बदलता जा रहा था। भीतर जाने पर माँ ने दोपहर के गुस्से वाली बात बतायी तो मैंने राहत की साँस ली।

आज पीछे मुड़कर देखती हूँ तो इतना तो समझ में आता ही है क्या तो उस समय मेरी उम्र थी और क्या मेरा भाषण रहा होगा!यह तो डॉक्टर साहब का स्नेह था जो उनके मुँह से प्रशंसा बनकर बह रहा था या यह भी हो सकता है कि आज से पचास साल पहले अजमेर जैसे शहर में चारों ओर से उमड़ती भीड़ के बीच एक लड़की का बिना किसी संकोच और झिझक के यों धुआँधार बोलते चले जाना ही इसके मूल में रहा हो। पर पिता जी! कितनी तरह के अंतर्विरोधों के बीच जीते थे वे। एक ओर 'विशिष्ट' बनने और बनाने की प्रबल लालसा तो दूसरी ओर अपनी सामाजिक छवि के प्रति भी उतनी ही सजगता। पर क्या यह संभव है? क्या पिता जी को इस बात का बिलकुल भी अहसास नहीं था कि इन दोनों का तो रास्ता ही टकराहट का है?

सन् 1947 के मई महीने में शीला अग्रवाल को कॉलिज वालों ने नोटिस थमा दिया-लड़कियों को भड़काने और कॉलिज का अनुशासन बिगाड़ने के आरोप में। इस बात को लेकर हुड़दंग न मचे, इसलिए जुलाई में थर्ड इयर की क्लासेज़ बंद करके हम दो-तीन छात्राओं का प्रवेश निषिद्ध कर दिया।

हुड़दंग तो बाहर रहकर भी इतना मचाया कि कॉलिज वालों को अगस्त में आखिर थर्ड इयर खोलना पड़ा। जीत की खुशी, पर सामने खड़ी बहुत-बहुत बड़ी चिर प्रतीक्षित खुशी के सामने यह खुशी बिला गयी।

शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि...15 अगस्त 1947

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. इस पाठ की लेखिका ने एक स्त्री होते हुए भी स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। अब आप बताइए कि सामाजिक विकास में विद्‌यार्थी क्या योगदान दे सकते हैं?
2. समाज-सुधार कार्यों में स्वयंसेवी संस्थाओं की क्या भूमिका है?

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. 'एक कहानी यह भी' पाठ की लेखिका के बारे में बताइए।
2. लेखिका की अपने पिताजी से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में प्रकट कीजिए।
3. लेखिका ने अपने बचपन के बारे में क्या कहा?

(इ) पाठ के आधार पर निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

1. मुझे न अपनी आँखों पर विश्वास हो रहा था, न अपने कानों पर। पर यह हक़ीक़त थी।
2. बस, अब यही रह गया है कि लोग घर आकर थू-थू करके चले जाएँ। बंद करो अब इस

मन्नू का घर से बाहर निकलना।

3. जीत की खुशी, पर सामने खड़ी बहुत-बहुत बड़ी चिर प्रतीक्षित खुशी के सामने यह खुशी बिला गयी।

(ई) गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

23 मई, 1954 का दिन भारतीय इतिहास में एक स्मरणीय दिन माना जाएगा। एक साहसी महिला ने अन्य भारतीयों को कुछ कर दिखाने की प्रेरणा दी है। भारतीय पर्वतारोहियों को इस संबंध में प्रेरणा तो उस समय से ही प्राप्त हो रही है, जब सर्वप्रथम तेनसिंह नोर्के ने सागरमाथा पर विजय प्राप्त की थी। तब से निरंतर पर्वतारोहियों के दल इस जोखिमपूर्ण साहसिक अभियान के लिए स्वयं को समर्पित करते आ रहे हैं। भारतीय पर्वतारोहण संस्थान के प्रयास भी पर्वतारोहियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। समय-समय पर भारतीय पर्वतारोहियों ने अन्य देशों के साहसिक अभियानों का मार्ग-दर्शन भी किया है। भारतीय सेना कई अभियान दलों के साथ शिखर यात्रा पर पहुँचे हैं।

आज संसार का यह सर्वोच्च शिखर केवल पुरुष पर्वतारोहियों के लिए ही सुरक्षित नहीं है। जुंको ताबेई ने जो मार्ग विश्व की महिलाओं के लिए खोल दिया, उस पर चलने के लिए आज विश्व की अनेक महिलाएँ साहसिक कार्यों में आगे आ रही हैं। भारतीय महिला पर्वतारोहियों ने इस क्षेत्र में आगे आने की कई मंज़िलें तय की थीं।

प्रश्न

1. भारत के इतिहास में 23 मई, 1954 एक स्मरणीय दिन क्यों माना गया?
2. सर्वप्रथम सागरमाथा पर किसने विजय प्राप्त की थी?
3. आज विश्व की अनेक महिलाएँ किन कार्यों में आगे आ रही हैं?
4. 'साहस' शब्द का विपरीतार्थक लिखिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए।

1. लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा? कैसे?
2. 'आज़ाद हिंद फ़ौज' के मुकदमे के सिलसिले में विद्यालयों में कैसे कार्यक्रम आयोजित किये गये?

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर दस-बारह पंक्तियों में लिखिए।

1. ब्रिटीश शासन में भारतवासियों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता था? अपने शब्दों में लिखिए।
2. लेखिका के संघर्षमय जीवन से हमें क्या संदेश मिलता है?

(इ) 1. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य पर आपको संयुक्त राष्ट्र संघ में भाषण देने का मौक़ा मिलें तो आपका भाषण क्या होगा? इस पर एक भाषण-लेख लिखिए।

(ई) समाज में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। इस पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. यश, धैर्य, सीमा, इशारा (पर्यायवाची शब्द लिखिए।)
2. बेहद, क्रोधित, सहनशक्ति, गर्मजोश (वाक्य प्रयोग कर शब्दार्थ लिखिए।)
3. लू उतारना, आग लगाना (मुहावरे का अर्थ लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)
4. ताने-बाने, मान-मर्यादा (युग्म शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़कर उसके अनुसार लिखिए।

1. महत्वाकांक्षा, किशोरावस्था, दुर्बल (विच्छेद कर संधि पहचानिए।)
2. पोथी-पुराण, चौराहा, चारदिवारी (विग्रह कर समास पहचानिए।)

(इ) उदाहरण के अनुसार शब्दों को ऐसे वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए जिससे उनके एकाधिक अर्थ स्पष्ट हों। पाठ में आये भिन्नार्थी शब्दों में से पाँच शब्द चुनकर लिखिए।

जैसे - आम   1. आम मीठा फल है। 2. आम जनता देश की स्वतंत्रता के लिए आगे बढ़ी।

(ई) अर्थ की दृष्टि से वाक्य पहचानिए और दिये गये उदाहरणों के अनुसार दो-दो वाक्य बनाइए।

1. वह काम कर रहा था।
2. तुम काम पर जाओ।
3. तुम काम पर मत जाओ।

परियोजना कार्य

(अ) किसी महिला अधिकार संरक्षण व विकास संगठन की सदस्या से भेंट कर महिला अधिकारों की जानकारी इकट्ठी कीजिए। आधुनिक समाज में महिला विकास के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं? इसका पता लगाकर एक सूची बनाइए। उसका प्रदर्शन कक्षा में कीजिए।

SCERT TELANGANA

उपवाचक

☆ मंगल, मानव और मशीन

-श्री विनोद रस्तोगी

पात्र-परिचय

मेधावी - मंगल लोक का एक वैज्ञानिक
मारुत - मेधावी का सहकारी।
भारतीय वैज्ञानिक
अंग्रेज वैज्ञानिक
अमेरिकी वैज्ञानिक
रूसी वैज्ञानिक
स्थान - मंगल-लोक के उत्तरी भाग का एक निर्जन स्थान।
समय - 23 जून 1968 की रात

(स्थान खुला हुआ है। इधर-उधर अनेक प्रकार के यंत्र लगे हैं जिनमें मुख्य 'दूरदर्शी यंत्र', 'ध्वनियंत्र', 'आकर्षण-किरणयंत्र' तथा 'भाषा यंत्र' हैं। एक स्टूल पर छोटी-सी सुंदर किंतु दृढ़ पेटी है जो बंद है। मेधावी 'दूरदर्शी' यंत्र के समीप एक कुर्सी पर बैठा है। वह हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति है। वस्त्र बहुत पतले हैं, किंतु वे पारदर्शी नहीं हैं। हाथों में दस्ताने हैं। अतः दर्शकों को केवल उसका मुख ही दिखायी पड़ रहा है। मुख कुछ-कुछ मनुष्यों-सा होकर भिन्नता लिए है। मारुत 'ध्वनियंत्र' के समीप बैठा है। उसकी वेशभूषा भी वैसी ही है। दो-चार रिक्त स्टूल और कुर्सियाँ इधर-उधर रखी हैं। एक ओर से हरा और दूसरी ओर से लाल प्रकाश आ रहा है। मेधावी और मारुत के मुख (जो दर्शकों के सामने हैं) इस प्रकाश के प्रभाव से कुछ लाल और कुछ हरे-से दिखायी पड़ रहे हैं।

मेधावी : आज हम हिंदी भाषा का ही प्रयोग करेंगे। भाषायंत्र को हिंदी पर लगा दो।

मारुत : (मारुत उठकर यंत्र का स्विच दबाता है और पुनः अपने स्थान पर आ जाता है।) आज मैं भी भूलोक को निकट से देख सकूँगा गुरुदेव।

मेधावी : भूलोक देखने की इच्छा क्या तुम्हारे हृदय में भी है?

मारुत : हाँ गुरुदेव। आप तो कई बार वहाँ की सैर कर आये हैं। कुछ आप ही बताइए वहाँ के निवासियों के विषय में।

मेधावी : वहाँ मानव नाम का एक जीव रहता है, जिसकी महत्वाकांक्षा का कोई अंत ही नहीं है। उसने चंद्रलोक को तो जीत ही लिया है, अब वह हमारे पवित्र लोक पर भी अधिकार करने की सोच रहा है।

मारुत : (आश्चर्य से) अच्छा, तो मानव नाम का यह पशु अवश्य ही बहुत शक्तिशाली होगा।

मेधावी : वह स्वयं अपनी शक्ति का नाश कर रहा है, मारुत! उसका मस्तिष्क विकृत है।

मारुत : क्यों?

मेधावी : जो अपने ही बंधु-बांधवों के रक्त का प्यासा हो, वह पागल नहीं तो और क्या है?

SCERT TELANGANA

भूलोक में कोई सौंदर्य नहीं है, वह बहुत कुरूप है।

मारुत : कुरूप...?

मेधावी : हाँ, टूटा-फूटा, कटा, जाति, धर्म, भाषा और राष्ट्र की छुरियों ने उसके खंड-खंड कर दिये हैं।

मारुत : तब तो व्यर्थ है मेरी जिज्ञासा। आप ही देखें उसे। मैं चित्रों से ही अपना काम चला लूँगा। अच्छा गुरुवर, आज भूलोकस्वामी भी हमारे लोक को देखने के लिए बड़े-बड़े आयोजन कर रहे होंगे।

मेधावी : क्यों नहीं, सामीप्य का लाभ सभी उठाते हैं। पर उनके यंत्रों में इतनी शक्ति नहीं है, जैसे हमारे यंत्रों में है। हम आज उनका घर-द्वार देख सकते हैं। और वे केवल हमारी दुनिया को ही देख सकते हैं।

(सहसा 'ध्वनियंत्र' से घरघराहट की आवाज़ आती है, जो निरंतर तीव्र होती जाती है। दोनों चौंक पड़ते हैं। मारुत भागकर 'ध्वनियंत्र' के समीप जाता है। मेधावी अपने यंत्र में आँख लगाकर ध्यान से देखता है।)

मारुत : (चीखकर आवेशयुक्त स्वर में) पृथ्वी की ओर से कोई वस्तु विद्युतवेग से इस ओर आ रही है। यह आवाज उसी की है गुरुदेव।

मेधावी : (यंत्र से हटकर) हाँ, कोई रॉकेट है, पर वह यहाँ तक कभी न पहुँच सकेगा। मानव का यह प्रयास, असफल रहेगा। (हँसकर) पृथ्वी का कीड़ा....हा...हा...हा...

मारुत : (निकट आकर) क्यों न हम अपनी आकर्षण किरणों से उस रॉकेट को खींच लें। मैं भी मानव नामधारी उस जीव को देख लूँ।

मेधावी : जैसी तुम्हारी इच्छा।

(मेधावी उठकर 'आकर्षण किरण यंत्र' के समीप जाता है और एक बटन दबा देता है। सहसा एक बिजली-सी कौंध जाती है। स्विच बंद करके वह फिर अपने स्थान पर आ जाता है।)

मेधावी : देख लो तुम भी इस पागल पशु को।

('ध्वनियंत्र' की आवाज़ बहुत तीव्र हो जाती है और फिर चरम उत्कर्ष पर पहुँचकर सहसा रुक जाती है। उससे प्रतिध्वनि गूँजती रहती है।)

मारुत : रॉकेट आ गया।

मेधावी : हाँ, कुछ दूर पर ही उतरा है। सावधान! मानव नाम का प्राणी आता ही होगा। (दोनों अपने-अपने स्थानों पर सँभलकर खड़े हो जाते हैं। एक क्षण बाद ही चार मनुष्य आते हैं। तीन सूट पहने हैं और एक सफेद चूड़ीदार पैजामा तथा काली शेरवानी। चारों ऑक्सीजन के यंत्र से लैस हैं। अतः दर्शकों को उनका रूप-रंग ठीक से नहीं दिखायी पड़ता। मारुत विस्मय और आश्चर्य से उनकी ओर देखता है।)

मेधावी : आप लोग इन्हें उतार क्यों नहीं देते?

(सब लोग आश्चर्य से उसकी ओर देखते हैं।)

मेधावी : ओह, आप कदाचित इस पर आश्चर्य कर रहे हैं कि मैं हिंदी कैसे सीख गया। हम

SCERT TELANGANA

अखिल ब्रह्मांड की समस्त भाषाएँ जानते हैं। (भाषा यंत्र की ओर संकेत करके) भाषा संबंधी हमारी सभी कठिनाइयों को यह यंत्र दूर कर देता है। (सब बहुत ध्यान से यंत्र को देखते हैं।)

मारुत : उतार भी दीजिए ये यंत्र। मैं आप लोगों को ठीक से देखना चाहता हूँ।

एक व्यक्ति : (घुटी आवाज़ में) यह संभव नहीं। ऑक्सीजन............।

ओह समझा। बिना ऑक्सीजन के आप लोग रह नहीं सकते। यहाँ ऑक्सीजन का अभाव है। (वस्त्रों से चार छोटी-छोटी गोलियाँ निकालकर प्रत्येक को देकर) खा लीजिए इन्हें और उतार दीजिए ऑक्सीजन के यंत्र। कोई कठिनाई नहीं होगी आपको।

(चारों व्यक्ति मुँह खोलकर गोली खा लेते हैं और फिर डरते-डरते यंत्र उतारते हैं। जब उन्हें बिना यंत्र के कोई कठिनाई नहीं होती, तो वे प्रसन्न होते हैं।)

मेधावी : अब अपना-अपना परिचय दीजिए।

पहला : मैं भारतीय वैज्ञानिक हूँ।

दूसरा : मैं अमेरिकी वैज्ञानिक हूँ।

तीसरा : मैं रूसी वैज्ञानिक हूँ।

चौथा : मैं अंग्रेज वैज्ञानिक हूँ।

मेधावी : (प्रसन्नता से) वैज्ञानिक मैं भी हूँ। पर आपका विज्ञान हमारे विज्ञान की तुलना में घुटना चलता शिशु है अभी।

भारतीय : (व्यंग्य से) अच्छा, और क्या, यह आप बताने की कृपा करेंगे कि आपका विज्ञान किस लोक का विज्ञान है?

मेधावी : (हँसकर) मंगललोक का।

अमेरिकी : तो क्या हम लोग इस समय मंगललोक में हैं?

मारुत : जी हाँ, और मैं यहाँ का एक वैज्ञानिक हूँ।

अंग्रेज : (प्रसन्नता से) ओह! हमने मंगललोक जीत लिया।

अमेरिकी : (बिगड़कर) यह रॉकेट हमारा है, मंगललोक की विजय का श्रेय हमें मिलेगा।

अंग्रेज : वाह! संसार की सर्वोच्च चोटी हमने जीती, मंगललोक की विजय भी हमारे बिना असंभव थी।

भारतीय : एवरेस्ट विजय हमारे बिना असंभव थी। मंगल लोक पर भी हमारा अधिकार है।

रूसी : (क्रुद्ध स्वर में) और, जैसे हमने कुछ किया ही नहीं। (अमेरिकी की ओर मुड़कर) तुम्हारी तो नीति ही सदैव पूँजीवादी रही है। मंगललोक पर हमारा अधिकार होगा, समझे? लाल मंगल पर लाल रूस का अधिकार। ओह, ...कितना सुखद.................कितना............।

मेधावी : आप लोग व्यर्थ विवाद क्यों कर रहे हैं? आप किसी ने भी हमारा लोक नहीं जीता।

अमेरिकी : हमारा रॉकेट यहाँ पहुँचा या नहीं?

मेधावी : रॉकेट पहुँचा नहीं, लाया गया। हमने अपनी आकर्षण किरणों से उसे यहाँ खींच

SCERT TELANGANA

लिया। (हँसकर) मेरे सहकारी मारुत को मानव देखने की इच्छा थी, आप विजयी नहीं, हमारे बंदी हैं।

अमेरिकी : बंदी?

मेधावी : हाँ।

(सहसा अमेरिकी और रूसी विद्युत-वेग से अपने वस्त्रों से पिस्तौल निकालकर क्रमशः मेधावी और मारुत पर गोली छोड़ने लगते हैं। गोलियों का उन दोनों पर कोई असर नहीं होता। वे खड़े हँसते रहते हैं। पिस्तौलें खाली हो जाती हैं। मेधावी और मारुत को हँसता देख दोनों घबरा जाते हैं। उनके हाथों से पिस्तौलें छूटकर नीचे गिर जाती हैं।)

मेधावी : (हँसकर) और कोई अस्त्र - शस्त्र है? (सब अवाक् होकर उसका मुख देखते रहते हैं।)

मेधावी : हमने मृत्यु पर विजय पा ली है। ऐसा है हमारा विज्ञान। (अमेरिकी से) आपका हाइड्रोजन बम भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

अमेरिकी : आप क्या जानते हैं हाइड्रोजन बम के बारे में?

मेधावी : हमसे भूलोक की कोई बात छिपी नहीं है। आप लोगों के लिए हमारा लोक भले ही जिज्ञासा का विषय हो, पर हम आपके विषय में सब कुछ जानते हैं। मैं तो कई बार भूलोक हो भी आया हूँ।

सब : (आश्चर्य से) अच्छा!

मेधावी : हाँ? जहाँ आपका रॉकेट उतरा है, वहीं आपने हमारा भी 'स्पेस-शिप' देखा होगा। बहुत शक्तिशाली है वह। हमारे सब यंत्र अद्‌भुत हैं। इस दूरदर्शी यंत्र से आप अपनी पृथ्वी स्पष्ट देख सकते हैं। आइए, देखिए। (सब बारी-बारी से देखते हैं। सबके मुखों पर आश्चर्य के चिह्न हैं।)

भारतीय : आश्चर्य है! अच्छा, आपने अभी कहा था कि आपने मृत्यु को जीत लिया है, तो क्या यहाँ सब अमर हैं।

मेधावी : हाँ, यह अमरों का लोक है। हमने अपनी सभी आवश्यकताओं पर विजय पा ली है। न हमें भूख लगती है, न प्यास। ये वस्त्र जो हमने पहने हैं, सहस्रों वर्ष पुराने हैं। ये न मैले होते हैं और न फटते हैं।

रूसी : आप कुछ खाते-पीते ही नहीं?

मेधावी : हमने एक ऐसी गोली का आविष्कार किया है, जिसे एक बार खा लेने से सौ वर्ष तक भूख प्यास नहीं लगती।

अमेरिकी : आपको न अन्न की चिंता है और न वस्त्र की? तब आप दिन भर करते क्या हैं?

मेधावी : निश्चिंत होकर गंभीर अन्वेषण कार्य करते हैं।

अंग्रेज : तो क्या यहाँ सब वैज्ञानिक ही हैं।

मेधावी : नहीं। कलाकार, कवि, लेखक, चित्रकार सभी हैं। सब अपनी-अपनी कलाओं के विकास के लिए ही प्रयत्नशील रहते हैं। स्वस्थ शरीर और स्वच्छ मन से ही शुभ कार्य हो सकते हैं। जानते हैं, हमारे लोक का नाम मंगललोक क्यों पड़ा?

SCERT TELANGANA

भारतीय : आप ही बताइए।

मेधावी : हम व्यक्ति, जाति, धर्म, भाषा और राष्ट्र के हित से बहुत ऊपर उठकर समस्त ब्रह्मांड के हित की बात सोचते हैं। हमारा ध्येय विश्वकल्याण है।

भारतीय : आपके यहाँ जाति, धर्म, भाषा और शब्दों का भेद नहीं है?

मेधावी : नहीं। हमने आप लोगों की भाँति अपने लोक को काटा-छाँटा नहीं है। हम उस संस्कृति में विश्वास करते हैं जो एक और अविभाज्य है। आप लोग स्वार्थी हैं। हम हर भूवार को परमात्मा से प्रार्थना करते है कि वह भूलोकवासियों को सद्बुद्धि और पारस्परिक सद्भावना प्रदान करें।

भारतीय : यह भूवार कौनसा वार है?

मेधावी : (हँसकर) जिसे आप मंगलवार कहते हैं, वह यहाँ भूवार कहलाता है। जैसे आपके यहाँ मंगली संतान होती है, वैसे यहाँ 'भूईसंतान' होती है। (हँसकर) मेरा सहकारी भू नक्षत्र में ही पैदा हुआ था।

रूसी : आपने अभी परमात्मा का नाम लिया था। क्या आप लोग भी परमात्मा पर विश्वास रखते हैं?

अमेरिकी : क्या अपनी तरह सबको नास्तिक समझते हो? (मेधावी से) महाशय जी, कितने गिरजे होंगे इस मंगल लोक में?

मारुत : यहाँ इस नाम की कोई वस्तु नहीं है।

भारतीय : (अमेरिकी से) तुम तो सभी को ईसाई समझते हो। यह लोग आर्य हैं, आर्य (मारुत से) मंदिर हैं?

मारुत : नहीं, यहाँ मंदिर, मस्जिद, गिरजा कुछ भी नहीं है। हम इस प्रकार के धर्म को नहीं मानते। भ्रातृत्व ही हमारा धर्म है और हमारे हृदय ही परमात्मा के पूजागृह हैं।

भारतीय : (प्रसन्न होकर) प्यार को परमेश्वर तो हम भी मानते हैं।

मेधावी : हम केवल मानते ही नहीं उस पर आचरण भी करते हैं। आप लोग सोचते कुछ हैं, कहते कुछ और करते कुछ और ही हैं।

अंग्रेज : आप सत्य कहते हैं। (रूसी की ओर व्यंग्य से देखकर) हममें कुछ लोग ऐसा ही करते हैं। अच्छा, श्रीमान जी आपका राजा कहाँ है। हम उसके दर्शन करना चाहते हैं।

मेधावी : यहाँ कोई राजा नहीं है।

रूसी : यह समझते हैं कि इनकी तरह हर कोई राजतंत्र को पकड़े बैठा है। आज जनता का युग है, राजा का नहीं।

अमेरिकी : कदाचित आपके यहाँ हमारे देश की तरह राष्ट्रपति होता होगा। किस पद्धति से चुनाव होता है? प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष से?

मेधावी : यहाँ राष्ट्रपति भी नहीं है।

भारतीय : कदाचित आपने हमारी भाँति कई पद्धतियों का सम्मिश्रण किया है। आपके यहाँ भी प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति दोनों ही होंगे।

मेधावी : जी नहीं, हमारे यहाँ कुछ भी नहीं है। यहाँ न राजा है न राज्य। न राष्ट्रपति है और

SCERT TELANGANA

न राष्ट्र। हमारा समाज राज्यहीन और वर्गहीन समाज है।

रूसी : (प्रसन्नता से) यह है सच्चा साम्यवाद। किसी की प्राप्ति की चेष्टा हम कर रहे हैं। मंगल के लाल होने का कारण अब स्पष्ट हुआ। (जोर से) लाल मंगल जिंदाबाद! लाल रूस जिंदाबाद!

अमेरिकी : (व्यंग्य से) लाल चीन को क्यों भूल गये?

रूसी : (व्यंग्य से) एक दिन अमेरिका भी लाल हो जाएगा।

अमेरिकी : (हँसी मुद्रा में) उनके रक्त से, जो उधर कुदृष्टि डालेंगे।

मारुत : आप लोग लड़ते क्यों हैं?

मेधावी : बिना लड़े ये लोग जिंदा नहीं रह सकते। इनका युद्ध शांति के लिए होता है। (हँसता है।) तभी तो इन्हें पुलिस और सेना की आवश्यकता होती है। इनके वैज्ञानिक संहारक यंत्रों का ही निर्माण करते हैं। इनके कवि और लेखक घृणा और हिंसा का ही प्रचार और प्रसार करते हैं।

रूसी : मैं आवेश में आ गया था, क्षमा चाहता हूँ।

अमेरिकी : और मैं भी।

अंग्रेज : ठीक है। (मेधावी से) तो क्या यहाँ पुलिस और सेना भी नहीं है? तब व्यवस्था कैसे होती होगी?

मेधावी : यहाँ सब संतुष्ट हैं। न कोई निर्धन है न धनी, न कोई ऊँच और न कोई नीच। यहाँ सब समान हैं। प्यार के बंधन से बंधे हैं। इसलिए सब कार्य सुचारु रूप से स्वतः होते हैं।

अमेरिकी : मैं समझता हूँ, अराजकतावादियों ने जिस समाज की कल्पना की है, वह यही है।

मेधावी : आप जो चाहे समझ सकते हैं। मैंने सही बात कह दी। हम शांति के पुजारी हैं। पुलिस और सेना का यहाँ क्या काम?

रूसी : फिर मशीनें?

मेधावी : मशीनें हमारी दास हैं, हम उनके दास नहीं। हमारी मशीनें ध्वंस नहीं, निर्माण करती हैं।

अमेरिकी : और यदि कोई आक्रमण करे तो?

मेधावी : तो उसका उपचार भी है। (छोटी पेटी खोलकर उससे अंडाकार एक गोला निकालकर दिखाते हुए) इस छोटे से गोले में आपके हजारों हाइड्रोजन बमों की शक्ति निहित है। आपकी पृथ्वी के लिए यही एक गोला बहुत काफी है। हमारे पास सैकड़ों हैं। (वह गोला यथास्थान रख देता है। चारों के मुखों पर भय और विस्मय के चिह्न हैं।)

अमेरिकी : इसमें हजारों हाइड्रोजन बमों की शक्ति है?

मेधावी : हाँ। इसे हम प्रलयंकर बम कहते हैं। आप लोगों को इसे मैंने केवल इसलिए दिखाया है, जिससे आप अपनी शक्ति पर गर्व न करें। आप लोगों की रक्तप्यास बढ़ती जा रही है। भू-लोक की इस हिंसा का प्रभाव और ग्रहों पर भी पड़ रहा है। हमें यह पसंद नहीं क्योंकि इससे हमारे महान उद्देश्य में बाधा पड़ती है।

SCERT TELANGANA

भारतीय : क्या है आपका महान उद्देश्य?

मेधावी : हमारा उद्देश्य है समस्त ग्रहों का संघ स्थापित करना। आपका भू-लोक उसमें सम्मिलित होगा?

अमेरिकी : हम तो सदैव से संघ में विश्वास करते हैं। हम भी शांति के पुजारी हैं। इसी उद्देश्य से एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था.....।

मेधावी : (बीच में ही) वह कैसी है, हम जानते हैं। यदि भू-लोकवासी एकत्र युद्ध से विरत नहीं होते तो फल बहुत बुरा होगा।

रूसी : क्या यह धमकी है?

मेधावी : यही समझ लीजिए। आपने मशीनें बनायीं, पर आज वे आपकी स्वामिनी हैं, आप उनके दास हैं। मानव स्वयं एक मशीन बन गया है, जिसके दिमाग तो हैं, पर हृदय नहीं । शांति की दुहाई देना ढोंग है। सब एक-दूसरे के रक्त के प्यासे हैं।

भारतीय : आप यह नहीं कह सकते। हमारा सदैव यह प्रयत्न रहा है कि विश्व में शांति रहे।

मेधावी : हाँ। आपके प्रयास अवश्य सच्चे और सराहनीय हैं। आप ही विश्व का नेतृत्व करें। आप ही इसे महानाश से बचा सकते हैं। (शेष तीनों से) सुन लीजिए आप लोग। यदि विश्व कल्याण चाहते हैं तो भारत का अनुकरण कीजिए। (तीनों मौन रहते हैं।)

मेधावी : चंद्र और मंगल लोक पहुँचकर उन पर अधिकार करने का दुस्साहस फिर न हो। हमारा प्रलयंकर बम देख ही चुके हो। आप लोगों के लिए आपकी पृथ्वी ही बहुत विशाल है। आँखें खोलकर, स्वार्थ का चश्मा उतारकर देखने भर की देर है। जाइए, यह है आपकी पृथ्वी के लिए हमारा संदेश। इसी में सब का कल्याण है।

सब : (उत्साह से) आप सच कहते हैं।

मेधावी : तब जाकर यह संदेश पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचा दीजिए। जाइए, आपका रॉकेट आपको भू-लोक तक वापस ले जाएगा।
(सब प्रसन्न होकर जाते हैं।)

मारुत : मानव मानेगा हमारा संदेशा?

मेधावी : क्यों नहीं? इसी में उनका हित है। तभी मंगल, मानव और मशीन का समन्वय हो सकेगा।

मारुत : (हँसकर) यह आपने ठीक कहा। मंगल, मानव और मशीन।

(ध्वनियंत्र से घरघराहट की तेज़ आवाज आती है, जो क्रमशः धीमी होती जाती है। मेधावी अपने यंत्र की ओर झुकता है। धीरे-धीरे यवनिका गिरती है।)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ – दस पंक्तियों में लिखिए।

1. मंगल ग्रह की विश्वकल्याण की भावना क्या है?
2. मंगल ग्रह के लोग मानव के संदर्भ में क्या विचार रखते हैं?
3. इस एकांकी में मशीनी सभ्यता पर किया गया व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।
4. 'मंगल-लोक' नाम की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
5. इस एकांकी की भाषा शैली पर अपने विचार बताइए।

SCERT TELANGANA

इकाई - II

4. कविता

- पद्माकर

उन्मुखीकरण

प्रकृति तेरी अजब कृति,
नित नयी तेरी आकृति।
खनिज तत्वों का भंडार,
तुझ पर निर्भर यह संसार।
तुझमें माँ की ममता है,
तुझमें अजब क्षमता है।

- शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

उद्देश्य

- भाषा अनेक विधाओं में व्यक्त की जाती है। उसी तरह काव्य रचना की भी विविध शैलियाँ हैं।
- प्राचीन काल में दोहा, चौपाई, सोरठा, सवैया, रोला, कवित्त, पहेलियाँ आदि के रूप में काव्य सृजन हुआ है। सौंदर्यानुभूति का विकास करना, कविता के भाव और रस ग्रहण करने में छात्रों की सहायता करना और कविता सृजन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देना इस पाठ का उद्देश्य है ।

प्रश्न

1. प्रकृति किसका भंडार है?
2. प्रकृति वर्णन में क्या-क्या बताया गया है?
3. प्रकृति के प्रति हमारे क्या कर्त्तव्य हैं?

विधा विशेष

- कवित्त दृश्य-योजना और शब्द-योजना के लिए अत्यंत प्रसिद्ध है। इसमें स्वच्छ और उदात्त कल्पना है। कवि की कृति आनंद और उल्लास के वर्णन प्रसंगों में ख़ूब रमी है। इसमें "कवित्त छंद" है।

कवि परिचय

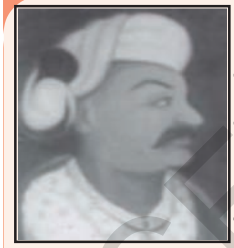

रीतिकाल के कवियों में पद्माकर का नाम मूर्धन्य है। वे बाँदा, उत्तर प्रदेश के निवासी थे। उनके परिवार का वातावरण कवित्वमय था। उनके पिता मोहनलाल भट्ट अच्छे विद्वान और कवि थे। उनके साथ-साथ परिवार के अन्य सदस्य भी कवि थे। अतः उनके वंश का नाम 'कवीश्वर' पड़ गया। उन्हें कवित्व के संस्कार पैतृक रूप में प्राप्त थे । उनकी कवित्व प्रतिभा को देखकर बूँदी के महाराज ने बहुत मान-सम्मान दिया और जयपुर के नरेश ने उन्हें 'कविराज शिरोमणि' की उपाधि दी। उनकी रचनाओं में हिम्मत बहादुर विरुदावली, पद्माभरण, जगद्विनोद, रामरसायन, गंगा लहरी आदि प्रमुख हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

विषय प्रवेश : मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज पृथ्वी पर विकसित है और पृथ्वी प्रकृति पर। हमारे जीवन में इस सृष्टि की अपूर्व देन प्रकृति है। इसकी प्रशस्ति वेदों, उपनिषदों व प्राचीन ग्रंथों में तरह-तरह से की गयी है। इसी भाव को कवियों ने अपनी-अपनी शैलियों में सृजन किया है। इस तरह कवि पद्माकर के इस कवित्त में प्रकृति का सौंदर्यबोध होता है।

औरे भाँति कुँजन में गुंजरत भीर भौंर,
औरे डौर झौरन पैं, बौरन के ह्वै गये।
कहैं पद्माकर सु औरे भाँति गलियानि,
छलिया छबीले छैल और छबि छ्वै गये।
औरै भाँति बिहग-समाज में आवाज होति,
ऐसे रितुराज के न आज दिन द्वै गये।
औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रंग,
औरै तन औरै मन औरै बन ह्वै गये।।

भौंरन को गुंजन बिहार बन कुंजन में
मंजुल मलारन को गावनो लगत है।
कहैं पद्माकर गुमानहूँ तें मानहूँ तैं,
प्रानहूँ तैं प्यारो मनभावनो लगत है।
मोरन को सोर घनघोर चहुँ ओरन,
हिंडोरन को बृंद छवि छावनो लगत है।
नेह सरसावन में मेह बरसावन में,
सावन में झूलिबो सुहावनो लगत है।।

SCERT TELANGANA

प्रश्न

1. भौंरों का दल कहाँ विचर रहा है और क्यों?
2. 'औरे भाँति कुँजन में गुंजरत भीर भौंर' इस पंक्ति का क्या तात्पर्य है?
3. मोर का नृत्य कैसा लगता है?
4. कविता के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।
5. 'सावन में झूलिबो सुहावनो लगत है' इस पंक्ति का क्या तात्पर्य है?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. हमारे जीवन में ऋतुओं के महत्व पर अपने विचार बताइए।
2. अधिकतर कवि ऋतु का वर्णन करते समय भौंरे का उदाहरण अवश्य लेते हैं? क्यों?

(आ) पाठ के आधार पर पंक्तियाँ सही कीजिए।

1. कुँजन में औरे भाँति भौंर गुंजरत भीर
2. छबीले छलिया छैल छबि और गये छ्वै
3. मलारन मंजुल लगत गावनो है को
4. बरसावन मेह में नेह सरसावन में

(इ) पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अमल धवल गिरि के शिखरों पर,
बादल को घिरते देखा है।
छोटे-छोटे मोती जैसे,
उसके शीतल तुहिन कणों को,
मानसरोवर के उन स्वर्णिम,
कमलों पर गिरते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।।

प्रश्न

1. 'उसके शीतल तुहिन कणों को' इस पंक्ति में 'उसके' शब्द का उपयोग किसके लिए हुआ है?
2. 'बादल को घिरते देखा है' इस पंक्ति के द्वारा कवि क्या कहना चाहते हैं?
3. पद्यांश में से तीन विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए।
4. इस कविता के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

(ई) इन पंक्तियों का संदर्भ सहित भाव लिखिए।

1. औरे भाँति कुँजन .... छ्वै गये।
2. कहें पद्माकर .... लगत है।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए।

1. कवि ने वसंत ऋतु का वर्णन किन-किन उदाहरणों से किया है? आप इसी ऋतु का वर्णन किन उदाहरणों के द्वारा करना चाहेंगे?
2. सावन को मनभावन क्यों कहा गया है? उदाहरण सहित सिद्ध कीजिए।

(आ) पद्माकर ऋतु वर्णन के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए।

(इ) ऋतुएँ प्रकृति की शोभा बढ़ाती हैं। अपनी मनपसंद ऋतु का वर्णन करते हुए एक छोटी-सी कविता का सृजन कीजिए और उसे उचित शीर्षक दीजिए।

(ई) सुंदर,मधुर शब्द चयन व अलंकार भाषा की शोभा में चार-चाँद लगाते हैं। कवित्त के आधार पर इसकी पुष्टि कीजिए।

भाषा की बात

(अ) सूचना पढ़िए और उसके आधार पर उत्तर लिखिए।

1. मलारन, मेह, कुँजन (पर्यायवाची शब्द लिखिए।)

SCERT TELANGANA

2. भौंरा, मोर (वचन बदलकर लिखिए।)

3. भौंरा, छवि, कर्म (एक-एक शब्द का लिंग पहचानकर वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर लिखिए।

1. महत्वपूर्ण, मिलनसार (प्रत्यय पहचानकर लिखिए।)
2. मनभावन, गुणभरा (विग्रह कर समास पहचानिए।)
3. भीर, भाँति, भौंरन, भावन (इन्हें शब्द कोश क्रम में लिखिए।)

(इ) 1. **कविता की पंक्तियाँ ध्यान से पढ़िए और अलंकार समझिए।**

औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रंग,
औरै तन औरै मन औरै बन ह्वै गये।।

इन पंक्तियों में 'औरै' "र","न" आदि की बार-बार आवृत्ति हुई है जिससे काव्य सौंदर्य झलकता है। इस तरह काव्य सौंदर्य बढ़ाने वाले चमत्कार को *अलंकार* कहते हैं। इन पंक्तियों में वर्ण, शब्द की पुनरुक्ति हुई है। इस तरह वर्ण या शब्द की आवृत्ति से काव्य सौंदर्य उत्पन्न होता है तो उसे *अनुप्रास अलंकार* कहते हैं।

अनुप्रास शब्द अनु + प्र + आस से बना है। जिसका अर्थ है अनु = बार-बार, प्र= चमत्कार युक्त, आस = रखना अर्थात् जहाँ शब्द चमत्कार युक्त ढंग से बार-बार रखे जाए वह अनुप्रास है।

(ई) अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण लिखिए।

परियोजना कार्य

प्रकृति का वर्णन गीतों व कविताओं में हुआ है। चित्रकारों ने भी अपनी-अपनी चित्रकला में प्रकृति के रमणीय व मनोरम दृश्यों को प्रतिबिंबित किया है। आप इस विषय से संबंधित किसी गीत, कविता या चित्र का संकलन कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

SCERT TELANGANA

5 गोभी का फूल

-केशवचंद वर्मा

उन्मुखीकरण

कद्दूजी की चली बारात,
हुई बताशों की बरसात।।
बैंगन की गाड़ी के ऊपर
बैठे कद्दू राजा,
शलजम और प्याज ने मिलकर
खूब बजाया बाजा।
मेथी, पालक, भिंडी, तोरी
टिंडा, मूली, गाजर,
बने बाराती नाच रहे थे,
आलू, मटर, टमाटर।।

प्रश्न

1. कद्दूजी की बारात में कौन-कौन थे?
2. तरकारियों के महत्व और उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।
3. इसके लिए उचित शीर्षक दीजिए।

उद्देश्य

भाषा की विविध शैलियों में हास्य-व्यंग्य रचनाओं का भी महत्वपूर्ण स्थान है। छात्रों को भाषा की हास्य-व्यंग्य शैली से परिचित कराते हुए उनमें हास्य कहानी लेखन की प्रेरणा देना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

कहानी रचना लेखन की एक कला है। कहानी ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी अंग या किसी घटना को आधार बनाकर उसकी प्रस्तुति की जाती है। प्रस्तुत पाठ हास्य व्यंग्य पर आधारित है। हास्य एक ऐसा सागर है, जहाँ सारे दुखों व कड़ुवे अनुभवों और उलझनों का बोझ हलका किया जा सकता है। इसमें प्रसंगों, घटनाओं व चेष्टाओं के सजीव चित्रण हैं। इस कहानी में हास्य रसात्मक शब्दों व प्रसंगों का सुंदर प्रयोग हैं।

लेखक परिचय

केशवचंद वर्मा का जन्म सन् 23 दिसंबर 1925 को हुआ। उन्होंने हिंदी साहित्य में अधिकतर व्यंग्य रचनाएँ लिखीं। लोमड़ी का माँस, प्यासा और बेपानी के लोग, बृहन्नला का व्यक्तित्व, गधे की बात आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

विषय प्रवेश : *हास्य एक ऐसा सागर है जहाँ सारे दुखों, कड़ुवे अनुभव, सारी उलझनें डुबोकर मन का बोझ हलका किया जा सकता है। यह हास्य भरा पाठ है। गोभी का फूल लानेवाला व्यक्ति किन स्थितियों से गुज़रता है और अंत में कैसे अपने ही शहर से महंगी गोभी ख़रीद कर देता है? इस बीच वह उलझनों और दुखों को कैसे झेलता है? आइए, पढ़ते हैं इस पाठ में...*

आप तो बाबू हनुमानप्रासाद को नहीं जानते होंगे परंतु बाज़ार में सभी कुंजड़े उन्हें अच्छी तरह पहचानते हैं। घर की साग-सब्ज़ी वे ही बाज़ार से रोज़ खरीदकर ले जाते हैं। हरे धनिए की गड्डी पैसे-पैसे या दो पैसे की तीन लेना, शलजम को पत्ते तुड़वाकर तुलवाने का आग्रह करना, आलू छाँट-छाँटकर चढ़वाना, सड़ा कुम्हड़ा दूसरे दिन कटा हुआ वापस कराना और अरबी धुलवाकर, मिट्टी हटाकर लेना आदि अनेक ऐसी बातें हैं जिनके कारण सब्ज़ीमंडी का हर कुंजड़ा उन्हें पहचानता है। सब कुंजड़े उन्हें देखकर 'आइए बाबू जी' का नारा लगाते हैं किंतु मन से कोई नहीं चाहता कि वे उसकी दुकान पर ही उस दिन के बाज़ार का व्रत तोड़ें क्योंकि बहुत देर तक उसे हिसाब लगाना पड़ता है कि सौदे के बाद घाटे में आख़िर कौन रहा।

हनुमानप्रसाद जी को हरी सब्ज़ी का मर्ज़ है। सारे संसार में यदि किसी वस्तु को वे आदि कारण मानते हैं, तो वह है- 'हरी सब्ज़ी'। किसी भी विषय पर आप उनसे बात चलाएँ, अंत में इसी विश्वास के साथ उठेंगे कि हर समस्या का हल हरी सब्ज़ी में छिपा पड़ा है। किस सब्ज़ी में कितने विटामिन होते हैं, कितना लोहा, कितना चूना, कितना कत्था, कितनी लकड़ी, कितना ईंट, कितना गारा वगैरह होता है- इसका जैसा विशद ज्ञान उनको है, वैसा किसी पोस्ट मास्टर को अब तक निकले हुए डाक-टिकटों के बारे में भी न होगा। हनुमानप्रसाद जी को ताजमहल का 'रिप्लिका' भेंट कीजिए, तो वे बुरा मान सकते हैं परंतु इसके बजाए यदि आप उन्हें एक झाबा सोया-मेथी का साग भेंट कर दें, तो आप उनके सुहृद मित्र माने जा सकते हैं। किसी को कहीं बाहर आते-जाते देखते हैं, तो मौसमी तरकारी की फ़रमाइश वे ज़रूर कर देते हैं।

प्रश्न

1. बाबू हनुमानप्रसाद के स्वभाव पर अपने विचार बताइए।
2. 'आदि कारण' से क्या अभिप्राय है?
3. बाबू हनुमानप्रसाद के सब्ज़ी ज्ञान पर टिप्पणी कीजिए।

शामत के मारे मुँह से उस दिन निकल पड़ा कि मैं लखनऊ जा रहा हूँ। छूटते ही बाबू हनुमानप्रसाद बोले, ''अरे भई वर्मा साहब! आप लखनऊ जा रहे हैं तो हमारे लिए चार फूलगोभी लेते आइएगा। अभी यहाँ गोभी का अच्छा फूल मिलता नहीं। सुना है, लखनऊ में दो-दो आने में अच्छे फूल मिल जाते हैं।''

मैंने 'हाँ' या 'ना' कहा हो, इसके पहले ही उन्होंने अठन्नी मेरे हाथ में रख दी और मुझे अकेले में ले जाकर बोले, ''देखिए वर्मा जी, पता नहीं आपने कभी साग-सब्ज़ी खरीदी है कि नहीं। फूल ज़रा गठा

जब भी संभव हो, सदैव हँसो। यह एक सस्ती दवा है। - बाइरन

हुआ लीजिएगा। बिख़रा हुआ फूल जल्दी ख़राब हो जाता है और देखिए, अकसर उस पर झाँई पड़ जाती है, यह न रहे। बहुत-से गोभीवाले पत्ते निकाल लेते हैं, वे पत्ते न निकालने पाएँ। पूरी गोभी लीजिएगा। जो कैलोरी होती है पत्तों में, वह फूल में तो होती ही नहीं। पत्तों के डंठल का अचार बहुत अच्छा होता है। उसकी सब्ज़ी तो आपने खायी ही न होगी। लौटकर आइए, तो खिलाऊँ। ज़रा-सी मद्धिम आँच पर पावभर पानी में उबालकर नमक-मिर्च डालकर खाइए तो देखिए, लाल-लाल कल्ले निकल आएँगे।''

वे हर किसी सब्ज़ी के बारे में बहुत-कुछ कह सकते थे। मैं इसलिए चुप था। वे साँस लेकर फिर बोले, ''अच्छा सुनिए, फूल में कभी-कभी छोटे-छोटे कीड़े लग जाते हैं- उसे ज़रा झड़वाकर लीजिएगा। पानी में भीगा हुआ फूल न लीजिएगा। बड़ी जल्दी ख़राब हो जाता है। अच्छे गोभी के फूल में, कच्चे हो तो भी, विटामिन डी, ए, बी काफ़ी रहता है।''

मैंने उन्हें याद दिलाया कि यदि मैं गोभी के फूल का पूरा महात्म्य सुनकर गया तो गाड़ी छूटेगी नौकरी छूटेगी और गोभी का फूल भी छूट जाएगा। सब पर संकट की बात सुनकर हनुमानप्रसाद ने मुझे छोड़ दिया।

हज़रतगंज, सिनेमा, नुमाइश, कॉफ़ी हाउस - सब कुछ छोड़कर मैं लखनऊ की तरकारी मंडी में घुसा। तरकारीवाले तीन आने के नीचे उतरने को तैयार न थे परंतु मुझे दो-दो आने वाले ही फूल चाहिए थे - पूरे पत्तेवाले, जिनके डंठल का अचार बन सकें, जिनको खाने से लाल-लाल कल्ले निकल आएँ। लौटने का वक्त हो आया। मंडीवाले ने दो आने पर उतरने के लिए हामी न भरी। हारकर तीन-तीन आने के भाव से गोभी के फूल खरीदे। चार फूल उनके वास्ते लिए और सोचा, अगर ये इतने नायाब हैं, तो दो-चार अपने लिए भी ले लूँ।

प्लेटफ़ार्म पर हाथ में एक अदद खूबसूरत अटैची के साथ एक झाबा गोभी के फूल लेकर सफ़र करने वाला मैं अपने ढंग का अकेला ही मुसाफ़िर दिखाई पड़ रहा था। टिकट चेकर दो बार पास से गुज़रा। मुझसे नहीं, पर कुली से पूछ गया कि सामान बुक करवा लिया है या नहीं। दो-एक परिचित चेहरे दिखाई पड़े। बोले, ''कहिए दावत कब है?'' संजीदगी से जवाब देता हुआ मैं प्लेटफ़ॉर्म पर बढ़ती हुई भीड़ और अपने गोभी के झाबे को देख रहा था। कुली चढ़ाने का आश्वासन दे रहा था। पर एक रुपया इनाम चाहता था। मैं चाहता था कि गाड़ी आ जाने पर 'हाँ' या 'ना' करूँ।

गाड़ी आई। ठसाठस भरी हुई मेल। मारामारी का दृश्य। गाड़ीवालों और बेगाड़ीवालों का वर्ग संघर्ष। अंततः दृश्य में कुछ शांति आई। धीरे-धीरे लोग पानी लेने के लिए डिब्बे से बाहर निकले। मेरे कुली ने 'अब न चूक चौहान' की तरह मुझे ललकारा। मैं भीतर घुसने लगा। भीतरवाले मुझे दूसरे डिब्बे में खाली जगह के बारे में अतिरिक्त जानकारी के साथ रेलवे के सारे क़ानून एक साथ समझाने को तुल गए पर 'हया' नामक वस्तु मैं प्लेटफ़ार्म पर छोड़कर ही डिब्बे के भीतर घुसा था। भीतर घुसते ही गोभी के फूलों की चिंता हुई। झाबा पूरा भीतर नहीं आ सका था। गोभी के फूल धीरे-धीरे करके भीतर आ रहे थे। आख़िरी किस्त में दो फूल प्लेटफ़ार्म से खिसककर डिब्बे के नीचे रेल की पटरी पर पहुँच गए। झाबा भीतर लेने के बाद मैं कुली पर बिगड़ने लगा। कुली इनाम माँगने पर अड़ा हुआ था और मैं गिरी हुई गोभी के दाम लेने पर। तू-तू मैं-मैं बढ़ने लगी। दोनों अपनी-अपनी भाषा में एक-दूसरे को ऊँच-नीच कह रहे थे। अंत में समस्या का शांतिपूर्ण हल निकला -

अर्थात् मैंने चार की जगह छह आने में छुट्टी पाई।

दूसरे के सामान को लोष्ठवत् देखने के लिए अपनी परंपरा में बहुत दिनों से आग्रह है। गाड़ी के भीतर, जब तक उठा ले जाने का मौक़ा न हो, हर आदमी दूसरे का सामान ठीक इसी तरह देखता है। एक स्वर कहता था। ''साहब! उधर ले जाएँ न।'' दूसरा बोला, ''बैंच के नीचे कर दीजिए, बैंच के।'' तीसरा ऊपर ले जाने का सुझाव देता। अगर जगह होती तो डिब्बे के सभी लोगों का सुझाव एक के बाद एक पूरा कर देता। सुझाव बहुतेरे आए पर कोई भी अपनी जगह से तिलभर भी हिलने के लिए तैयार न था इसलिए निःशस्त्रीकरण की तरह गोभी के फूलों की भी समस्या ज्यों-की-त्यों बनी रही। गोभी के फूलों का झाबा वहीं नीचे पड़ा रहा। स्टेशनों पर गाड़ी रुकती रही और लोग उसमें सबके मना करने पर भी उसी तरह घुसते रहे, जिस तरह मैं घुसा था। मेरा अकेला स्वर डिब्बा खुलते ही मुझे सुनाई पड़ता था, ''बचाइएगा, देखिएगा! हैं... हैं..., इधर नहीं! इधर गोभी है, गोभी! अरे साहब! यह बंडल उधर डालिए! इधर गोभी है! अरे ट्रंक उधर ले जाओ जी...!''

पर जब आदमी 'जनता' हो जाता है, तो कौन किसकी सुनता है। सो मेरी भी किसी ने न सुनी।

4. 'अब न चूक चौहान' वाले प्रसंग के बारे में बताइए।
5. गोभी का झाबा कैसे बिखर गया था?
6. इलाहाबाद स्टेशन जाने के बाद लेखक ने क्या किया?

जब तक इलाहाबाद स्टेशन न आ गया, मैं अपने गोभी के झाबे को जी भर देख भी नहीं पाया। गोभी के गठे हुए पत्तेदार फूल जनता की इतनी लातें खा चुके थे कि हारे हुए उम्मीदवार की तरह उन्हें पहचानना कठिन हो रहा था।

इतने हमलों के बाद भी कितने विटामिन उनमें शेष बचे हैं, यह मैं उन्हें बाबू हनुमानप्रसाद तक पहुँचाकर मालूम करना चाहता था पर हिम्मत नहीं पड़ी। यहीं के बाज़ार से पाँच-पाँच आने के फूल खरीदकर, 'लखनऊ के' कहकर उन्हें दे आया हूँ और उसके बदले में लखनऊ में मिलने वाली सस्ती तरकारी पर उनका एक सारगर्भित भाषण सुनकर अभी लौटा हूँ।

– *केशव चंद वर्मा*

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. हद से ज़्यादा सावधानी बरतना कहाँ तक उचित है? अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. बाबू हनुमानप्रसाद जैसे किसी व्यक्ति का सामना हुआ तो आप क्या करेंगे?

(आ) पाठ पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. सब्ज़ी मंडी में कोई भी बाबू हनुमानप्रसाद को अपनी दुकान पर बुलाना नहीं चाहता था। क्यों?
2. रेलगाड़ी में लेखक को किस प्रकार के अनुभवों का सामना करना पड़ा?

(इ) पाठ के आधार पर निम्नलिखित पंक्तियों का भाव लिखिए।

1. ''पर आदमी जब जनता हो जाता है।''
2. ''कोई नहीं चाहता कि वे उसकी दुकान पर ही उस दिन के बाज़ार का व्रत तोड़ें।''

SCERT TELANGANA

(ई) **1. गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

सब्ज़ीमंडी में जाते ही अलग-अलग फेरीवालों की आवाज़ सुनाई देती है जैसे प्याज़ वाला कहता है - ''प्याज़ ले लो भैया प्याज़।'' हरी सब्ज़ी वाली कहती है - हरी-हरी ताज़ी-ताज़ी सब्ज़ियाँ ले लो, कोई कहता पाँच रुपया पाव मिर्ची ले लो भैया। कोई कहता है मीठे-फल, रसीले फल भैया ले लो उधर किधर जाते हो इधर से ले लो। इस प्रकार मंडी में घुसते ही कई लोग हमें आकर्षित करने का प्रयास करते हैं।

1. गद्यांश के अतिरिक्त आपके द्वारा सुनी हुई फेरीवालों की आवाज़ें लिखिए।
2. गद्यांश में कुछ पुनरुक्ति और विशेषण शब्द आये हैं, ढूँढ़कर लिखिए।
3. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

2. समाचार पढ़िए और उसके मुख्य बिंदु पहचानकर लिखिए।

कर्नाटक में 50 ई-मंडी बनाएगा एन स्पॉट

■ **APMC मार्केट के आधुनिकीकरण से किसानों को फायदा**

विष्णु भारद्वाज

गुलबर्गा. कर्नाटक देश का पहला राज्य है, जहां मंडियां 'ई-मंडी' में तब्दील होने जा रही हैं. भारत के दूसरे बड़े कमोडिटी एक्सचेंज एनसीडीईएक्स द्वारा प्रमोट ऑनलाइन बाजार एनसीडीईएक्स स्पॉट एक्सचेंज लि. (एन स्पॉट) ने कर्नाटक की 50 कृषि मंडियों (एपीएमसी मार्केट) को आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक मंडियों में तब्दील करने की महत्वाकांक्षी योजना बनाई है. कर्नाटक के बाद एन स्पॉट की देश के अन्य राज्यों में भी ई-मंडियां बनाने की योजना है.

एन स्पॉट के कार्यकारी उपाध्यक्ष राजेश सिन्हा ने बताया कि सर्वप्रथम हमने गुलबर्गा की मंडी को ई-मंडी में तब्दील किया है. यह प्रोजेक्ट पिछले वर्ष दिसंबर में शुरू हुआ था. इसकी सफलता के बाद कर्नाटक सरकार ने राज्य की 50 बड़ी मंडियों को ई-मंडी बनाने का कार्य एन स्पॉट को दिया है. अभी तक 13 मंडियों में यह प्रोजेक्ट लागू हो चुका है. मौजूदा वित्त वर्ष के अंत तक 50 मंडियों को ई-मंडी में तब्दील किए जाने की उम्मीद है. उसके बाद राज्य की अन्य मंडियों को भी इसमें शामिल किया जाएगा.

सिन्हा ने कहा कि ई-मंडी बनने से थोक कृषि कारोबार में पारदर्शिता आती है तथा यह किसानों और सरकार के लिए विशेष रूप से फायदेमंद है. ऑनलाइन कारोबार से जहां किसानों को पारदर्शी रूप से उनकी उपज का बेहतर मूल्य मिलता है, वहीं सरकार का टैक्स राजस्व भी बढ़ता है. एन स्पॉट राज्य की 13 मंडियों में कृषि जिंसों, ई-नीलामी और ग्रेडिंग सुविधा प्रबंधन का कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर चुकी है.

गुलबर्गा, जो कि मुख्य रूप से तूर की मंडी है, इसके अलावा चना, मूंग, सनफ्लावर, बाजरा, ज्वार, तिल, गेहूं, उड़द की भी आवक होती है.

गुलबर्गा एपीएमसी के अतिरिक्त निदेशक व सचिव एच. के. चंद्रमोहन ने कहा कि शुरुआत में कारोबार घटने के डर से ई-मंडी का व्यापारियों व आढ़तियों ने विरोध किया. लेकिन अब वे तेजी से अपना आधुनिकीकरण कर रहे हैं. पारदर्शी मूल्य व लेन-देन और आसान निपटान प्रक्रिया से यहां 700 व्यापारी और 273 आढ़तिए ई-मंडी से जुड़ चुके हैं. बेहतर मूल्य मिलने से कर्नाटक के ही नहीं बल्कि महाराष्ट्र के लातूर, दुधानी और सोलापुर के किसान भी आकर्षित हो रहे हैं और ई-मंडी से जुड़ रहे हैं. उन्होंने बताया कि मंडी के आधुनिकीकरण के बाद पिछले वर्ष एपीएमसी का राजस्व 15 फीसदी बढ़कर 10 करोड़ रुपए रहा. इस वर्ष भी 20 फीसदी वृद्धि की उम्मीद है.

दूसरे राज्य भी दिखा रहे हैं रुचि

कर्नाटक में ई-मंडी की सफलता से आकर्षित होकर दूसरे राज्य भी इसके लिए रुचि दिखाने लगे हैं. सिन्हा ने बताया कि महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश के सरकारी अधिकारी गुलबर्गा की ई-मंडी का दौरा कर चुके हैं. एन स्पॉट विभिन्न राज्य सरकारों से मंडियों के आधुनिकीकरण के लिए बातचीत कर रही है. सभी राज्यों में ई-मंडी बनने से किसानों को और फायदा मिलेगा और कृषि व्यापार को नई दिशा मिलेगी.

क्या है ई-मंडी की प्रक्रिया?

किसान अपना विवरण मंडी गेट पर पंजीकृत कराते है. उन्हें गेट पर्ची के साथ यूनिक लॉट नंबर दिया जाता है. गेट पर्ची में किसान का नाम, उसकी उपज की मात्रा का विवरण और गांव का नाम रहता है. कृषि उपज कमीशन एजेंट द्वारा खरीदार ट्रेडर या मिलर को दिखाई जाती है. लाइसेंसधारी व्यापारी, जो उपज खरीदने में रुचि रखता है, उसे कोड नंबर और पासवर्ड दिया जाता है. इसी कोड के आधार पर मिलर या ट्रेडर को उपज खरीदने के लिए कंप्यूटर के जरिए अपना खरीद मूल्य कोट करना होता है. एक बार मूल्य कोट करने के बाद वह दाम कम नहीं कर सकता. हालांकि यदि वह अपना खरीद मूल्य बढ़ाना चाहे तो उसे बढ़ाने की अनुमति होती है यह नियम किसानों के हित में उन्हें बेहतर मूल्य दिलाने के उद्देश्य से बनाया गया है. सबसे ज्यादा मूल्य कोट करने वाले व्यापारी को माल की बिक्री की जाती है. किसान को इसकी सूचना उसके मोबाइल पर एसएमएस तथा मंडी में स्थापित जन सूचना सिस्टम द्वारा दी जाती है. किसानों को उसी दिन नकद भुगतान होता है.

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) **इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए।**

1. लेखक के द्वारा लाये गये गोभी के फूल की तुलना हारे हुए उम्मीदवार से क्यों की गयी होगी?
2. लेखक की जगह आप होते तो अपने मित्र की इच्छा कैसे पूरी करते?

(आ) **नीचे दिये गये प्रश्न का उत्तर दस-बारह पंक्तियों में लिखिए।**

''लखनऊ में मिलने वाली सस्ती तरकारी पर उनका एक सारगर्भित भाषण सुनकर अभी लौटा हूँ।'' इस पंक्ति से लेखक का आशय स्पष्ट कीजिए।

SCERT TELANGANA

(इ) "गोभी के फूल" में लेखक और कुली के बीच हुई बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

(ई) ताज़ा साग-सब्ज़ियों से होने वाले लाभ बताइए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर दीजिए।

1. उम्मीदवार, मुसाफिर (पर्यायवाची शब्द लिखिए।)
2. पाँच-पाँच, लाल-लाल, धीरे-धीरे (पुनरुक्ति शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. तू-तू मैं-मैं करना, हामी भरना (मुहावरों का वाक्य प्रयोग कर अर्थ बताइए।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर दीजिए।

1. 'अब न चूक चौहान' (कहावत का वाक्य प्रयोग कर अर्थ बताइए।)
2. हरी-सब्ज़ी, नमक-मिर्च, अठन्नी, निःशस्त्रीकरण (समास पहचानिए।)

(इ) दिये गये उदाहरण के अनुसार पाठ या अन्य किसी स्रोत से इसी तरह के वाक्य ढूँढ़कर लिखिए और अंतर समझिए।

जैसे - राम पुस्तक पढ़ता है। (कर्तृवाच्य)
राम से पुस्तक पढ़ी जाती है। (कर्मवाच्य)
राम से दौड़ा नहीं जाता। (भाववाच्य)

(ई) रेखांकित शब्दों के स्थान पर नीचे दिये गये शब्दों का प्रयोग कर वाक्य फिर से लिखिए।

रेल के डिब्बे में एक <u>आदमी</u> आया। सब <u>आदमी</u> डिब्बे में पहुँच चुके थे। <u>आदमियों</u> ने अपना सामान रख दिया था।

1. औरत 2. कुंजड़ा 3. बालिका 4. लड़का 5. छात्र

परियोजना कार्य

स्वास्थ्य के लिए हरी सब्ज़ी की अत्यंत आवश्यकता है। इससे प्राप्त होने वाले पोषक तत्वों की जानकारी इकट्ठा कर एक तालिका बनाइए। इसके साथ-साथ किसी एक सब्ज़ी की खेती करने की पद्धति की जानकारी किसी किसान से भेंट कर या अन्य किसी स्रोत से प्राप्त कीजिए। इसका प्रदर्शन कक्षा में कीजिए।

SCERT TELANGANA

6 राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

- तुलसीदास

उन्मुखीकरण

'संस्कृति' मानव जाति एवं मानवता का कल्याण चाहती है। जिससे मनुष्य का चरित्र उभरता है। संस्कृति का एक अंग 'साहित्य' भी है। जिसमें मानवीय संस्कृति, आदर्श व सामाजिक घटनाएँ प्रतिबिंबित होती हैं ।

प्रश्न

1. संस्कृति से क्या आशय है?
2. चरित्र निर्माण में संस्कृति की क्या भूमिका है?

उद्देश्य

विद्यार्थियों में काव्य के प्रति रूचि उत्पन्न करना, अन्य कवियों की रचनाओं से तुलना करने की क्षमता का विकास करना, अलंकारों का परिचय कराना, तथा उसके आधार पर काव्य सृजन की प्रेरणा देना इस पाठ का उद्देश्य है।

विधा विशेष

- यह चरित्र प्रधान कविता है। इसकी शैली 'चौपाई' है।
- तुलसी से पहले सूफ़ी कवियों ने भी अवधी भाषा में दोहा,चौपाई छंद का प्रयोग किया था, जिसमें मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' काव्य उल्लेखनीय है।

कवि परिचय

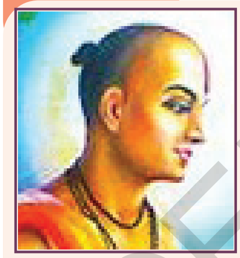

तुलसीदास जी का जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा ज़िले के राजापुर नामक गाँव में सन् 1532 में हुआ था। रामभक्ति परंपरा में तुलसी अतुलनीय हैं। 'रामचरितमानस' काव्य कवि की अनन्य रामभक्ति और उनके सृजनात्मक कौशल का मनोरम उदाहरण है। रामचरितमानस के अलावा कवितावली, गीतावली, दोहावली, विनय पत्रिका, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, हनुमान बाहुक आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं पर उनका समान अधिकार था। सन् 1623 में काशी में उनका देहावसान हुआ।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

विषय प्रवेश : प्रस्तुत अंश 'रामचरितमानस' के बालकांड से लिया गया है। इस प्रसंग की विशेषता है कि इसमें लक्ष्मण की वीर रस से पूर्ण व्यंग्योक्तियों के साथ-साथ व्यंजना शैली की भी सरस अभिव्यक्ति हुई है।

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा।।
सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने।।
बहु धनुही तोरी लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।।
येहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू।।

प्रश्न

1. शिवधनुष के तोड़े जाने का कारण क्या है?
2. परशुराम क्यों क्रोधित हुए? आपके विचार में क्या यह उचित है? क्यों?

रे नृपबालक कालबस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारिधनु बिदित सकल संसार।।
लखन कहा हसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना।।
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें।।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।।
बोले चितै परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।।
बालकु बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही।।
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।।
सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।।

3. क्रोध के कारण कैसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं?
4. इस पाठ्यांश में कौनसा पात्र आपको अच्छा लगा और क्यों?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

1. संकलित अंश में राम का व्यवहार विनयपूर्वक और संयत है, लक्ष्मण लगातार व्यंग्य बाणों का उपयोग करते हैं और परशुराम का व्यवहार क्रोध से भरा हुआ है। इस परिस्थिति में आपका व्यवहार कैसा होता?
2. मनुष्य को परिस्थितियों के अनुसार अपने स्वभाव में परिवर्तन कर लेना चाहिए या नहीं? कारण बताइए।

क्रोध सागर की तरह बहरा और आग की तरह उतावला है। - शेक्सपियर

SCERT TELANGANA

(आ) भाव स्पष्ट कीजिए।

1. नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
   आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाई बोले मुनि कोही।।
2. लखन कहा हसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना।
   का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें।।
3. भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।
   सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।।

(इ) निम्नलिखित भाव को व्यक्त करने वाली कविता की पंक्तियाँ ढूँढ़कर लिखिए।

1. धनुष को तोड़ने वाला कोई तुम्हारा दास होगा?
2. लक्ष्मण क्या कहकर धनुष के टूटने पर राम को दोष रहित बता रहे हैं?

(ई) 1. पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

राम मैं पूजा कहाँ चढ़ाऊँ। फल अरु मूल अनूप न पाऊँ।।
धनहर दूध जो बछरू जुठारी। पुहुप भँवर जल मीन बीमारी।।
मलयगिरि भेदियो भुअंगा। विष अमृत दोऊ एकै संगा।।
मन ही पूजा मन ही धूप। मन ही सेऊँ सहज सरूप।।
पूजा अरचा न जानूँ तेरी। कह रैदास कवन गति मेरी।।

1. रैदास की ईश्वर के प्रति भक्ति कैसी है?
2. इस पद का केंद्रीय भाव क्या है?
3. पूजा के बारे में कवि क्या कहते हैं?
4. "मलयगिरि भेदियो भुअंगा।विष अमृत दोऊ एकै संगा।।"- इस पंक्ति का भाव बताइए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए।

1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के कौन-कौन से तर्क दिये?
2. क्रोध का केवल नकारात्मक ही नहीं सकारात्मक पक्ष भी होता है। पक्ष-विपक्ष में अपने विचार प्रकट कीजिए।

(आ) पाठ के आधार पर राम, लक्ष्मण और परशुराम के संवादों की तुलना कर अंतर स्पष्ट कीजिए।

(इ) इस कविता को संवाद रूप में लिखिए।

(ई) इस पाठ में विनय, संयम, साहस आदि गुणों का सुंदर वर्णन किया गया है। जीवन में इन गुणों के महत्व पर प्रकाश डालिए।

भाषा की बात

(अ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर लिखिए।

1. नयन, रिपु (पर्याय शब्द लिखिए।)

2. विनय, संयम (एक-एक शब्द के विलोम शब्द से वाक्य प्रयोग कीजिए।)

3. दास, शैली (एक-एक शब्द का वचन बदल कर वाक्य प्रयोग कीजिए।)

4. महीप कुमार, नृपबालक (इन शब्दों में किस विभक्ति का लोप हुआ है पहचानिए।)

(आ) सूचना के अनुसार उत्तर लिखिए।

1. मोही-कोही, तोरा-मोरा (पाठ में आये इसी तरह के तुकबंदी शब्द पहचानकर लिखिए।)

2. शिवधनुष, सहस्त्रबाहु, महीपकुमार (समास का विग्रह कर लिखिए।)

(इ) दोहा - छंद

दोहा मात्रिक छंद है। इसके पहले और तीसरे चरण में 13 मात्राएँ होती हैं। दूसरे और चौथे चरण में 11 मात्राएँ होती हैं।

जैसे -

S I I S I I I I I I I S S I S I S I
मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।

I I S I I I I S I S I I I I I I I I S I
मुकताफल मुकता चुगें, अब उड़ि अनत न जाहिं।।

(ई) चौपाई छंद समझिए। एक उदाहरण लिखिए।

परियोजना कार्य

तुलसीदास राम के अनन्य भक्त हैं। राम भक्त कवि होते हुए भी उन्होंने कई नीति दोहों का सृजन किया है । उनके नीति दोहों में से अपने मनपसंद पाँच नीति दोहों का संग्रह कर भाव और 'दोहा छंद' की जानकारी सहित कक्षा में प्रदर्शित कीजिए ।

SCERT TELANGANA

उपवाचक

☆ बड़े भाई साहब

–प्रेमचंद

मेरे भाई साहब मुझसे पाँच साल बड़े, लेकिन केवल तीन दरजे आगे। उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था, जब मैंने शुरु किया लेकिन तालीम जैसे महत्त्व के मामले में वह जल्दबाज़ी से काम लेना पसंद न करते थे। इस भवन की बुनियाद खूब मज़बूत डालना चाहते थे, जिस पर आलीशान महल बन सके। एक साल का काम दो साल में करते थे। कभी-कभी तीन साल भी लग जाते थे। बुनियाद ही पुख्ता न हो, तो मकान कैसे पायेदार बने।

मैं छोटा था, वह बड़े थे। मेरी उम्र नौ साल की थी, वह चौदह साल के थे। उन्हें मेरी तम्बीह और निगरानी का पूरा और जन्मसिद्ध अधिकार था और मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को क़ानून समझूँ।

वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे। हरदम किताब खोले बैठे रहते और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर, किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तसवीरें बनाया करते थे। कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस—बीस बार लिख डालते। कभी एक शेर को बार-बार सुंदर अक्षरों में नकल करते। कभी ऐसी शब्द-रचना करते, जिसमें न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य। मसलन एक बार उनकी कॉपी पर मैंने यह इबारत देखी-स्पेशल, अमीना, भाइयों-भाइयों, दरअसल, भाई-भाई। राधेश्याम, श्रीयुत राधेश्याम, एक घंटे तक-इसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था। मैंने बहुत चेष्टा की कि इस पहेली का कोई अर्थ निकालूँ, लेकिन असफल रहा। और उनसे पूछने का साहस न हुआ। वह नौवीं जमात में थे, मैं पाँचवीं में। उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटा मुँह बड़ी बात थी।

मेरा जी पढ़ने में बिलकुल न लगता था। एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ था। मौक़ा पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता और कभी कंकरियाँ उछालता, कभी कागज़ की तितलियाँ उड़ाता और कहीं कोई साथी मिल गया, तो पूछना ही क्या। कभी चारदीवारी पर चढ़कर नीचे कूद रहे हैं। कभी फाटक पर सवार, उसे आगे-पीछे चलाते हुए मोटरकार का आनंद उठा रहे हैं, लेकिन कमरे में आते ही भाई साहब का वह रूद्र-रूप देखकर प्राण सूख जाते। उनका पहला सवाल यह होता – 'कहाँ थे?' हमेशा यही सवाल, इसी ध्वनि में हमेशा पूछा जाता था और इसका जवाब मेरे पास केवल मौन था। न जाने मेरे मुँह से यह बात क्यों न निकलती कि ज़रा बाहर खेल रहा था। मेरा मौन कह देता था कि मुझे अपना अपराध स्वीकार है और भाई साहब के लिए उसके सिवा और कोई इलाज़ न था कि स्नेह और रोष से मिले हुए शब्दों में मेरा सत्कार करें।

''इस तरह अंग्रेज़ी पढ़ोगे, तो ज़िंदगी-भर पढ़ते रहोगे और एक हर्फ़ न आयेगा। अंग्रेज़ी पढ़ना कोई हँसी-खेल नहीं है कि जो चाहे, पढ़ ले, नहीं ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा सभी अंग्रेज़ी के विद्वान हो जाते। यहाँ रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं और खून जलाना पड़ता है, तब कहीं यह विद्या आती है। और आती क्या है, हाँ कहने को आ जाती है। बड़े-बड़े विद्वान भी शुद्ध अंग्रेज़ी नहीं

SCERT TELANGANA

लिख सकते, बोलना तो दूर रहा। और मैं कहता हूँ, तुम कितने घोंघा हो कि मुझे देखकर भी सबक नहीं लेते। मैं कितनी मेहनत करता हूँ, यह तुम अपनी आँखों से देखते हो, अगर नहीं देखते, तो यह तुम्हारी आँखों का कसूर है, तुम्हारी बुद्धि का कसूर है। इतने मेले-तमाशे होते हैं, मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है? रोज़ ही क्रिकेट और हॉकी मैच होते हैं। मैं पास नहीं फटकता। हमेशा पढ़ता रहता हूँ। उस पर भी एक-एक दरजे में दो-दो, तीन-तीन साल पड़ा रहता हूँ, फिर भी तुम कैसे आशा करते हो कि तुम यों खेल-कूद में वक्त गँवाकर पास हो जाओगे? मुझे तो दो ही तीन साल लगते हैं, तुम उम्र-भर इसी दरजे में पड़े सड़ते रहोगे? अगर तुम्हें इस तरह उम्र गँवानी है, तो बेहतर है, घर चले जाओ और मज़े से गुल्ली-डंडा खेलो। दादा की गाढ़ी कमाई के रुपये क्यों बरबाद करते हो?''

मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता। जवाब ही क्या था। अपराध तो मैंने किया, लताड़ कौन सहे? भाई साहब उपदेश की कला में निपुण थे। ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे-ऐसे सूक्ति-बाण चलाते कि मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते और हिम्मत टूट जाती। इस तरह जान तोड़कर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में न पाता था और उस निराशा में ज़रा देर के लिए मैं सोचने लगता- 'क्यों न घर चला जाऊँ। जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी ज़िंदगी ख़राब करूँ।' मुझे अपना मूर्ख रहना मंजूर था, लेकिन उतनी मेहनत से मुझे तो चक्कर आ जाता था, लेकिन घंटे-दो घंटे के बाद निराशा के बादल फट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढ़ूँगा। चटपट एक टाइम-टेबिल बना डालता। बिना पहले से नक्शा बनाए कोई स्कीम तैयार किए काम कैसे शुरू करूँ। टाइम-टेबिल में खेलकूद की मद बिलकुल उड़ जाती। प्रातःकाल छः बजे उठना, मुँह-हाथ धो, नाश्ता कर, पढ़ने बैठ जाना। छः से आठ तक अंग्रेज़ी, आठ से नौ तक हिसाब, नौ से साढ़े नौ तक इतिहास, फिर भोजन और स्कूल। साढ़े तीन बजे स्कूल से वापिस होकर आधा घंटा आराम, चार से पाँच तक भूगोल, पाँच से छः तक ग्रामर, आधा घंटा होस्टल के सामने ही टहलना, साढ़े छः से सात तक अंग्रेज़ी कंपोज़ीशन, फिर भोजन करके आठ से नौ तक अनुवाद, नौ से दस तक हिंदी, दस से ग्यारह तक विविध-विषय, फिर विश्राम।

मगर टाइम-टेबिल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात। पहले ही दिन उसकी अवहेलना शुरू हो जाती। मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के हलके-हलके झोंके, फुटबाल की वह उछल-कूद, कबड्डी के वह दाँव-घात, वॉलीबाल की वह तेज़ी और फुरती, मुझे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता। वह जानलेवा टाइम-टेबिल, वह आँखफोड़ पुस्तकें, किसी की याद न रहती और भाई साहब को नसीहत और फ़जीहत का अवसर मिल जाता। मैं उनके साये से भागता, उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा करता, कमरे में इस तरह दबे पाँव आता कि उन्हें खबर न हो। उनकी नज़र मेरी ओर उठी और मेरे प्राण निकले। हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती। फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

सालाना इम्तिहान हुआ। भाई साहब फ़ेल हो गए, मैं पास हो गया और दरजे में प्रथम आया।

SCERT TELANGANA

मेरे और उनके बीच में केवल दो साल का अंतर रह गया। जी में आया, भाई साहब को आड़े हाथों लूँ – 'आपकी वह घोर तपस्या कहाँ गई? मुझे देखिए, मज़े से खेलता भी रहा और दरज़े में अव्वल भी हूँ।' लेकिन वह इतने दुखी और उदास थे कि मुझे उनसे दिली हमदर्दी हुई और उनके घाव पर नमक छिड़कने का विचार ही लज्जास्पद जान पड़ा। हाँ, अब मुझे अपने ऊपर कुछ अभिमान हुआ और आत्मसम्मान भी बढ़ा। भाई साहब का वह रौब मुझ पर न रहा। आज़ादी से खेलकूद में शरीक होने लगा। दिल मज़बूत था। अगर उन्होंने फिर मेरी फ़जीहत की, तो साफ़ कह दूँगा – 'आपने अपना खून जलाकर कौन-सा तीर मार लिया। मैं तो खेलते-कूदते दरजे में अव्वल आ गया।' ज़बान से यह हेकड़ी जताने का साहस न होने पर भी मेरे रंग-ढंग से साफ़ ज़ाहिर होता था कि भाई साहब का वह आतंक मुझ पर नहीं था। भाई साहब ने इसे भाँप लिया-उनकी सहज बुद्धि बड़ी तीव्र थी और एक दिन जब मैं भोर का सारा समय गुल्ली-डंडे की भेंट करके ठीक भोजन के समय लौटा, तो भाई साहब ने मानो तलवार खींच ली और मुझ पर टूट पड़े-देखता हूँ, इस साल पास हो गए और दरज़े में अव्वल आ गए, तो तुम्हें दिमाग़ हो गया है, मगर भाईजान, घमंड तो बड़े-बड़े का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है? इतिहास में रावण का हाल तो पढ़ा ही होगा। उसके चरित्र से तुमने कौन-सा उपदेश लिया? या यों ही पढ़ गये? महज़ इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ है बुद्धि का विकास। जो कुछ पढ़ो, उसका अभिप्राय समझो। रावण भूमंडल का स्वामी था। ऐसे राजाओं को चक्रवर्ती कहते हैं। आजकल अंग्रेज़ों के राज्य का विस्तार बहुत बढ़ा हुआ है, पर इन्हें चक्रवर्ती नहीं कह सकते। संसार में अनेक राष्ट्र अंग्रेजों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते, बिलकुल स्वाधीन हैं। रावण चक्रवर्ती राजा था, संसार के सभी महीप उसे कर देते थे। बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थे। आग और पानी के देवता भी उसके दास थे, मगर उसका अंत क्या हुआ? घमंड ने उसका नाम-निशान तक मिटा दिया, कोई उसे एक चुल्लू पानी देने वाला भी न बचा। आदमी और जो कुकर्म चाहे करे, पर अभिमान न करे, इतराये नहीं। अभिमान किया और दिन-दुनिया दोनों से गया।

शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा। उसे यह अभिमान हुआ था कि ईश्वर का उससे बढ़कर सच्चा भक्त कोई है ही नहीं। अंत में यह हुआ कि स्वर्ग से नरक में ढकेल दिया गया। शाहेरूम ने भी एक बार अहंकार किया था। भीख माँग-माँगकर मर गया। तुमने तो अभी केवल एक दरज़ा पास किया है और अभी से तुम्हारा सिर फिर गया, तब तो तुम आगे पढ़ चुके। यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से नहीं पास हुए, अंधे के हाथ बटेर लग गई। मगर बटेर केवल एक बार हाथ लग सकती है, बार-बार नहीं लग सकती। कभी-कभी गुल्ली-डंडे में भी अंधा-चोट निशाना पड़ जाता है इससे कोई सफल खिलाड़ी नहीं हो जाता। सफल खिलाड़ी वह है, जिसका कोई निशाना खाली न जाए।

मेरे फ़ेल होने पर मत जाओ। मेरे दरज़े में आओगे तो दाँतों पसीना आ जाएगा, जब अलजबरा और जामेट्री के लोहे के चने चबाने पड़ेंगे और इंगलिस्तान का इतिहास पढ़ाना पड़ेगा। बादशाहों के नाम याद रखना आसान नहीं। आठ-आठ हेनरी हो गुज़रे हैं। कौन-सा कांड किस हेनरी के समय में हुआ, क्या यह याद कर लेना आसान समझते हो? हेनरी सातवें की जगह हेनरी आठवाँ

SCERT TELANGANA

लिखा और सब नंबर गायब। सफ़ाचट। सिफ़र भी न मिलेगा, सिफ़र भी। हो किस ख़याल में। दरज़नों तो जेम्स हुए हैं, दरजनों विलियम, कोड़ियों चार्ल्स। दिमाग़ चक्कर खाने लगता है। आंधी रोग हो जाता है। इन अभागों को नाम भी न जुड़ते थे। एक ही नाम के पीछे दोयम, सोयम, चहारूम, पंचुम लगाते चले गए। मुझसे पूछते, तो दस लाख नाम बता देता।

और जामेट्री तो बस, ख़ुदा ही पनाह। अ ब ज की जगह अ ज ब लिख दिया और सारे नंबर कट गए। कोई इन निर्दयी मुमतहिनों से नहीं पूछता कि आख़िर अ ब ज और अ ज ब में क्या फ़र्क है, और व्यर्थ की बात के लिए क्यों छात्रों का खून करते हो। दाल-भात-रोटी खाई या भात-दाल-रोटी खाई, इसमें क्या रखा है, मगर इन परीक्षकों को क्या परवाह। वह तो वही देखते हैं जो पुस्तक में लिखा है। चाहते हैं कि लड़के अक्षर-अक्षर रट डालें। और इसी रटंत का नाम शिक्षा रख छोड़ा है। और आख़िर इन बे-सिर-पैर की बातों के पढ़ने से फ़ायदा?

इस रेखा पर वह लंब गिरा दो, तो आधार लंब से दुगुना होगा। पूछिए, इससे प्रयोजन? दुगुना नहीं, चौगुना हो जाए, या आधा ही रहे, मेरी बला से, लेकिन परीक्षा में पास होना है, तो यह सब खुराफ़ात याद करनी पड़ेगी।

कह दिया – 'समय की पाबंदी' पर एक निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। अब आप कॉपी सामने खोले, कलम हाथ में लिए उसके नाम को रोइए। कौन नहीं जानता कि समय की पाबंदी बहुत अच्छी बात है। इससे आदमी के जीवन में संयम आ जाता है, दूसरों का उस पर स्नेह होने लगता है और उसके कारोबार में उन्नति होती है, लेकिन इस ज़रा-सी बात पर चार पन्ने कैसे लिखें? जो बात एक वाक्य में कही जा सके, उसे चार पन्नों में लिखने की ज़रूरत? मैं तो इसे हिमाकत कहता हूँ। यह तो समय की किफ़ायत नहीं, बल्कि उसका दुरुपयोग है कि व्यर्थ में किसी बात को ठूँस दिया जाए। हम चाहते हैं, आदमी को जो कुछ कहना हो, चटपट कह दे और अपनी राह ले। मगर नहीं, आपको चार पन्ने रँगने पड़ेंगे, चाहे जैसे लिखिए और पन्ने भी पूरे फूलस्केप आकार के। यह छात्रों पर अत्याचार नहीं, तो और क्या है? अनर्थ तो यह है कि कहा जाता है, संक्षेप में लिखो। समय की पाबंदी पर संक्षेप में एक निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम और धीरे-धीरे भी। है उलटी बात, है या नहीं। बालक भी इतनी-सी बात समझ सकता है, लेकिन इन अध्यापकों को इतनी तमीज़ नहीं। उस पर दावा है कि हम अध्यापक हैं। मेरे दरजे में आओगे लाला, तो ये सारे पापड़ बेलने पड़ेंगे और तब आटे-दाल का भाव मालूम होगा। इस दरज़े में अव्वल आ गए हो, तो ज़मीन पर पाँव नहीं रखते। इसलिए मेरा कहना मानिए। लाख फ़ैल हो गया हूँ, लेकिन तुमसे बड़ा हूँ, संसार का मुझे तुमसे कहीं ज़्यादा अनुभव है। जो कुछ कहता हूँ उसे गिरह बाँधिए, नहीं तो पछताइएगा।

स्कूल का समय निकट था, नहीं ईश्वर जाने यह उपदेश-माला कब समाप्त होती। भोजन आज मुझे निःस्वाद-सा लग रहा था। जब पास होने पर यह तिरस्कार हो रहा है, तो फ़ेल हो जाने पर तो शायद प्राण ही ले लिए जाएँ। भाई साहब ने अपने दरज़े की पढ़ाई का जो भयंकर चित्र खींचा था, उसने मुझे भयभीत कर दिया। स्कूल छोड़कर घर नहीं भागा, यही ताज्जुब है, लेकिन इतने तिरस्कार पर भी पुस्तकों में मेरी अरुचि ज्यों-की-त्यों बनी रही। खेल-कूद का कोई अवसर हाथ से

SCERT TELANGANA

न जाते देता। पढ़ता भी, मगर बहुत कम। बस, इतना कि रोज़ टास्क पूरा हो जाए और दरज़े में ज़लील न होना पड़े। अपने ऊपर जो विश्वास पैदा हुआ था, वह फिर लुप्त हो गया और फिर चोरों का-सा जीवन कटने लगा।

फिर सालाना इम्तिहान हुआ और कुछ ऐसा संयोग हुआ कि मैं फिर पास हुआ और भाई साहब फिर फ़ेल हो गए। मैंने बहुत मेहनत नहीं की, पर न जाने कैसे दरज़े में अव्वल आ गया। मुझे खुद अचरज हुआ। भाई साहब ने प्राणांतक परिश्रम किया। कोर्स का एक-एक शब्द चाट गए थे, दस बजे रात तक इधर, चार बजे भोर से उधर, छः से साढ़े नौ तक स्कूल जाने के पहले। मुद्रा कांतिहीन हो गई थी, मगर बेचारे फ़ेल हो गए। मुझे उन पर दया आती थी। नतीजा सुनाया गया, तो वह रो पड़े और मैं भी रोने लगा। अपने पास होने की खुशी आधी हो गई। मैं भी फ़ेल हो गया होता, तो भाई साहब को इतना दुःख न होता, लेकिन विधि की बात कौन टाले!

मेरे और भाई साहब के बीच में अब केवल एक दरज़े का अंतर और रह गया। मेरे मन में एक कुटिल भावना उदय हुई कि कहीं भाई साहब एक साल और फ़ेल हो जाएँ, तो मैं उनके बराबर हो जाऊँ, फिर वह किस आधार पर मेरी फ़जीहत कर सकेंगे, लेकिन मैंने इस विचार को दिल से बलपूर्वक निकाल डाला। आख़िर वह मुझे मेरे हित के विचार से ही तो डाँटते हैं। मुझे इस वक्त अप्रिय लगता है अवश्य, मगर यह शायद उनके उपदेशों का ही असर है कि मैं दनादन पास हो जाता हूँ और इतने अच्छे नंबरों से।

अब भाई साहब बहुत कुछ नरम पड़ गए थे। कई बार मुझे डाँटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया। शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डाँटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा, या रहा भी, तो बहुत कम। मेरी स्वच्छंदता भी बढ़ी। मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं पास ही हो जाऊँगा, पढ़ूँ न पढ़ूँ, मेरी तकदीर बलवान है, इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा-बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ। मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक़ पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाज़ी की ही भेंट होता था, फिर भी भाई साहब का अदब करता था और उनकी नज़र बचाकर कनकौए उड़ाता था। मांझा देना, कन्ने बाँधना, पतंग टूर्नामेंट की तैयारियाँ आदि समस्याएँ सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं। मैं भाई साहब को यह संदेह न करने देना चाहता था कि उनका सम्मान और लिहाज़ मेरी नज़रों में कम हो गया है।

एक दिन संध्या समय, होस्टल से दूर मैं एक कनकौआ लूटने बेतहाशा दौड़ा जा रहा था। आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो। बालकों की पूरी सेना लग्गे और झाड़दार बाँस लिए इनका स्वागत करने को दौड़ी आ रही थी। किसी को अपने आगे-पीछे की ख़बर न थी। सभी मानो उस पतंग के साथ ही आकाश में उड़ रहे थे, जहाँ सब कुछ समतल है, न मोटरकारें हैं, न ट्राम, न गाड़ियाँ।

सहसा भाई साहब से मेरी मुठभेड़ हो गई, जो शायद बाज़ार से लौट रहे थे। उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया और उग्र भाव से बोले-इन बाज़ारी लौंडों के साथ धेले के कनकौए के लिए दौड़ते तुम्हें

शर्म नहीं आती? तुम्हें इसका भी कुछ लिहाज नहीं कि अब नीची जमात में नहीं हो, बल्कि आठवीं जमात में आ गए हो और मुझसे केवल एक दरज़ा नीचे हो। आख़िर आदमी को कुछ तो अपनी पोज़ीशन का ख़याल रखना चाहिए।

एक ज़माना था कि लोग आठवाँ दरज़ा पास करके नायब तहसीलदार हो जाते थे। मैं कितने ही मिडिलचियों को जानता हूँ, जो आज अव्वल दरजे के डिप्टी मैजिस्ट्रेट या सुपरिटेंडेंट हैं। कितने ही आठवीं जमात वाले हमारे लीडर और समाचारपत्रों के संपादक हैं। बड़े-बड़े विद्वान उनकी मातहती में काम करते हैं और तुम उसी आठवें दरज़े में आकर बाज़ारी लौंडों के साथ कनकौए के लिए दौड़ रहे हो। मुझे तुम्हारी इस कम अक्ली पर दुःख होता है। तुम ज़हीन हो, इसमें शक नहीं, लेकिन वह ज़ेहन किस काम का जो हमारे आत्मगौरव की हत्या कर डाले। तुम अपने दिल में समझते होगे, मैं भाई साहब से महज़ एक दरजा नीचे हूँ और अब उन्हें मुझको कुछ कहने का हक़ नहीं है, लेकिन यह तुम्हारी गलती है। मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और चाहे आज तुम मेरी ही जमात में आ जाओ और परीक्षकों का यही हाल है, तो निस्संदेह अगले साल तुम मेरे समकक्ष हो जाओगे और शायद एक साल बाद मुझसे आगे भी निकल जाओ, लेकिन मुझमें और तुममें जो पाँच साल का अंतर है, उसे तुम क्या, खुदा भी नहीं मिटा सकता। मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूँगा। मुझे दुनिया का और ज़िंदगी का जो तजुरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम.ए. और डी.फिल् और डी.लिट् ही क्यों न हो जाओ। समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है। हमारी अम्माँ ने कोई दरजा नहीं पास किया और दादा भी शायद पाँचवीं-छठी जमात के आगे नहीं गये, लेकिन हम दोनों चाहे सारी दुनिया की विद्या पढ़ लें, अम्मा और दादा को हमें समझाने और सुधारने का अधिकार हमेशा रहेगा। केवल इसलिए नहीं कि वे हमारे जन्मदाता हैं, बल्कि इसलिए कि उन्हें दुनिया का हमसे ज़्यादा तजुरबा है और रहेगा। अमेरिका में किस तरह की राज-व्यवस्था है, और आठवें हेनरी ने कितने ब्याह किए और आकाश में कितने नक्षत्र हैं, यह बातें चाहे उन्हें न मालूम हों, लेकिन हज़ारों ऐसी बातें हैं, जिनका ज्ञान उन्हें हमसे और तुमसे ज़्यादा है।

दैव न करे, आज मैं बीमार हो जाऊँ, तो तुम्हारे हाथ-पाँव फूल जाएँगे। दादा को तार देने के सिवा तुम्हें और कुछ न सूझेगा, लेकिन तुम्हारी जगह दादा हों, तो किसी को तार न दें, न घबराएँ, न बदहवास हों। पहले ख़ुद मरज़ पहचान कर इलाज करेंगे, उसमें सफल न हुए, तो किसी डॉक्टर को बुलाएँगे। बीमारी तो खैर बड़ी चीज़ है। हम-तुम तो इतना भी नहीं जानते कि महीने-भर का खर्च महीना-भर कैसे चले। जो कुछ दादा भेजते हैं, उसे हम बीस-बाईस तक खर्च कर डालते हैं और फिर पैसे-पैसे को मुहताज हो जाते हैं। नाश्ता बंद हो जाता है, धोबी और नाई से मुँह चुराने लगते हैं, लेकिन जितना आज हम और तुम खर्च कर रहे हैं, उसके आधे में दादा ने अपनी उम्र का बड़ा भाग इज़्ज़त और नेकनामी के साथ निभाया है और कुटुम्ब का पालन किया है जिसमें सब मिलकर नौ आदमी थे। अपने हेडमास्टर साहब ही को देखो। एम.ए., हैं कि नहीं और यहाँ के एम.ए. नहीं, आक्सफोर्ड के। एक हज़ार रुपये पाते हैं, लेकिन उनके घर का इंतज़ाम कौन करता है? उनकी बूढ़ी माँ। हेडमास्टर साहब की डिग्री यहाँ बेकार हो गई। पहले ख़ुद घर का इंतज़ाम करते

जिन्हें कहीं से प्रशंसा नहीं मिलती, वे आत्म-प्रशंसा करते हैं। - अज्ञात

थे। खर्च पूरा न पड़ता था। कर्ज़दार रहते थे। जब से उनकी माता जी ने प्रबंध अपने हाथ में ले लिया है, जैसे घर में लक्ष्मी आ गई है। तो भाईजान, यह गरूर दिल से निकाल डालो कि तुम मेरे समीप आ गए हो और अब स्वतंत्र हो। मेरे देखते तुम बेराह न चलने पाओगे। अगर तुम यों न मानोगे तो मैं (थप्पड़ दिखाकर) इसका प्रयोग भी कर सकता हूँ। मैं जानता हूँ, तुम्हें मेरी बातें ज़हर लग रही हैं। ....

मैं उनकी इस नयी युक्ति से नत-मस्तक हो गया। मुझे आज सचमुच अपनी लघुता का अनुभव हुआ और भाई साहब के प्रति मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई। मैंने सजल आँखों से कहा- हरगिज़ नहीं। आप जो कुछ फ़रमा रहे हैं, वह बिलकुल सच है और आपको उसके कहने का अधिकार है।

भाई साहब ने मुझे गले से लगा लिया और बोले-मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता। मेरा भी जी ललचाता है; लेकिन करूँ क्या, खुद बेराह चलूँ, तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ? यह कर्तव्य भी तो मेरे सिर है।

संयोग से उसी वक्त एक कटा हुआ कनकौआ हमारे ऊपर से गुज़रा। उसकी डोर लटक रही थी। लड़कों का एक गोला पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था। भाई साहब लंबे हैं ही। उछलकर उसकी डोर पकड़ ली और बेतहाशा होस्टल की तरफ़ दौड़े। मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ - दस पंक्तियों में लिखिए।

1. दोनों भाइयों में आपको किसकी भूमिका अच्छी लगी? क्यों?
2. बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्वपूर्ण कहा है?
3. इस पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर-तरीक़ों पर व्यंग्य किया है? आप उनके विचार से कहाँ तक सहमत है?
4. बड़े भाई की डाँट-फटकार अगर न मिलती, तो क्या छोटा भाई कक्षा में अव्वल आता? अपने विचार प्रकट कीजिए।
5. प्रेमचंद की भाषा में सजीव चित्रण मिलता है। कैसे? उदाहरण सहित सिद्ध कीजिए।

SCERT TELANGANA

इकाई - III

7. अन्वेषण

- रामनरेश त्रिपाठी

उन्मुखीकरण

हर देश में तू, हर वेश में तू
तेरे नाम अनेक, तू एक ही है
तेरी रंगभूमि, है विश्वधरा,
हर खेल में, मेल में, तू ही तो है।

प्रश्न

1. ईश्वर सर्वव्यापी है। ऐसा क्यों कहा जाता है?
2. सबकी प्रेरणा ईश्वर से है। इस पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
3. समाज सेवा के संबंध में आप क्या कहना चाहेंगे?

उद्देश्य

कविता की विविध शैलियों से परिचित कराते हुए कविता की रहस्यवादी दार्शनिक शैली का परिचय कराना, उनमें सौंदर्यानुभूति का विकास कर सात्विक व उदात्त भावनाओं का विकास करना और काव्य-सृजन की प्रेरणा देना इस पाठ का उद्देश्य है।

विधा विशेष

यह गेय कविता है। इस कविता में कवि पंडित रामनरेश त्रिपाठी ने रहस्यवादी भावना स्पष्ट की है। इसमें तुकांत शब्दों का सुंदर प्रयोग किया गया है।

कवि परिचय

पं. रामनरेश त्रिपाठी का जन्म सन् 1889 में जौनपुर ज़िले के कोइरीपूर नामक गाँव में हुआ था। उत्कृष्ट देशप्रेम और राष्ट्र भक्ति के कारण सन् 1921 में आपको 18 महीने के कारावास का दंड मिला। त्रिपाठी जी द्विवेदी युग के प्रमुख कवि हैं। आप स्वच्छंदतावादी कवि हैं। आपके तीन खंड-काव्य स्वप्न, मिलन, पथिक प्रसिद्ध हैं। त्रिपाठी जी अच्छे पत्रकार भी थे।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : लोग भगवान को ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं। दीन-दुखियों की सहायता करना भगवान प्राप्ति का एक मार्ग है। किंतु हम ऐसे दीन-दुखियों से दूर भागते हैं, उन्हें नज़र अंदाज़ कर देते हैं। ऐसा करना ठीक नहीं। कण-कण में व्याप्त भगवान को हमें आडंबरों से नहीं पूजना चाहिए। समाज में सभी जाति, धर्म, संप्रदाय का समान महत्व होता है। इसमें भेद-भाव नहीं होना चाहिए। चाहे सुख हो, चाहे दुख हो, धीर होकर जीवन जीना ही सच्चा जीवन है।

SCERT TELANGANA

मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुंज और बन में।
तू खोजता मुझे था, तब दीन के वतन में।।
तू आह बन किसी की, मुझको पुकारता था।
मैं था तुझे बुलाता, संगीत में भजन में।।
मेरे लिये खड़ा था, दुखियों के द्वार पर तू।
मैं बाट जोहता था, तेरी किसी चमन में।।
बन कर किसी के आँसू, मेरे लिये बहा तू।
आँखें लगी थीं मेरी, तब मान और धन में।।
बाजे बजा-बजा के, मैं था तुझे रिझाता।
तब तू लगा हुआ था, पतितों के संगठन में।।
मैं था विरक्त तुझसे, जग की अनित्यता पर।
उत्थान भर रहा था, तब तू किसी के पतन में।।
बेबस गिरे हुओं के, तू बीच में खड़ा था।
मैं स्वर्ग देखता था, झुकता कहाँ चरण में।।
तूने दिये अनेकों अवसर, न मिल सका मैं।
तू कर्म में मगन था, मैं व्यस्त था कथन में।।

प्रश्न
1. कवि कुंज व बन में किसे ढूँढ़ता है?
2. ईश्वर दुखियों के द्वार पर क्यों रहता होगा?
3. 'जग की अनित्यता' से आप क्या समझते हैं?

तू रूप है किरण में, सौंदर्य है सुमन में।
तू प्राण है पवन में, विस्तार है गगन में।।
तू ज्ञान हिंदुओं में, ईमान मुस्लिमों में।
तू प्रेम क्रिश्चियन में, तू सत्य है सृजन में।।
हे दीनबंधु ऐसी, प्रतिभा प्रदान कर तू।
देखूँ तुझे दृगों में, मन में तथा वचन में।।
कठिनाइयों दुखों का, इतिहास ही सुयश है।
मुझको समर्थ कर तू, बस कष्ट के सहन में।।
दुखों में न हार मानूँ, सुख में तुझे न भूलूँ।
ऐसा प्रभाव भर दे, मेरे अधीर मन में।।

4. ईश्वर प्रकृति में कहाँ-कहाँ व्याप्त है?
5. कवि ईश्वर से किस प्रकार की प्रतिभा प्रदान करने को कहता है?
6. सुख-दुख में हमें कैसे रहना चाहिए?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

1. लोग ईश्वर की खोज में जगह-जगह भटकते हैं जबकि यह भी मान्यता है कि ईश्वर कण-कण में व्याप्त है। इस संबंध में अपने विचार स्पष्ट कीजिए। मित्रों से चर्चा कीजिए।
2. ईश्वर की प्राप्ति के लिए समाज सेवा भी एक मार्ग है। आप की दृष्टि से समाज सेवा कैसी होनी चाहिए?
3. दीन-दुखियों की सहायता करना और दान करना पुण्य कार्य माना जाता है। इस मान्यता पर अपने-अपने विचार प्रकट करते हुए चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. कवि भगवान को कहाँ-कहाँ ढूँढ़ता है?
2. पाठ के आधार पर बताइए कि भगवान किस-किस रूप में मिल सकते हैं?
3. कवि भगवान से क्या प्रार्थना करता है?

(इ) निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

1. मेरे लिए खड़ा था, दुखियों के द्‍वार पर तू।
2. बन कर किसी के आँसू, मेरे लिए बहा तू।
3. बेबस गिरे हुओं के, तू बीच में खड़ा था।

(ई) 1. गद्‍यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

राजा राममोहन राय का हृदय विशाल था। वह विश्वभर के शुभचिंतक थे.......'ब्रह्‍म समाज' द्‍वारा प्रचलित धर्म को वह 'विश्वधर्म' कहते थे और 'ब्रह्‍म मंदिर' का द्‍वार सभी धर्म और जाति के लोगों के लिए खुला रखा था। वहाँ एक ईश्वर की निराकार ब्रह्‍म की पूजा-अर्चना की व्यवस्था थी। उपासना के समय या उसके आगे पीछे किसी भी धर्म के विरुद्‍ध कुछ कहने का आदेश नहीं था और सच्चरित्रता, दया, दानशीलता, उदारता तथा पवित्रता की ओर निर्देशित किया जाता था। कहते हैं, उस समाज में हिंदू धर्म में प्रचलित वैराग्य-कठिन तपस्या, अकर्मण्यता आदि के लिए स्थान न था और यह समाज उस नीति का घोर विरोधी था, जो मनुष्य मात्र को संसार से विरक्त बनाकर मूर्ख बना देती है।

1. राजा राममोहन राय द्‍वारा स्थापित 'ब्रह्‍म समाज' में ईश्वर की कैसी संकल्पना की जाती है?
2. उपासना के समय या उसके आगे पीछे किसी भी धर्म के विरोध में कुछ कहने का आदेश क्यों नहीं था?
3. गद्‍यांश में आयी भाववाचक संज्ञाएँ पहचानकर लिखिए।
4. ब्रह्‍म समाज किस नीति का घोर विरोधी था?
5. इस गद्‍यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

2. नीचे दिये गये चित्र को देखकर आपके मन में क्या विचार उत्पन्न हो रहे हैं। अपने शब्दों में लिखिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए।

1. कवि ईश्वर को कुंज और बन में क्यों ढूँढ़ता था?
2. अनेक अवसर मिलने पर भी कवि क्यों लाभ नहीं उठा सका?
3. किरण, सुमन, पवन और आकाश में ईश्वर के किन रूपों का दर्शन किया जा सकता है?

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर दस-बारह पंक्तियों में लिखिए।

1. समाज में फैले बाह्याडंबरों के विरोध में कवि क्या संदेश देता है?
2. हम कैसे पता लगा पाते हैं कि हमारा जीवन सही मार्ग पर अग्रसर है?
3. दुख और विपत्ति में संयम से रहने के लिए कवि क्या प्रार्थना करता है?

(इ) दुख व विपत्ति में संयम से रहने के लिए प्रेरित करती एक लघु कहानी की रचना कीजिए।

(ई) मानवता, दया और प्रेम मानवीय सृष्टि के अनमोल रत्न हैं। अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

भाषा की बात

(अ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार अभ्यास कीजिए ।

1. दीन, विरक्त, बेबस,वतन (पर्याय शब्द लिखिए।)
2. अनित्यता, मान, समर्थ (विलोम शब्द लिखिए।)
3. आँसू, चमन, दुख, कथन, चरण (वचन बदलकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।)
4. ईमान, यश, धीर (उचित उपसर्ग जोड़िए।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार अभ्यास कीजिए।

1. दीनबंधु, अनित्यता, भलामानस (समास पहचनाकर विग्रह कीजिए।)
2. निः + मल = निर्मल विसर्ग संधि है। इस संधि के तीन उदाहरण लिखिए।

(इ) 1. समान उच्चारण वाले शब्द उन शब्दों को कहते हैं, जिनका उच्चारण तो प्रायः समान होता है परन्तु अर्थ में भिन्नता पायी जाती है अर्थात् उच्चारण में नाम मात्र का अंतर होने पर भी अर्थ में अंतर स्पष्ट होता है । ऐसे शब्दों को समोच्चारित शब्द कहते हैं। ऐसे ही पाँच-पाँच शब्द पठित पाठों में से ढूँढ़कर लिखिए । जैसे

1. आगम - आगमन
   अगम - दुर्गम
2. कोष - भण्डार
   कोश - शब्दकोश

(ई) उत्पत्ति की दृष्टि से निम्न शब्द कैसे शब्द हैं पहचानिए।

1. वतन 2. चमन 3. ईमान 4. इस्तेमाल

परियोजना कार्य

भारतीय संस्कृति यह बताती है कि मानव कुल में प्रचलित सभी धर्म सही हैं। सबकी प्रेरणा व निष्ठा ईश्वर से है और सब बंदे बनकर मालिक की आराधना करते हैं। जैसे - 'ऐ मालिक तेरे बंदे हम' फिल्मी गीत है। इसी गीत का या ऐसे ही किसी गीत का संग्रह कर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए और प्रदर्शित गीत का भाव बताइए।

SCERT TELANGANA

8 बच्चों से न छीने उनका हक़

उन्मुखीकरण

खेल सब पसंद करते हैं। स्वाभाविक रूप से खेल में हार-जीत होती है। दोनों में किसी एक को अनिवार्य रूप से हारना पड़ता है। जो जीतते हैं, वे विजेता कहलाते हैं। कुछ लोग हार से निराश हो जाते हैं। लेकिन खेलों में हार-जीत न देखते हुए अपने कौशल प्रदर्शन पर ही ध्यान देना चाहिए। हमें अनुशासन, लगन, कौशल, सहनशीलता, नियम पालन आदि गुण एक-दूसरे से अपनाने का प्रयास करना चाहिए।

प्रश्न

1. खेल में जीवन संघर्ष का प्रशिक्षण मिलता है।कैसे?
2. आशा-निराशा खेल के दो पहलू हैं। दोनों में संतुलन बनाए रखने के लिए किन गुणों की आवश्यकता होती है?
3. अच्छे खिलाड़ी बनने के लिए किन चीजों की आवश्यकता होती है?

उद्देश्य

समाचार पत्रों में जो लेख लिखे जाते हैं, उनकी भाषा शैली से छात्रों को परिचित कराना ताकि वह समाचार पत्रों के लेख पढ़कर अर्थग्रहण कर सकें और स्व-लेख लिखने के लिए प्रेरित हों। साथ ही साथ खेल के महत्व को भी समझ सकें। यही इस पाठ का उद्देश्य है।

विधा विशेष

पत्र-पत्रिकाओं में संपादक द्वारा लिखे गये लेख संपादकीय कहलाते हैं। यह लेख अत्यंत सारगर्भित होते हैं। इनमें पत्र-पत्रिका के मुख्य अंश या समकालीन संदर्भ पर लेख होते हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

विषय प्रवेश : हमारे बच्चों के लिए शहर में खेलने-कूदने के लिए जगह है ही कहाँ? जो भी खुली जगह थी, वहाँ लोगों ने या तो मॉल्स बना लिये या उसे पार्किंग एरिया घोषित कर दिया या फिर बिल्डर मुनाफ़ा कमाने के लिए इमारतें बनाने के लिए टूट पड़े। मेरीकॉम के सामने कई बच्चों की माताओं ने अपनी समस्या रखीं। आइए, इस संदर्भ में मेरीकॉम के विचार जानें...

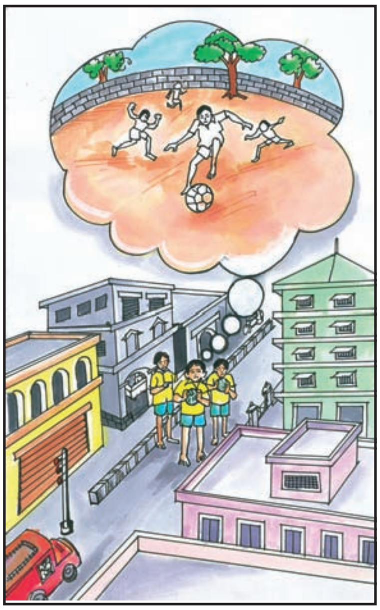

जब से मैं ओलंपिक पदक जीत कर लौटी हूँ तब से सारा देश मुझे हाथोंहाथ ले रहा है। एक के बाद एक स्वागत समारोह हो रहे हैं, जो मुझे अपने देश और देशवासियों के प्रेम और स्नेह से रू-ब-रू करा रहे हैं। मैं सबका सच्चे दिल से शुक्रिया अदा करती हूँ। मेरे साथ कुछ अन्य एथलीटों ने भी ओलंपिक में पदक जीते। इसके अलावा ओलंपिक में गये सभी भारतीयों ने अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन करने की कोशिश की-भले ही उन्हें सफलता मिली हो या न हो। पूरे देश में इसको लेकर खुशी है कि लंदन ओलंपिक में भारत ने अब तक का अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। ओलंपिक पदक जीतने के बाद आयोजित किये जा रहे स्वागत समारोहों के कारण मैं देश के महानगरों जैसे दिल्ली, मुंबई, बेंगलूर, कोलकाता आदि में घूम रही हूँ। इन महानगरों में पहुँच कर दिल बैठ सा जाता है, क्योंकि मैं भारत के जिस क्षेत्र से आती हूँ वहाँ तो खुली जगहों की कोई कमी नहीं है और प्रकृति के साथ नाता जोड़ने के अवसरों का भी कोई अभाव नहीं है, लेकिन इन महानगरों में मैंने देखी ऊँची-ऊँची इमारतें, तंग गलियाँ, प्रदूषित जलवायु और बड़ी ही मुश्किल से दिखायी देने वाले खुले मैदान और स्थान। इन महानगरों में मुझे ज़्यादातर मिला लगभग दम घोंट देने वाला माहौल, जहाँ हम जैसे खुले-खुले स्थानों से आने वालों के लिए साँस तक लेना मुश्किल हो जाता है।

यह निराशाजनक है कि महानगरों में बच्चों के खेलने की जगह निरंतर सिकुड़ती जा रही है। हर खुली जगह पर धीरे-धीरे बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी की जा रही हैं। इस सिलसिले को रोकने की आवश्यकता है। औद्योगिक अथवा शहरी विकास की गतिविधियों के लिए खेल के स्थानों से समझौता करना ठीक नहीं है। दो बच्चों की माँ होने के नाते उस माहौल में मैं सोचती रही कि इन महानगरों के बच्चों को खेलने-कूदने का मौक़ा कहाँ मिलता होगा और कैसे जोड़ पाते होंगे वे प्रकृति से अपना नाता जो हर बच्चे के संपूर्ण विकास के लिए अनिवार्य है। बचपन का तो नाम ही होता है उछल-कूद धमाचौकड़ी मचाना, ताकि बच्चों में जो ढेर सारी ऊर्जा होती है उसका सही इस्तेमाल करके उनका सही-सही शारीरिक विकास हो पाये। अगर बच्चों को खुले में खेलने का अवसर न मिले तो वे या तो टी.वी. से चिपके रहते हैं या फिर वीडियो गेम में उलझे रहते हैं। इसलिए शायद आजकल बच्चों में मोटापा तेज़ी से बढ़ता जा रहा है और वे तरह-तरह की अन्य

प्रश्न

1. बच्चों को खेल के अधिक अवसर प्रदान करने के लिए क्या उपाय किये जाने चाहिए?
2. शहरी वातावरण के बारे में मेरीकॉम क्यों हैरान थीं?

समस्याओं से घिरते जा रहे हैं। इसके अलावा खुले में खेलने से बच्चों को मिलता है प्रकृति से जुड़ने का मौक़ा-वही प्रकृति जो मानव जाति की सबसे अच्छी शिक्षक रही है। ज़रा सोचिए अगर न्यूटन के घर के पास ही सेब का पेड़ ना होता तो हमें गुरुत्वाकर्षण का नियम कहाँ से मिलता।

अब अगर आज के शहरों को देखें तो मालूम होगा कि बच्चे यह जानते ही नहीं कि सेब के बाग़ कैसे होते हैं। आम के पेड़ कैसे होते हैं या फिर अनार कहाँ से मिलता है। यह अच्छी बात है कि हम खेलों में एक शक्ति बनने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन यह तभी होगा जब हम बच्चों को खेलने की मूलभूत सुविधाएँ देंगे। इन सुविधाओं में पहली ज़रूरत तो खेलने की जगह की है। अगर उन्हें खेलने की जगह नहीं मिलेगी तो वे किस तरह खेलों की दुनिया की ओर आकर्षित होंगे और भारत के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार-सम्मान हासिल कर सकेंगे?

इन महानगरों में मेरी भेंट कई महिलाओं से हुई। इनसे जब मैंने पूछा कि उनके बच्चे खेलने-कूदने कहाँ जाते हैं तो उन्होंने मुझसे कहा कि यही तो हमारी सबसे बड़ी समस्या है। हमारे बच्चों के लिए शहर में खेलने-कूदने के लिए जगह है ही कहाँ। जो भी खुली जगह थी, वहाँ लोगों ने या तो मॉल्स बना लिये या फिर उसे पार्किंग एरिया घोषित कर दिया या फिर बिल्डर मुनाफ़ा कमाने के लिए इमारतें बनाने के लिए टूट पड़े। बच्चों के खेलने की जगहों को इस तरह एक के बाद एक समाप्त करना निराशाजनक है। शहरों में खेल के लिए स्थान समाप्त होते जाने के कारण बच्चों को खेलने के लिए अक्सर सड़क पर निकलना पड़ता है जो खतरनाक होता है, क्योंकि ट्रैफिक में या तो हादसे होने का डर होता है या फिर गंदगी के कारण बीमारियाँ लगने का खौफ़ उत्पन्न हो जाता है। आख़िर बच्चे खेलेंगे नहीं तो विकसित कैसे होंगे। खेलने की ज़रूरत का यह अर्थ नहीं कि बच्चे पढ़ाई-लिखाई में अच्छा नहीं कर सकते। खेलने के स्थान जिस तरह से सीमित होते जा रहे हैं वह हम सबके लिए चिंता का विषय बनना चाहिए। इसके लिए किसी एक के प्रयास करने से कुछ नहीं होगा, बल्कि हम सभी को आगे आना होगा।

इन्हीं चर्चाओं से मुझे ख्याल आया कि हम भारत की सभी माताओं को मिल कर अपने बच्चों के लिए खेल के मैदान की माँग के लिए अपनी आवाज़ बुलंद करनी चाहिए। देश की हर राज्य सरकार से, नगर की नगरपालिका से माँग करनी चाहिए कि वह हर मोहल्ले के आसपास बच्चों के लिए खेल के मैदान का होना सुनिश्चित करें। पी एंड जी जैसे कुछ औद्योगिक घराने इस अभियान में बढ़-चढ़ कर अपना योगदान दे रहे हैं ताकि माताओं की खेल के मैदानों की माँग की आवाज़ सही कानों तक पहुँच सकें और हमारे बच्चों को मिलें खेलने के लिए अच्छे प्लेग्राउंड। सभी इससे परिचित हैं कि पढ़ाई के साथ-साथ ही बच्चों को खेल की सुविधाएँ देने की ज़रूरत है जिसे हम अनदेखा कर देते हैं। यह स्थिति बदलनी चाहिए। मैं देश की सभी माताओं से अपील करती हूँ कि वे आगे आयें और इस अभियान के साथ जुड़ें, ताकि उनके बच्चे अपने बचपन का सही आनंद लेकर उनसे कहें, थैंक यू मॉम, हमें हमारा हक़ दिलाने के लिए।

साभार : संपादकीय, दैनिक जागरण, 29 अगस्त, 2012

(लेखिका एम.सी.मेरीकॉम, पाँच बार की विश्व चैंपियन और ओलंपिक पदक विजेता मुक्केबाज हैं।)

3. देश की माताओं से मेरीकॉम की क्या अपेक्षा है?
4. 'विकास के नाम पर खेल के मैदान खत्म करना, बड़े-बड़े मॉल्स बनाना, औद्योगिक क्षेत्र बनाना ठीक नहीं है।'' मेरीकॉम के इस अभिप्राय से आप कहाँ तक सहमत हैं?

SCERT TELANGANA

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

1. हर बच्चे को खेलने का अधिकार है। इसके लिए हम क्या कर सकते हैं?
2. बच्चे पाठशाला में पढ़ने के साथ-साथ खुले वातावरण में खेलना पसंद करते हैं। कुछ माता-पिता बच्चों को खेलने से मना करते हैं। ऐसी स्थिति में आप होते तो क्या करते?

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. मेरीकॉम कौन है? उनके बारे में बताइए।
2. मेरीकॉम भारतीय ओलंपिक खिलाड़ियों के बारे में क्या कह रही हैं?
3. मेरीकॉम सरकार से क्या अपेक्षा करती हैं?

(इ) निम्नलिखित पंक्तियों के संदर्भ सहित भाव लिखिए।

1. औद्योगिक अथवा शहरी विकास की गतिविधियों के लिए खेल के स्थानों से समझौता करना ठीक नहीं।
2. बचपन का तो नाम ही होता है उछल-कूद करके धमाचौकड़ी मचाना।
3. थैंक यू मॉम, हमें हमारा हक़ दिलाने के लिए।

(ई) गद्यांश पढ़कर पाँच प्रेरणादायक सूक्तियाँ लिखिए।

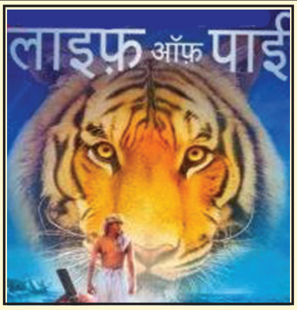

लाइफ़ ऑफ़ पाई एक साधारण लड़के अब्दुल पाई पटेल की कहानी है, जो कि अपने पिता संतोष पटेल के साथ पांडिचेरी में रहता है। पांडिचेरी में उसके पिता का एक चिड़ियाघर है। एक दिन पाई के पिता अपने व्यापार को और बढ़ाने के लिए शहर से बाहर जाने का निर्णय करते हैं। वे लोग समुद्र के रास्ते से अपने चिड़ियाघर के जानवरों को लेकर कनाडा की ओर जाते हैं। लेकिन रास्ते में एक समुद्री तूफ़ान में फँसकर उनका जहाज पलट जाता है और अंत में पाई और शेर रिचर्ड पार्कर ही रह जाते हैं। पाई की भूमिका में सूरज ने यह दर्शाया है कि ज़िंदगी को किसी भी क़ीमत पर नहीं खोना चाहिए। फिल्म को देखने के बाद दिल में सिर्फ़ इतना ही ख्याल आता है कि इंसान के अंदर अगर जीने की चाहत हो तो वो किसी भी मुश्किल से ख़ुद को बाहर निकाल सकता है। ख़ुदा ने यह ज़िंदगी हमें सिर्फ़ एक बार ही दी है। अब यह हमारे ऊपर है कि इससे जुड़ी मुश्किलों से घबराकर इसका हाथ छोड़ देते हैं या फिर हर बड़ी से बड़ी मुश्किल का सामना करते हुए भी इसका हाथ थामे रहते हैं। अंत में इस फिल्म का उद्देश्य यह है कि साहस और धैर्य का उपयोग मानवीय दृष्टिकोण से होना चाहिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए।

1. गंदगी के कारण कौनसी बीमारियाँ फैल सकती हैं?
2. बच्चों के लिए स्वतंत्र वातावरण का क्या महत्व है?
3. आपको कौनसा खेल पसंद है? क्यों?

SCERT TELANGANA

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर दस-बारह पंक्तियों में लिखिए।

1. महानगरों में बच्चों के खेलने की जगह निरंतर सिकुड़ती जा रही है। इसके मुख्य कारण क्या हैं?
2. देश की माताओं को किसके लिए अपनी आवाज़ बुलंद करनी चाहिए? और क्यों?
3. विकसित देशों की तुलना में भारत में खेलों का भविष्य कैसा है? अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

(इ) बच्चों के जीवन में खेलों का महत्वपूर्ण स्थान है। इस पर एक सारगर्भित निबंध लिखिए।

(ई) मेरीकॉम एक सफल खिलाड़ी होने के साथ-साथ एक प्यारी माँ भी हैं। माँ के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार अभ्यास कीजिए।

1. जीत, गंदगी, निराशा (विलोम शब्द लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।)
2. शिक्षक, महिला, विद्वान (लिंग बदलकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।)
3. बुलंद, धमाचौकड़ी, मुनाफ़ा (वाक्य प्रयोग कर अर्थ लिखिए।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार अभ्यास कीजिए।

1. आवाज़ बुलंद करना   2. अनदेखी करना

(वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(इ)
1. खेलने के संदर्भ में यह धारणा गलत है कि बच्चे पढ़ाई-लिखाई अच्छी नहीं कर सकते। इसी तरह के पाँच मिश्र वाक्य पाठ में से ढूँढ़कर लिखिए।
2. अगर बच्चों को खुले में खेलने का अवसर न मिले तो वे या तो टी.वी. से चिपके रहते या सड़कों पर ही खेलते हैं। (रेखांकित शब्दों पर ध्यान देते हुए दो वाक्य बनाइए।)

(ई) उदाहरण के अनुसार पाँच शब्द लिखिए। -

जैसे - 1. जिसके आने की तिथि निश्चित न हो - **अतिथि**

2. जिसका भेद न किया जा सके - **अभेद**

परियोजना कार्य

छात्रो! आप लोग टी. वी. पर कई प्रकार के विज्ञापन देखते हैं। आप भी किसी विषय पर कोई विज्ञापन बनाना चाहते हैं तो उसे बनाकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

SCERT TELANGANA

9 बाल अदालत

उन्मुखीकरण

हरे-भरे जंगल, चहचहाते पक्षी आज कल्पना के विषय बन गये हैं। भूकंप, बाढ़ आदि प्रकृति की ओर से मनुष्य को दी गयी चेतावनी है परंतु सब कुछ जानते हुए भी आज मानव इसे अनदेखा कर रहा है। वास्तविकता यह है कि बढ़ती आबादी और आधुनिक जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जंगलों को बड़ी बेरहमी से काटा गया है। जिसके कारण मौसम-चक्र बदला और परिणामस्वरूप कहीं सूखा और कहीं बाढ़ देखने को मिलती है। मनुष्य आज पेड़-पौधों से नाता तोड़ने के दुष्परिणाम झेल रहा है।

प्रश्न

1. मनुष्य किस प्रकार प्रकृति पर आश्रित है?
2. मौसम चक्र में परिवर्तन के प्रमुख कारण कौन से हैं?
3. जंगलों के काटे जाने के दुष्परिणाम क्या हो सकते हैं?

उद्देश्य

छात्रों को साहित्य में एकांकी विधा से परिचित कराना, एकांकी लेखन के लिए प्रेरित करना, संवाद बोलने के कौशल का विकास करना, भाषा व रचना शैली की विविधता से अवगत कराना आदि इस पाठ के मुख्य उद्देश्य हैं।

विधा विशेष

एकांकी साहित्य की एक ऐसी विधा है, जो नाटक के समान अभिनय से संबंधित है। एकांकी में किसी एक ही विषय का चित्रण किया जाता है। प्रस्तुत पाठ पर्यावरण संबंधित एकांकी है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

विषय प्रवेश : पर्यावरण के बिगड़ने से आगामी भविष्य में और कई समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। पर्यावरण हमारा रक्षा कवच है। इसका संरक्षण करना हमारा कर्तव्य है।

पात्र परिचय :

1. न्यायाधीश
2. सरकारी वकील
3. प्रतिवादी वकील
4. दरबान
5. घीसाराम (लकड़ी व्यापारी)
6. किरोड़ीमल (फैक्ट्री का मालिक)

(बच्चे खेल-खेल में अभिनय कर रहे हैं। मंच पर अदालत का दृश्य हैं। सामने एक बड़ी कुर्सी पर न्यायाधीश विराजमान है। काले कोट पहने दो वकील न्यायाधीश के सामने खड़े हैं। दरवाज़े पर एक दरबान खड़ा है।)

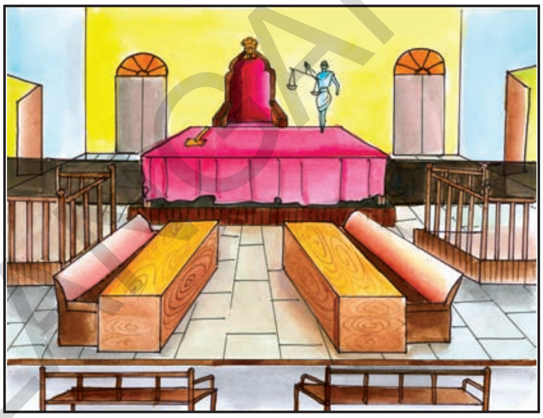

न्यायाधीश : (मेज़ पर हथौड़ा बजाते हुए) आर्डर! आर्डर! आज का पहला मुक़दमा प्रस्तुत किया जाए।

सरकारी वकील : महोदय, आज का पहला मुक़दमा लकड़ी के व्यापारी घीसाराम के विरुद्ध है। उस पर यह आरोप है कि वह अंधाधुंध पेड़ों की कटाई करके जंगल को वीरान कर रहा है।

न्यायाधीश : अभियुक्त घीसाराम को हाज़िर किया जाए।

दरबान : घीसाराम पुत्र भीखा राम हाज़िर हो........।

(घीसाराम अदालत के कटघरे में आकर खड़ा होता है और गीता पर हाथ रखकर शपथ लेता है।)

घीसाराम : मैं शपथ लेता हूँ कि जो कहूँगा, सच कहूँगा। सच के सिवा कुछ नहीं कहूँगा।

सरकारी वकील : घीसाराम, आप पर जो आरोप लगाया गया है, उसके बारे में क्या आप अपनी सफ़ाई में कुछ कहना चाहेंगे?

घीसाराम : न्यायाधीश जी, मेरे ऊपर लगाया गया इल्ज़ाम बिल्कुल बेबुनियाद है। लकड़ी का व्यापार हमारा खानदानी पेशा है। रही पेड़ काटने की बात सो घोड़ा घास से दोस्ती करेगा तो खाएगा क्या?

सरकारी वकील : अच्छा तो यह बताइए कि क्या आप पेड़ काटने से पहले अनुमति लेते हैं?

घीसाराम : (हँसते हुए) वकील साहब! भला पेड़ से क्या अनुमति लेना?

प्रतिवादी वकील : योर ऑनर, मेरा मुवक्किल अधिक पढ़ा-लिखा नहीं है। वह एक सीधा-सादा लकड़ी का व्यापारी है। जो लकड़ी काटने व बेचने का अपना पुश्तैनी धंधा कर रहा है।

SCERT TELANGANA

सरकारी वकील : न्यायाधीश महोदय, क़ानून से अनजान होना किसी अपराध को कम नहीं करता। यूँ भी घीसाराम जिस इलाके से पेड़ कटवा रहा था, उस क्षेत्र में जाने पर भी प्रतिबंध लगा हुआ है। फिर पेड़ काटने का तो प्रश्न ही नहीं पैदा होता।

प्रतिवादी वकील : योर ऑनर, घीसाराम को साफ़-साफ़ अपराधी नहीं ठहराया जा सकता, वह निर्दोष है, अतः उसे कोई सज़ा देना मुनासिब नहीं है।

सरकारी वकील : महोदय, मेरा मानना है कि घीसाराम ने अवश्य ही क़ानून को तोड़ा है। यदि इस प्रकार क़ानून तोड़ने वाले को माफ़ कर दिया गया तो लोगों पर इसका ग़लत असर पड़ेगा और सभी अपने स्वार्थ के लिए पेड़ों को काट-काट कर पर्यावरण को हानि पहुँचाते रहेंगे। अतः घीसाराम को सख़्त से सख़्त सज़ा दी जाए, जिससे भविष्य में कोई भी इंसान पेड़ काटने की गुस्ताख़ी न कर सकें।

न्यायाधीश : अदालत दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद इस निर्णय पर पहुँची है कि निस्संदेह घीसाराम क़ानून से अनजान है किंतु उसने गंभीर अपराध किया है। इसलिए अदालत घीसाराम को यह आदेश देती है कि वह भविष्य में किसी भी पेड़ को काटने से पूर्व वन विभाग से अनुमति लेगा। इसके साथ ही अदालत घीसाराम को हुक्म देती है कि वह अपने गाँव के चारों तरफ 100 पेड़ लगवाएगा और अगले वर्ष तक उनकी देखभाल करेगा।

प्रश्न

1. घीसाराम पर क्या आरोप था?
2. पर्यावरण को हानि कैसे हो रही है?
3. पर्यावरण की रक्षा के प्रति हमारा क्या दायित्व है?

(घंटी बजती है, सभी मंच से बाहर हो जाते है)

न्यायाधीश : आर्डर-आर्डर, आज का अगला मुक़दमा प्रस्तुत किया जाए।

सरकारी वकील : महोदय, आज का अगला मुक़दमा गाँव के बाहर लगी फैक्ट्री के मालिक सेठ किरोड़ीमल के विरुद्ध है। उस पर आरोप है कि वह फैक्ट्री के गंदे पानी और तमाम कूड़े-कचरे को गाँव के पास बहने वाली नहर में फेंकता है, जिससे नहर का पानी प्रदूषित हो रहा है। फैक्ट्री की चिमनियों से निकलने वाला धुआँ भी ग्रामवासियों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है।

न्यायाधीश : किरोड़ीमल को हाज़िर किया जाए।

दरबान : किरोड़ीमल हाज़िर हो.......।

(सेठ किरोड़ीमल कटघरे में आकर खड़ा होता है, गीता पर हाथ रखकर शपथ लेता है।)

किरोड़ीमल : मैं शपथ लेता हूँ कि जो कुछ कहूँगा, सत्य कहूँगा। सत्य के सिवाय और कुछ

SCERT TELANGANA

न कहूँगा।

सरकारी वकील : किरोड़ीमल जी, आपकी फैक्ट्री कब से चल रही है।

किरोड़ीमल : यही, पिछले 4-5 वर्ष से।

सरकारी वकील : आप यह बताएँ कि आप फैक्ट्री से निकलने वाले गंदे पानी को कहाँ फेंकते हैं?

किरोड़ीमल : वकील साहब गंदा पानी कहीं बाहर फेंकने की क्या ज़रुरत हैं। पास में ही नहर बहती है। उसी में फैक्ट्री का गंदा पानी भी बहकर दूर चला जाता है। आस-पास गंदगी फैलाने से तो बीमारियाँ फैलने का ख़तरा रहता है, न?

सरकारी वकील : सेठ जी, क्या आप जानते हैं कि ऐसा करके आप नहर के जल को भी प्रदूषित कर रहे हैं।

किरोड़ीमल : वकील साहब, आप कैसी बात करते हैं, हमने तो बचपन से ही बड़े-बूढ़ों से सुना है कि बहता पानी तो सदा शुद्ध होता है। उसे कौन दूषित कर सकता है।

सरकारी वकील : आप पर यह आरोप भी है कि आपने गाँव की हवा को भी अशुद्ध कर दिया है।

प्रतिवादी वकील : योर ऑनर, मेरे मुवक्किल पर लगाए गए आरोप बेबुनियाद हैं, असलियत यह है कि किरोड़ीमल अपनी मेहनत के दम पर साधारण मिस्त्री से सेठ किरोड़ीमल बना है, इसलिए गाँव के लोग किरोड़ीमल से ईर्ष्या करते हैं। उसने बकायदा अनुमति लेकर गाँव से बाहर फैक्ट्री लगायी थी। अब गाँव ही फैलते-फैलते वहाँ पहुँच गया तो इसमें किरोड़ीमल का क्या कसूर हैं?

सरकारी वकील : महोदय, मेरे साथी वकील ने तो वही बात कर दी, उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे। यह ठीक है कि सेठ किरोड़ीमल को फैक्ट्री बनाने की स्वीकृति किसी ने नहीं दी थी। फैक्ट्री-क़ानून के अनुसार जितनी ऊँची चिमनियाँ होना चाहिए, इन्होंने उस पर ध्यान नहीं दिया। इसका परिणाम यह है कि जब भी हवा का रुख बस्ती की ओर होता है तो चिमनियों से निकलने वाला धुआँ सारे ग्रामवासियों का साँस लेना दूभर कर देता है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब गाँव के हर घर में कोई न कोई साँस का रोगी होगा।

प्रतिवादी वकिल : योर ऑनर, मुझे अपने साथी वकील की दलील पर हँसी आती है भला हवा पर भी किसी का ज़ोर चला है उसका जी चाहे, उधर ही बहने लगती है। उस पर तो क़ानून की बेड़ियाँ नहीं डाली जा सकती।

सरकारी वकील : महोदय, ठीक है कि क़ानून हवा या पानी पर नहीं मनुष्य पर लागू होता है। इसलिए सेठ जी फैक्ट्री की चिमनियों को तो ऊँची करवा ही सकते हैं और फैक्ट्री के कूड़े-कचरे को नहर में न डालकर कहीं दूर भिजवा सकते हैं।

इन्होंने वायु व जल दोनों को दूषित करके जनता के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ किया है। इसलिए मेरा आग्रह है कि इन्हें सख़्त से सख़्त सज़ा दी जाएँ ताकि कोई भी भविष्य में पर्यावरण को दूषित करने का साहस न करें।

न्यायाधीश : दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद अदालत इस निर्णय पर पहुँची है कि सेठ किरोड़ीमल ने जाने-अनजाने में पर्यावरण को क्षति पहुँचाई है। इसलिए अदालत इन्हें हुक्म देती है कि एक सप्ताह के भीतर यह अपनी फैक्ट्री की चिमनियों को ऊँचा करवाएँ, साथ ही साथ फैक्ट्री के कूड़े-कचरे को नहर में आज से ही डालना बंद करके अपने खर्चे पर उसकी सफ़ाई की व्यवस्था करें। गाँव का धनी व्यक्ति होने के नाते सेठ किरोड़ीमल को चाहिए कि वह अपने गाँव में पर्यावरण को स्वच्छ रखने वाली योजनाओं में अपनी आय का दो प्रतिशत भाग खर्च करके लोगों के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करें, जिससे सभी पर्यावरण के प्रति अपने दायित्व को लेकर सजग हो सकें। अब अदालत बर्खास्त होती है।(लंबी घंटी बजती है और सब खड़े हो जाते हैं।)

4. किरोड़ीमल पर क्या आरोप लगाया गया? क्यों?
5. ग्रामवासियों पर धुआँ क्या दुष्प्रभाव डाल रहा है?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'न तो साँस लेने के लिए शुद्ध हवा है, न पीने के लिए स्वच्छ जल' - इस स्थिति का मनुष्य के स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? अपने विचार लिखिए।
2. पर्यावरण संरक्षण के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं?

(आ) पाठ पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. घीसाराम स्वयं को दोषी क्यों नहीं समझता था?
2. न्यायाधीश ने घीसाराम को क्या सज़ा दी?
3. बहते जल के विषय में किरोड़ीमल के क्या विचार थे?
4. सेठ को अदालत द्वारा क्या सुझाव दिया गया है?
5. इस एकांकी के द्वारा आपको क्या शिक्षा मिलती है?

(इ) निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए।

1. क़ानून हवा या पानी पर नहीं मनुष्य पर लागू होता है।
2. घोड़ा घास से दोस्ती करेगा तो खाएगा क्या?

(ई) गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. प्रकृति के बिना मानव जीवन संभव नहीं। पेड़-पौधे हमारे जीवन का आधार है। भारतीय संस्कृति में इस तथ्य को बड़ी गहराई से समझा गया। हमारे पौराणिक ग्रंथों में

SCERT TELANGANA

प्रकृति के विभिन्न तत्वों की पूजा का वर्णन मिलता है। हमारे देश में तुलसी, पीपल, बरगद आदि की आराधना आज तक की जाती है। वृक्ष प्रकृति की सुंदर और अमूल्य भेंट हैं। इनके प्रति आदर का भाव रखने का मूल कारण यही था कि अति प्राचीन काल से भारतीय ऋषि-मुनियों ने इस तथ्य को जान लिया था कि वृक्षों के अभाव में मानव अस्तित्व की कल्पना तक नहीं की जा सकती।

1. पौराणिक ग्रंथों में किसका वर्णन मिलता है?
2. हमारे देश में किन वृक्षों की पूजा की जाती है?
3. वृक्षों के प्रति आदर भाव रखने का मूल कारण क्या था?
4. भारतीय ऋषि मुनियों ने किस तथ्य को जान लिया था?

2. नीचे दिये गये सरकारी विज्ञापन की पाँच विशेषताएँ लिखिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए।

1. प्रदूषण रोकने के उपाय बताइए।
2. जल स्रोतों के संरक्षण का महत्व बताइए।

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. बाल अदालत एकांकी के मुख्यांश अपने शब्दों में लिखिए।
2. पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के क्या कारण हो सकते हैं? अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक भाषण-लेख तैयार कीजिए।

(ई) राष्ट्रीय उद्यानों तथा अभयारण्यों का महत्व स्पष्ट कीजिए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर लिखिए।

1. शपथ, घोड़ा, सज़ा (पर्यायवाची शब्द लिखिए।)

SCERT TELANGANA

2. घोड़ा, जंगल, इंसान (वचन बदलकर वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. नीचे दी गयी कहावतों के वाक्य प्रयोग कर अर्थ बताइए।
   - घोड़ा घास से दोस्ती करेगा तो खायेगा क्या
   - उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे
   - एक तन्दुरुस्ती हज़ार नियामत
2. निर्दोष, पर्यावरण, निस्संदेह (विच्छेद कर संधि बताइए।)
3. हिंदी में अनुवाद कीजिए।

Hyderabad is a big city. There is a heavy traffic on its roads. The buses and cars and other vehicles release gasses which pollute the air. There are several industries in and around Hyderabad. These factories release a lot of smoke which pollutes the air.

(इ) 1. निम्न शब्द समूह के लिए एक शब्द (शब्द संक्षेप) लिखिए।

1. जन सामान्य से संबंधित
2. मुक़दमा चलाने वाला ।
3. जो प्रकृति से संबंधित हो।
4. जिसका प्रमाण न दिया जा सके।

2. इन वाक्यों को प्रश्नवाचक में बदलिए।

1. मुझे अपने साथी वकील की दलील पर हँसी आती है।
2. मेरे ऊपर लगाया गया इल्ज़ाम बिल्कुल बेबुनियाद है।
3. क़ानून हवा या पानी पर नहीं मनुष्य पर लागू होता है।
4. न्यायाधीश ने घीसाराम को सज़ा दी कि वह अपने गाँव के चारों ओर पेड़ लगवायें।

(ई) पदबंध मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं - संज्ञा, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण आदि। जैसे-

1. <u>श्याम का बड़ा भाई रमेश</u> कल आया था। (संज्ञा पदबंध)
2. सुनीता <u>परिश्रमी और होशियार</u> लड़की है। (विशेषण पदबंध)
3. आयुष सुरभि का चुटकुला सुनकर <u>हँसता रहा</u>। (क्रिया पदबंध)
4. अरुणिमा <u>धीरे-धीरे चलते हुए</u> वहाँ जा पहुँची (क्रिया विशेषण पदबंध)

उदाहरण के अनुसार पाठ में आये कोई चार पदबंध ढूँढ़कर लिखिए।

परियोजना कार्य

प्रदूषण से पर्यावरण का संरक्षण करने के विविध उपाय बताते हुए एक 'पॉवर पाइंट' (PPT) बनाइए। उसका प्रदर्शन कक्षा में कीजिए।

SCERT TELANGANA

उपवाचक

☆ गुड़ियों का त्यौहार

–डॉ. विजय राघव रेड्डी

स्कूल के खुलने तक वेतन मिलेगा नहीं। बची हुई सारी रकम तुम्हारे पास ही है..... तुम्हारी मरज़ी, गुड़ियाँ खरीदोगी या बच्चों के लिए नये कपड़े सिलवाओगी या अपने लिए नयी साड़ी मँगवाओगी ... जो चाहो सो करो।'' बाज़ार से लौटकर कोट उतारते हुए मैंने 'कांतम्' से कहा।

''हाँ, हाँ, बड़ा खज़ाना रख छोड़ा है तुमने मेरे पास। कुल दस तो रुपये बचे हुए हैं। ऐसा कह रहे हो मानो बहुत बड़े नवाब के बेटे हो।'' कांतम् ने जवाब दिया मेरा मज़ाक बनाते हुए।

''अरे परसों जब 'कोंडपल्ली' जा रहा था, तब कहा होता तो चार-पाँच रुपयों की गुड़ियाँ ले आता।'' आँख मटकाते हुए मैंने कहा मानो किसी बड़े बाप का बेटा हो।

''बस, बस, बनाइए नहीं। कोंडपल्ली में काठ की गुड़ियों के सिवा कुछ नहीं मिलते।'' मुँह बिगाड़ते हुए कांतम् ने कहा।

बात बदलने के उद्‌देश्य से मैंने कहा, ''बस, अब चुप करो, देखा जाएगा।''

''आख़िर मेरी बात तो सुनिए, कुछ भी हो, इस साल कम से कम दस रुपयों की गुड़ियाँ अवश्य खरीदना होगा। पुरानी गुड़ियाँ सारी खराब हो गई हैं। बच्चे बहुत ज़िद कर रहे हैं, नयी गुड़ियों के लिए।'' कांतम् एक छोटा-सा व्याख्यान देती गयी।

मेरे सुनी अनसुनी-सा रह जाने से फिर उसने कहा, ''सुन रहे हो? आपसे ही कह रही हूँ। इस साल नयी गुड़ियाँ ज़रूर खरीदना होगा। अन्यथा इन पुरानी गुड़ियों को देखकर लोग हँसेंगे।''

'अच्छी बात है, उसी के बारे में सोच रहा हूँ।'' कहकर मैं भोजन के लिए उठा।

भोजन के बाद मैं बिस्तर पर लेट कर सोचने लगा - उधार तो अब मिलने का नहीं, कहीं पैसा मिल भी जाए तो भी दस रुपये गुड़ियों के लिए ख़र्च करने की इच्छा नहीं हो रही है। सोचते-सोचते मुझे एक उपाय सूझा। तुरंत कलम और कागज़ लेकर पत्र लिखने लगा।

सेवा में, बंदर

वेंकोजी एण्ड संस कंपनी,

विजयवाड़ा

महोदय,

अपना एक छोटा सा निवेदन करने के लिए मैं आपको यह पत्र लिख रहा हूँ। यदि आप यह स्वीकार कर तदनुसार काम करेंगे तो आपकी कंपनी की उन्नति एवं आपका असीम लाभ होने की संभावना है।

SCERT TELANGANA

मैं आंध्र प्रदेश के लेखकों में थोड़ा बहुत नामी लेखक हूँ। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा, जो मेरी कहानियों को देखते ही न पढ़ता हो। मेरे शहर में एक नया पत्र निकल रहा है। लोगों का कहना है, उस पत्र की 20 हज़ार तक प्रतियाँ निकलती हैं। कहना ही नहीं, सचमुच यह बात सही है। इस स्थिति में आप यह मत सोचिए कि उसे केवल 20 हजार लोग ही पढ़ते हैं। हमारे देश में एक व्यक्ति के खरीदे हुए पत्र को कम से कम 20 लोग पढ़ते हैं।

उस पत्र के संक्रांति विशेषांक के लिए एक कहानी लिखने के लिए संपादक ने मुझसे अनुरोध किया है। उस कहानी में 'कांतम्' द्वारा बच्चों के साथ गुड़ियों की सजावट कराने की एक घटना लिखूँगा।

एक घटना क्या? सारी कहानी में गुड़ियों के बारे में, गुड़ियाँ खरीदना, 'कांतम्' द्वारा मेज़ पर अलंकरण करना, गुड़ियों का वर्णन आदि-आदि होंगे और आगे कहानी इस प्रकार होगी - अड़ोस-पड़ोस सब हमारी गुड़ियों को देखने आएँगे। वे इन गुड़ियों की सुंदरता, निर्माण-चातुरी, बढ़िया-फिनिश और टिकाऊपन देखकर मुग्ध होकर कांतम् से पूछेंगे कि आपने इन गुड़ियों को कहाँ से खरीदा। कांतम् उनसे कहेगी कि सारी गुड़ियाँ विजयवाड़ा के प्रसिद्ध 'वेंकोजी एण्ड संस' से खरीदी गयी हैं, और वहाँ गुड़ियाँ बहुत सस्ते दाम पर मिलती हैं।

कहानी में इस तरह लिखने से गुड़ियों का जितना प्रचार होगा और आपको जितना लाभ होगा, वह आप सोच ही लीजिए। उस पत्र के निकलते ही उसे 4 लाख लोग पढ़ेंगे। पढ़कर यह जान लेंगे कि आपकी कंपनी में अच्छी गुड़ियाँ सस्ते दाम पर मिलती हैं।

लेकिन एक कठिनाई है। मुझे यह पता नहीं है कि गुड़ियाँ कितनी प्रकार की होती हैं और आपके यहाँ कौन-कौन-सी गुड़ियाँ बिकती हैं। जब ये बातें मुझे ज्ञात नहीं है, मैं उनका वर्णन कैसे कर सकूँ? इसलिए आप एक काम कीजिएगा तो अच्छा रहेगा। आपके पास जो-जो गुड़ियाँ हैं, उनमें से प्रत्येक नमूने (मॉडल) की एक-एक-गुड़ियाँ मेरे पास भिजवाइएगा-अर्थात् कोंडपल्ली की काँच, सेल्युलायड, रबड़ और चीनी मिट्टी की गुडियों के नमूने आदि-आदि। यदि इनमें भी अलग-अलग डिजाइन हो तो उनमें से भी एक-एक। यदि प्रत्येक डिजाइन में तरह-तरह की गुड़ियाँ-कुत्ते, बिल्ली, सिंह आदि हो तो उनमें से भी एक-एक भिजवाइए। उन सबका सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण करके उनके विस्तृत वर्णन के साथ मैं कहानी लिखूँगा। 4 लाख लोग आपकी गुड़ियों की कहानी उस पत्र में पढ़कर आपकी दुकान के पास भीड़ लगाएँगे। गुड़ियाँ खरीदने के लिए। आप जैसे बड़े व्यापारी लोगों को विज्ञापन की महत्ता के बारे में अलग-अलग बताने की ज़रूरत नहीं है।

आशा है कि आप पत्र में उल्लिखित विधि के अनुसार गुड़ियाँ भिजवाएँगे।

उत्तराभिलाषी

भवदीय

वेंकटराव।

SCERT TELANGANA

पत्र लिखने के बाद महसूस हुआ कि भारी बोझ उतर गया। अपनी इस बुद्धिमानी पर मुझे गर्व हुआ। तभी 'कांतम्' को जगा कर यह बात बताने की इच्छा हुई। फिर थोड़ी देर सोचकर निश्चय कर लिया कि अभी उसे बताना ठीक नहीं है। अगले दिन भी यह बात उसे बताने की इच्छा नहीं हुई। हाँ, इतना तो बता दिया कि संक्रांति के लिए अवश्य गुड़ियाँ आएँगी। 'कांतम्' उससे संतुष्ट हुई। दो दिन के बाद 'वेंकोजी एण्ड संस कंपनी' से चिट्ठी आयी।

सेवा में, विजयवाडा

महोदय जी,

बन्दर।

महोदय,

आपने हमारे ऊपर जो एहसान दिखाया है, उसके लिए हम आभारी हैं। हमारी गुड़ियों की विशेषता के बारे में अब तक बहुतों को मालूम है और हमारा व्यापार भी आपकी कृपा से ठीक ही चल रहा है।

फिर भी आप जैसे मूर्धन्य लेखक की कहानियों द्वारा हमारी गुड़ियों के बारे में, एक जनप्रिय पत्र में छपकर सबको विस्तृत विवरण मिलना, वास्तव में हमारे लिए अधिक लाभप्रद बात होगी, यह हमारा विश्वास है।

यह अधिक उचित ही है कि आप स्वयं हमारी गुड़ियों को देखकर उनका वर्णन करें। आपका पत्र हमने अपने मालिक के सम्मुख प्रस्तुत किया है। वे यथोचित कार्य करके आपको यथा शीघ्र इसकी सूचना देंगे।

धन्यवाद सहित

भवदीय

रामय्या

कृते-वेंकोजी एण्ड संस कंपनी

चिट्ठी मिलते ही जितना संतोष हुआ, उसका वर्णन मैं नहीं कर सकता। उसके बाद यह प्रश्न सामने आया कि बचे हुए रुपयों से बच्चों के लिए कपड़े खरीदना है या कांतम् के लिए साड़ी लेना है?

''अरे बच्चों के लिए क्या, जो कुछ भी कपड़े हैं सो ठीक ही है। रेशमी साड़ी खरीदिएगा मेरे लिए। चार-पाँच साल के बाद वह हमारी लड़की के लिए भी काम में आ जाएगी। कांतम् ने सलाह दी।'' मैंने एक पत्र लिखा।

चेल्लाराम गंगाराम कंपनी, बंदर

SCERT TELANGANA

मद्रास,

महोदय,

पेद्दापुरम् रेशमी साड़ी या पुदुच्चेरी रेशमी साड़ी इनमें से कोई एक, जिसका दाम दस रुपये से अधिक न हो, वी.पी.पी. द्वारा भेजने की कृपा करें।

भवदीय

वेंकटराव

एक और पत्र अपने साले साहब को लिखा।

चिरंजीव रामराव, बंदर

शुभाशीश,

इस संक्रांति को बच्चे गुड़ियों का त्यौहार मनाने वाले हैं। इसके लिए स्वदेशी गुड़ियों के अतिरिक्त, जापान, जर्मनी आदि विदेशों की विचित्र गुड़ियाँ मँगा रहा हूँ। उन सबको ठीक तरह से सजाने के लिए तुम्हारी बहन सारा प्रबंध कर रही है। तुम्हें सपरिवार आकर इन सुंदर गुड़ियों का दृश्य अवश्य देखना होगा। आशा है, तुम दोनों बच्चों के साथ संक्रांति के दिन आओगे।

तुम्हारा

वेंकटराव

कांतम् ने भी अपनी छोटी बहन को एक पत्र लिखा।

बहन, बंदर

यह प्रसन्नता की बात है कि ईश्वर की कृपा से जो कुछ मिला, उससे तुम तृप्ति का अनुभव करते हुए परिवार के साथ सुखी जीवन बिता रही हो। गुंटूर में जब हम मिले थे, उस समय तुमने मुझसे कहा था कि तुम्हारे बच्चे गुड़ियों के लिए जिद करते हैं। इस संक्रांति के लिए तुम्हारे जीजाजी भी अनेक चित्र-विचित्र गुड़ियाँ मँगा रहे हैं। मैं सोच रही थी कि हमारी पुरानी गुड़ियाँ सारी तुम्हें भेज दूँ। इतने में हनुमंतराव गुंटूर जाते हुए मुझसे कहने आया था कि कोई समाचार तुम्हारे लिए हो तो बताऊँ, तो मैंने उसके हाथ उन गुड़ियों को तुम्हारे पास भेजा। गुड़ियों के मिलते ही बच्चों की कुशलता के बारे में पत्र लिखो। बच्चों को प्यार।

तुम्हारी

कांतम्

अब तक 'वेंकोजी कंपनी' से न कोई पत्र आया और न कोई रेलवे रसीद। मद्रास से तो रेशम

SCERT TELANGANA

की साड़ी आई। उस वी.पी.पी. को छुड़ाकर मैंने उसे कांतम् को दिया तो वह प्रसन्न हुई। मुझसे उसने पूछा– 'क्यों जी, साड़ी तो आ गई, गुड़ियाँ कब आएँगी?''

''वे भी आ जाएँगी - आज या कल'' मैंने कहा, ''समुद्रगुप्त की तरह मानो हार को कभी नहीं जानते हो।''

''पैसा तो नहीं आपके पास, तो खरीदेंगे कैसे?'' कांतम् ने पूछा, कुछ संदेह से।

''यह जिम्मेदारी मेरे ऊपर छोड़ दो।'' मैंने कहा ''वे आज या कल आ जाएँगी - बस।''

''हाँ, गुड़ियाँ नहीं आएँगी तो मैं चुप नहीं रहूँगी।'' कांतम् ने प्रत्युत्तर दिया। मैं सोचने लगा कि अब तक 'वेंकोजी एण्ड संस कंपनी से कोई पार्सल क्यों नहीं आया? रेलवे पार्सल भेजने से खर्च ज़्यादा होगा। संभवतः यह समझ कर वे आगा-पीछा कर रहे होंगे। खैर, एक पत्र लिखना ठीक होगा, समझ कर मैंने उनके नाम एक और पत्र लिखा।

वेंकोजी एण्ड संस कंपनी   बंदर

विजयवाडा

महोदय,

अभी आपसे गुड़ियों के भेजने के बारे में कोई उत्तर नहीं आया। इसका कारण मेरी समझ में नहीं आ रहा है। मैं कल शुक्रवार को तेनाली जा रहा हूँ। वहाँ से फिर शनिवार को सबेरे की गाड़ी से 'बंदर लौटूँगा। आप गुड़ियों को पैक कराके अपने आदमी के हाथ गाड़ी के समय विजयवाड़ा स्टेशन भेज देंगे तो मैं उन्हें ले लूँगा।

भवदीय

वेंकटराव

हमारी लड़की सबसे कह रही है कि पिताजी शनिवार को चित्र विचित्र गुड़ियाँ देंगे। मेरी पत्नी ने भी सभी अड़ोस-पड़ोस से कह दिया कि मैंने किसी बड़ी कंपनी से चित्र-विचित्र गुड़ियाँ मँगाई। सब प्रतीक्षा करने लगे कि शनिवार कब आएगा।

मैंने उस दिन रात को स्वप्न देखा कि हमारा घर चित्र-विचित्र गुड़ियों से सज गया। शहर के सारे लोग आकर उत्सुकता से पूछ रहे हैं कि इतनी अच्छी गुड़ियाँ कहाँ से मँगाई गयी। मेरी पत्नी और मेरे बच्चों के आनन्द की सीमा न रही। लोग कहते हैं कि जो स्वप्न में देखा जाता है, वह सही नहीं हो सकता। मुझे संदेह हुआ कि कहीं मेरा स्वप्न स्वप्न न रह जाए।

शुक्रवार की शाम की डाक से उस कंपनी से पत्र आ ही गया। पत्र खोलते हुए हाथ काँपने लगा। भगवान को स्मरण कर के पत्र खोल कर पढ़ने लगा -

सेवा में,   विजयवाडा

SCERT TELANGANA

वेंकटराव,

बंदर

महोदय,

आपके दोनों कृपा पत्र हमारे मैनेजर ने मुझे दिखाए। आपने हमारे ऊपर जो दया दिखायी है, उसके लिए हम आपके अत्यंत कृतज्ञ हैं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि आप जैसे लेखकों की रचनाओं के द्वारा हमारी गुड़ियों की प्रशंसा सुनकर लोग हमारी चीज़ों को खूब खरीदेंगे और हमारे व्यापार की श्रीवृद्धि होगी।

आपने लिखा है कि आप स्वयं गुड़ियों को देखकर उनकी प्रशंसा लिखेंगे। इससे बढ़ कर संतोष की बात क्या हो सकती है? तेनाली से बंदर आते समय आप विजयवाडा होते हुए ही आएँगे। स्टेशन से हमारी दुकान बहुत ही नज़दीक है। आप कृपा करके स्टेशन उतरकर हमारी दुकान पधारिए। आपके स्वागतार्थ स्टेशन पर मैं अपने एक नौकर को भेज दूँगा। आप स्वयं दुकान में पधार कर स्वयं सारी गुड़ियों का निरीक्षण करेंगे तो बहुत उत्तम रहेगा। उस दिन आपको दुकान की सारी गुड़ियों को दिखाने के लिए मैं व्यवस्था करवा रहा हूँ। हाँ, साथ ही एक और विनती है, आप उस दिन शाम को मेरे साथ कॉफी पीने की कृपा करें तो आभारी रहूँगा।

कष्ट के लिए क्षमा।

भवदीय

वेंकोजी

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ - दस पंक्तियों में लिखिए।

1. लेखक ने वेंकोजी एण्ड संस कंपनी से कुछ गुड़ियों के नमूने भिजवाने के लिए क्यों लिखा होगा?
2. संक्रांति त्यौहार में गुड़ियों का क्या महत्व है?
3. वेंकोजी एण्ड संस कंपनी के मालिक का पत्र पढ़ने के पश्चात लेखक की क्या प्रतिक्रिया रही होगी? स्पष्ट कीजिए।
4. यह तेलुगु से अनूदित कहानी है। अन्य भाषा की ऐसी ही कोई एक कहानी ढूँढ़कर लिखिए।

SCERT TELANGANA

इकाई - IV

10. कन्यादान

- ऋतुराज

उन्मुखीकरण

रानी ने राजा से कहा कि हम ने बहुत सारे दान किये हैं, बहुत से पुण्य भी किये, लेकिन एक पुण्य कार्य बाकी है। राजा ने आश्चर्य से पूछा- "हमने कौनसा पुण्य कार्य नहीं किया है? महारानी!" रानी ने बताया "कन्यादान" महाराज! "हाँ, हाँ महारानी! हम यह दान भी शीघ्र ही करेंगे। मैं आज से ही हमारी कन्या के लिए एक योग्य वर की तलाश शुरु करूँगा। वर के मिलते ही हम धूम-धाम से उसके हाथ पीले करेंगे।"

प्रश्न

1. महारानी ने किस पुण्य कार्य का उल्लेख किया?
2. कन्यादान के अलावा और कौन-कौन से दान होते हैं?
3. 'कन्यादान' शब्द की सार्थकता के बारे में बताइए।

उद्देश्य

इस कविता में रमणीय सौन्दर्य है। कविता में भाव एवं कल्पना प्रेरक स्थितियों का विश्लेषण है । छात्र में गीत, कविता आदि की रचना शैली का विकास करना, स्त्री साधिकारता की भावना का विकास करना, रूढ़िवादी परंपराओं से हट कर स्त्री को स्व अस्तित्व सिद्ध करने के लिए प्रेरित करना इस कविता का उद्देश्य है।

विधा विशेष

- इस कविता में नारी की मानसिक दशा का चित्रण किया गया है। साथ ही जीवन के साधारण दृश्यों को अंकित करने का प्रयास किया गया है।

कवि परिचय

ऋतुराज का जन्म सन् 1940 में भरतपुर में हुआ। राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से उन्होंने अंग्रेजी में एम.ए. किया। चालीस वर्षों तक अंग्रेजी साहित्य के अध्यापन के बाद अब सेवानिवृत्ति लेकर वे जयपुर में रहते हैं। उनके अब तक आठ कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जिनमें एक मरणधर्मा और अन्य, पुल पर पानी, सुरत निरत और लीला मुखारविंद प्रमुख हैं। उन्हें सोमदत्त, परिमल सम्मान, मीरा पुरस्कार, पहल सम्मान तथा बिहारी पुरस्कार मिल चुके हैं।

मुख्यधारा से अलग समाज के हाशिए के लोगों की चिंताओं को ऋतुराज ने अपने लेखन का विषय बनाया है। उनकी कविताओं में दैनिक जीवन के अनुभव का यथार्थ है और वे अपने आसपास रोज़मर्रा में घटित होने वाले सामाजिक शोषण और विडंबनाओं पर निगाह डालते हैं। यही कारण है कि उनकी भाषा अपने परिवेश और लोक जीवन से जुड़ी हुई है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

विषय प्रवेश : स्त्री और पुरुष समाज रूपी शक्ति के दो रूप हैं। समाज के निर्माण में दोनों का समान महत्व है। वेदों में स्त्री की तुलना देवी से की गयी है। कहते हैं कि जहाँ नारी की पूजा की जाती है वहाँ देवता बसते हैं। लेकिन सामाजिक विषमताओं के कारण कई कुरीतियाँ पनप रही हैं। कन्यादान के समय माँ बेटी को जो सीख देती हैं उसका मर्मस्पर्शी वर्णन कविता में किया गया है।

कितना प्रामाणिक था उसका दुख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो

लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की
कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के

माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

प्रश्न

1. कन्यादान के समय माँ को लड़की अंतिम पूँजी क्यों लगी? बताइए।
2. 'पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की' इस पंक्ति से क्या तात्पर्य है?

3. सुख-दुख के समय हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए?
4. स्त्रियों में हम आत्मसम्मान की भावना कैसे जगा सकते हैं?

SCERT TELANGANA

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

1. 'कन्यादान' कविता की रचना के पीछे कवि का मुख्य उद्देश्य क्या हो सकता है? बताइए। चर्चा कीजिए।
2. कन्यादान करना क्या वास्तव में कन्या का दान करना है? विवाह के लिए 'कन्यादान' शब्द का प्रयोग करना कहाँ तक उचित है? पक्ष-विपक्ष में चर्चा कीजिए।

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. इस कविता के कवि कौन हैं? उन्होंने समाज के किन विषयों को अपनी रचनाओं का आधार बनाया है?
2. 'आग रोटियाँ सेंकने के लिए हैं, जलने के लिए नहीं।' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
3. कवि ने इन शब्दों का प्रयोग किसके लिए किया है–
   (अ) अंतिम पूँजी (आ) स्त्री जीवन के बंधन (इ) पाठिका
4. कवि ने बेटी के स्वभाव की क्या विशेषताएँ बतायी हैं?

(इ) पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मैं एक जगी हुई स्त्री हूँ,
मैंने अपनी राह देख ली है
अब मैं लौटूँगी नहीं।
मैंने ज्ञान के बंद दरवाज़े खोल दिये हैं
सोने के गहने तोड़कर फेंक दिये हैं
भाइयों, मैं अब वह नहीं हूँ जो पहले थी
मैं एक जगी हुई स्त्री हूँ
मैंने अपनी राह देख ली है।

प्रश्नः
- 'भाइयों, मैं अब वह नहीं हूँ, जो पहले थी।' कविता में स्त्री का ऐसा कहने का क्या कारण होगा?
- सोने के गहने तोड़कर फेंकने की बात कौन कर रहा है? क्यों?
- उपर्युक्त पद्यांश और 'कन्यादान' कविता के भाव में क्या समानता है?
- इस कविता को उचित शीर्षक दीजिए।

(ई) निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए

1. लड़की अभी सयानी नहीं थी
   अभी इतनी भोली सरल थी
2. आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
   जलने के लिए नहीं

SCERT TELANGANA

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए।

1. माँ लड़की को पाल-पोस कर बड़ा करती है। वह घर में सबकी लाड़ली होती है। उसके विवाह पर उसको विदा करते समय परिवार वालों की क्या प्रतिक्रिया होती है?
2. माँ ने ऐसा क्यों कहा होगा कि लड़की होना पर लड़की जैसी दिखायी मत देना?
3. माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' लग रही थी। इस वाक्य के आधार पर बताइए कि परिवार में बेटी का क्या महत्व है?

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर दस-बारह पंक्तियों में लिखिए।

1. कवि ऋतुराज ने इस कविता के माध्यम से समाज की किस स्थिति की ओर संकेत किया है और क्यों?
2. आजकल कुछ लोग वैवाहिक संबंधों का चुनाव धन-दौलत के आधार पर करते हैं जो अनुचित है। ऐसे लोगों को आप क्या सुझाव देंगे?

(इ) 'दहेज' समाज की एक कुरीति है। इसके निर्मूलन पर एक लेख लिखिए।

(ई) आज महिलाएँ घर और बाहर की ज़िम्मेदारी बख़ूबी निभा रही हैं। घर और समाज के विकास में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। इस पर अपने विचार लिखिए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार अभ्यास कीजिए।

1. बाँचना, सयानी, आभास (अर्थ लिखिए।)
2. वस्त्र, प्रकाश, आभूषण (पर्याय शब्द लिखिए।)
3. पाठिका, लेखक, कवि (लिंग बदलकर वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. प्रामाणिक, शाब्दिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, औद्योगिक, भौगोलिक
   ('इक' प्रत्यय का प्रयोग समझिए और शब्द में होने वाले परिवर्तन पर ध्यान दीजिए।)
2. वस्त्राभूषण, कन्यादान, प्राणाधार (विग्रह कर समास पहचानिए।)

(इ) अंतिम पूँजी, धुँधला प्रकाश, लयबद्ध पंक्ति (पद परिचय दीजिए।)

(ई) पाठ में आये संज्ञा शब्दों से पाँच विशेषण बनाइए।

परियोजना कार्य

विभिन्न धर्मों एवं संप्रदायों में विवाह की अलग-अलग रीतियाँ हैं। इनकी जानकारी का संकलन कर कक्षा में प्रदर्शित करें।

SCERT TELANGANA

उपवाचक

☆ साये

–हिमांशु जोशी

नन्हे-नन्हे दुधमुँहे बच्चे! अकेली रुग्ण पत्नी! नाते-रिश्ते का ऐसा कोई नहीं, जो ज़रुरत पर काम आ सके! पति सुदूर अफ्रिका में, अस्पताल में बीमार! महीनों तक कोई पत्र नहीं....

हर रोज़ वे रंग-बिरंगे टिकटोंवाले पत्र की राह देखते परंतु डाकिया भूल से भी इधर झाँकता न था।

हाँ, बहुत लंबे अर्से के बाद एक दिन एक पत्र मिला। बड़ा अजीब-सा था यह, बहुत करुण, बहुत दर्दभरा। नैरोबी के किसी अस्पताल से। लिखा था– रंग-भेद के कारण पहले यूरोपियन लोगों के अस्पताल में जगह नहीं मिली किंतु बाद में कुछ कहने-कहलवाने पर स्थान तो मिला पर इस अनावश्यक विलंब के कारण रोग काबू से बाहर हो गया है। डॉक्टरों ने ऑपरेशन की सलाह दी है किंतु उसमें भी अब सार लगता नहीं। चंद दिनों की मेहमानदारी है....। उसके बाद तुम लोगों का क्या होगा, कुछ सूझता नहीं। पास होते तो.... लेकिन.... भरोसा रखना.... भगवान सबका रखवाला है.... जिसने पैदा किया है, वह परवरिश भी करेगा....।

पत्नी पत्र पढ़ती.... रोती... अबोध बच्चे रुलाईभरी आँखों से माँ का मुँह ताकते।

फिर चिट्ठी पर चिट्ठियाँ डालीं उन्होंने, फिर तार, तब कहीं केन्या की मोहर लगा एक विदेशी लिफ़ाफ़ा मिला। लिखा था, परमात्मा का ही यह चमत्कार है कि हालत सुधर रही है। एक नया जन्म मिला है....।

थोड़े दिनों बाद फिर पत्र आया, पहले की ही तरह किसी से बोलकर लिखवाया हुआ– हालत पहले से अच्छी है। चिंता की अब कोई बात नहीं।

हमेशा की तरह कुछ रुपये भी पहुँच गए इस बार।

बच्चों के मुरझाए मुखड़े खिल उठे। रुग्ण पत्नी का स्वास्थ्य तनिक सुधार की ओर बढ़ा। चिट्ठियाँ नियमित रुप से आती रहीं। रुपये भी पहुँचते रहे।

उसने लिखा था, हाथ के ऑपरेशन के बाद अब वह पत्र नहीं लिख पाता इसलिए किसी से लिखवा लेता है। इधर एक नया टाइपराइटर खरीद लिया है उसने। अपने कारोबार का भी कुछ विस्तार कर रहा है– धीरे-धीरे। कुछ नयी ज़मीन खरीदने का भी इरादा है– शहर के पास। एक 'फ़ार्म हाउस' की योजना है....

घर के बारे में, पत्नी के बारे में, बच्चों की पढ़ाई के बारे में कितने ही प्रश्न थे! बड़ी

SCERT TELANGANA

उत्साहजनक बातें थीं— विस्तार से। इतना अच्छा पत्र पहले कभी भी न आया था। सबको स्वाभाविक रुप से प्रसन्नता हुई।

डूबती नाव फिर पार लग रही थी— धीरे-धीरे।

लगभग तीन बरस बीत गए।

घर की ओर से पत्र पर पत्र जाते रहे कि अब उसे थोड़ा-सा समय निकालकर कभी घर भी आना चाहिए। बच्चे उसे बहुत याद करते हैं। उसे देखनेभर को तरसते हैं। जो-जो हिदायतें चिट्ठियों में लिखी रहती हैं, उनका अक्षरशः पालन करते हैं। माँ को किसी किस्म का कष्ट नहीं देते; कहना मानते हैं; पढ़ने में बहुत मेहनत करते हैं। अज्जू कहता है कि बड़ा होकर वह भी पापा की तरह अफ़्रीका जाएगा। इंजीनियर बनेगा। पापा के साथ खूब काम करेगा। अब वह पूरे बारह साल का हो गया है। छठी कक्षा में सबसे अव्वल आया है। मास्टर जी कहते हैं कि उसे वज़ीफ़ा मिलेगा। उसी से अपनी आगे की पढ़ाई जारी रख सकता है। तनु अब अठारह पार कर रही है। उसका भी ब्याह करना है। कहीं कोई अच्छा-सा लड़का, अपनी जात-बिरादरी का मिले तो चल सकता है...

चिट्ठी के जवाब में बहुत-सी बातें थीं। लिखा था कि इस समय तो नहीं, हाँ, अगले साल तनु के ब्याह पर अवश्य पहुँचेगा। योग्य वर तो यहाँ भी मिल सकते हैं पर विदेश में, अफ़्रीका जैसे देश में, लड़की को ब्याहने के पक्ष में वह नहीं है। दहेज की चिंता न करना। वहीं वर की खोज करना।

वर की तलाश में अधिक भटकने की आवश्यकता न हुई। आसानी से खाता-पीता घर मिल गया। शायद इतना अच्छा घराना न मिलता लेकिन इस भरम से कि कन्या का बाप अफ़्रीका में सोना बटोर रहा है, सब सहज हो गया।

शादी की तिथि निश्चित हो गई। नैरोबी से पत्र आया कि वह समय पर पहुँच रहा है। गहने, कपड़े सब बनवाकर वह साथ लाएगा लेकिन शादी के समय वह चाहकर भी पहुँच नहीं पाया। विवशताओं से भरा लंबा पत्र आया कि इस बीच जो एक नया कारोबार शुरु किया है, उसमें मज़दूरों की हड़ताल चल रही है। ऐसे संकट के समय में, यह सब छोड़कर वह कैसे आ सकता है! हाँ, गहने, कपड़े और रुपये भिजवा दिये हैं। वर-वधू के चित्र उसे अवश्य भेजें, वह प्रतीक्षा करेगा।

खैर, ब्याह हो गया, धूमधाम के साथ। विवाह के सारे चित्र भी भेज दिये। अज्जू ने इस वर्ष कई इनाम जीते। हाई स्कूल की परीक्षा में ज़िले में सर्वप्रथम रहा। खेलों में भी पहला। बहुत-से सर्टिफ़िकेट मिले, वज़ीफा मिला। इनाम में मिली सारी वस्तुओं के फ़ोटो वे पापा को भेजना न भूले।

बदले में क़ीमती कैमरा आया। गरम सूट का कपड़ा आया। सुंदर घड़ी आयी। और मर्मस्पर्शी लंबा पत्र आया। लिखा था कि वह बच्चों की उम्मीद पर ही जी रहा है। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा

रहना चाहिए। बच्चे इसी तरह नाम रोशन करते रहें– उनके सहारे वह ज़िंदगी की डोर कुछ और लंबी खींच लेगा...यह सारा करोबार सब उन्हीं के लिए तो है!

पर, अनेक वादे करने पर भी घर आना संभव न हो पाता। हर बार कुछ-न-कुछ अड़चनें आ जातीं और उसका जाना स्थगित हो जाता।

पाँवों पर पंख बाँधकर समय उड़ता रहा– अबाध गति से।

बच्चों ने लिखा कि यदि उसका इधर आ पाना कठिन हो रहा है, तो वे ही सब अफ़्रीका आने की सोच रहे हैं। कुछ वर्ष वहीं बिता लेंगे।

उत्तर में केवल इतना ही था कि काम बहुत बढ़ गया है। नैरोबी, मोम्बासा के अलावा अन्य स्थानों पर भी उसे नियमित रूप से जाना पड़ता है। यहाँ विश्वास के आदमी मिलते नहीं इसलिए उसे स्वयं ही खटना पड़ता है। यहाँ की आबोहवा, बच्चों की पढ़ाई, अनेक प्रश्न थे। अज्जू जब तक अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर लेता, तब तक कुछ नहीं हो सकता। समय निकालकर कभी वह स्वयं घर आने का प्रयास करेगा। बच्चों की बहुत याद आती है। घर की बहुत याद आती है। लेकिन, विवशता है, क्या किया जाए!

अंत में एक दिन वह भी आ पहुँचा जब अज्जू ने अपनी पढ़ाई पूरी कर ली। कहीं अच्छी नौकरी की तलाश शुरू हुई। पर पिता के अब भी घर आने की संभावना न दिखी तो उसने लिखा- अम्मा बीमार रहती हैं, बहुत कमज़ोर हो गई हैं। एक बार, अंतिम बार देखनाभर चाहती हैं।

प्रत्युत्तर में विस्तृत पत्र मिला। इलाज के लिए रुपये भी। परंतु इस बार अज्जू ने ही जाने का कार्यक्रम बना लिया। अकस्मात पहुँचकर पापा को चौंकाने की पूरी-पूरी योजना के साथ।

टिकट खरीद लिया। पासपोर्ट, वीज़ा भी सब देखते-देखते बन गया और एक दिन दिल्ली से वह विमान से रवाना भी हो गया।

उसके मन में गहरी उत्कंठा थी कि पापा उसे देखकर कितने चकित होंगे! उन्होंने कल्पना भी न की होगी कि एकाएक वह इतनी दूर एक दूसरे देश में इतनी आसानी से आ जाएगा। उनकी निगाहों में तो अभी वह उतना ही छोटा होगा, जब वह निक्कर पहनकर आँगन में गुल्ली-डंडा खेलता था!

नैरोबी के हवाई अड्डे पर उतरकर वह सीधा उसी पते पर गया, जो पत्र में दिया हुआ था परंतु वहाँ ताला लगा था। हाँ, उसके पिता की पुरानी, धुँधली नेमप्लेट अवश्य लगी थी।

आसपास पूछताछ की तो पता चला कि एक वृद्ध भारतीय अप्रवासी अवश्य यहाँ रहते हैं। रात को देर से दफ़्तर से घर लौटते हैं। किसी से मिलते-जुलते नहीं। निपट अकेले हैं।

SCERT TELANGANA

वह बाहर बरामदे में रखी बेंच पर बैठा प्रतीक्षा करता रहा।

रात को एक बूढ़ा व्यक्ति ताला खोलने लगा तो देखा- एक युवक सामान के सामने बैठा ऊँघ रहा है।

उसका नाम-धाम पूछा तो उसे अपनी बाँहों में भर लिया।

बड़े उत्साह से उसका स्वागत किया।

भोजन के बाद वे उसे अपने कमरे में ले गये। दीवार की ओर उन्होंने इंगित किया— एक नन्हा बच्चा माँ की गोद में ढुलका किलक रहा है।

''यह किसका चित्र है?''

युवक ने गौर से देखा। कुछ झेंपते हुए कहा, ''मेरा।''

वृद्ध इस बार कुछ और ज़ोर से खिलखिलाये, ''मेरे बच्चे, तुम इतने बड़े हो गये हो! सच, कितने साल बीत गये! जैसे कल की बात हो!'' उन्होंने उसके चेहरे की ओर देखा, ''तुम शायद नहीं जानते, तुम्हारे पिता का मैं कितना जिगरी दोस्त हूँ। कितने लंबे समय तक हम साथ-साथ रहे, दो दोस्तों की तरह नहीं, सगे भाइयों की तरह। उसी ने मुझे हिंदुस्तान से यहाँ बुलाया था। बड़ी लगन से सारा काम सिखलाया। साथ-साथ साझे में हमने यह कारोबार शुरू किया। नैरोबी की आज यह एक बहुत अच्छी फ़र्म है। यह सब उसी की बदौलत है...'' कहते-कहते वह ठिठक गये।

उसका हाथ अपने हाथों में थामते हुए बोले,

''तुम्हारी माँ कैसी हैं?''

''अच्छी हैं.....।''

''भाई-बहन....।''

''सब ठीक हैं।''

''कहीं कोई कठिनाई तो नहीं?''

''नहीं। सब ठीक है।''

''बस, यही मैं चाहता था.... यही।'' हौले से उन्होंने उसका हाथ सहलाया। देर तक शून्य में पलकें टिकाये कुछ सोचते रहे। कुछ क्षणों का मौन भंग कर खोए-खोए-से बोले, ''देखो बेटे, तिनकों के सहारे तो हर कोई जी लेता है। लेकिन, कभी-कभी हम तिनकों के साये मात्र के आसरे, भँवर से निकलकर किनारे पर आ लगते हैं। हमारा जीवन कुछ ऐसे ही तंतुओं के सहारे टिका रहता है। यदि वे टूट जाएँ, छिन्न-छिन्न होकर बिखर जाएँ, तो पलभर में पानी के बुलबुलों की तरह सब समाप्त हो जाता है...।''

SCERT TELANGANA

"...ज़रा सोचो बेटे!" वे खाँसे, "अगर तुम्हारे पिता की मृत्यु आज से 10-15 साल पहले हो जाती, तो क्या होता! भले ही वे एक अच्छी रक़म तुम्हारे नाम छोड़ जाते।" उन्होंने युवक के असमंजस में डूबे, गंभीर चेहरे की ओर देखा, "रुपये रेत में गिरे पानी तरह कहीं विलीन हो जाते और तुम अनाथ हो जाते! तुम्हारी माँ घुल-घुलकर कब की मर चुकी होती। तुम इतने हौसले से पढ़ नहीं पाते। जहाँ तुम आज हो, वहाँ तक नहीं पहुँचे पाते। निराशा की, हताशा की, असुरक्षा की इतनी गहरी खाई में होते, कि वहाँ से अँधेरे के अलावा और कुछ भी न दीखता तुमको...।"

उन्होंने अपने सूखे होठों को जीभ की नोक से भिगोया, "हम दुर्बल होते हुए, असहाय, अकेले होते हुए भी कितने-कितने बीहड़ वनों को पार कर जाते हैं, सहारे की एक अदृश्य डोर के सहारे..."

उनका गला भर आया, "तुम्हारे पिता तो तभी गुज़र गये थे। अपने साझे कारोबार से, उनके ही हिस्से के पैसे तुम्हें नियमित रूप से भेजता रहा। कितने वर्षों से मैं इसी दिन के इंतज़ार में था... अब तुम बड़े हो गये हो। अपने इस कारोबार में मेरा हाथ बँटाओ। तुम सरसब्ज़ हो गये, मेरा वचन पूरा हो गया जो मैंने उसे मरते समय दिया था...।" उनका गला भर आया। डबडबाई आँखों से वे दीवार पर टँगे एक धुँधले-से चित्र की ओर न जाने क्या-क्या सोचते हुए देखते रहे!

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस पंक्तियों में लिखिए।

1. अज्जू के बारे में घर से लिखे गये पत्र में क्या-क्या बताया गया?
2. अज्जू के पिता के मित्र का स्वभाव कैसा था?
3. अज्जू अपने पिता से क्यों मिलना चाहता था?
4. अज्जू के विचारों पर अपने अभिप्राय बताइए।
5. इस कहानी के द्वारा हिमांशु जोशी क्या बताना चाहते हैं?

SCERT TELANGANA

11 बाट की पहचान

- हरिवंशराय बच्चन

उन्मुखीकरण

ईश्वर की सृष्टि में प्रत्येक कण का अपना अस्तित्व होता है। प्रत्येक को कुछ न कुछ करने के लिए ही परवरदिगार ने बनाया है। उन्हीं में मैं भी हूँ। उसकी मदद से मैंने जो कुछ भी हासिल किया है, वह उसकी इच्छा की अभिव्यक्ति ही तो है। कुछ विलक्षण गुरुओं और साथियों के माध्यम से ईश्वर ने मुझ पर यह कृपा की और जब मैं इन सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों के प्रति अपनी श्रद्धा एवं सम्मान व्यक्त करता हूँ तो मैं उसकी महिमा का ही गुणगान कर रहा होता हूँ। ये सब रॉकेट और मिसाइलें उसी के काम हैं, जो 'कलाम' नाम के एक छोटे से व्यक्ति के माध्यम से ख़ुदा ने कराये हैं। इसलिए भारत के कई कोटि जनों को कभी भी छोटा या असहाय महसूस नहीं करना चाहिए। हम सब अपने भीतर दैवीय शक्ति लेकर जन्में हैं। हम सब के भीतर ईश्वर का तेज़ छिपा है। हमारी कोशिश इस तेज़-पुंज को पंख देने की रहनी चाहिए, जिससे यह चारों ओर अच्छाइयाँ एवं प्रकाश फैला सकें।

-ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ('अग्नि की उड़ान' पुस्तक के लिए आभार में लिखे गये शब्द)

प्रश्न

1. सृष्टि के कण-कण में किसका अस्तित्व है?
2. 'मार्गदर्शन' या 'परिश्रम' के द्वारा सफलता मिलती है। इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
3. अपने सपनों को साकार करने के लिए आप कौन-कौन से प्रयास करेंगे?

उद्देश्य

इस कविता द्वारा सामाजिक परिवेश से विद्यार्थियों को परिचित कराना, कवि को जो-जो अनुभव हुए उनको फिर से बालकों के अन्तःकरण में उद्घाटित करना तथा कविता के प्रति रुचि बढ़ाना ही मुख्य उद्देश्य है। जीवन की विषमताओं को एक सामान्य अनुभूति के स्तर पर सुलझाने का प्रयास इस कविता में किया गया है।

विधा विशेष

जीवन में कोई न कोई लक्ष्य होता है। वही लक्ष्य जीवन पर्यन्त बनाए रखना चाहिए। कविता गहन वेदना एवं दार्शनिकता से भरी है। मनुष्य का जीवन अतीत के बिना अधूरा तथा वर्तमान के प्रति उदासीनता से भरा है। अतीत उसे सबल बनाता है । जबकि वर्तमान उसे गतिशील बने रहने की प्रेरणा देता है। यही इस कविता की विशेषता है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

कवि परिचय

हिंदी काव्य जगत के लोकप्रिय कवि हरिवंशराय बच्चन का जन्म इलाहाबाद में सन् 1907 ई. में हुआ। इन्होंने प्रयाग व काशी से शिक्षा प्राप्त की थी। बाद में कैंब्रिज विश्वविद्यालय लंदन से पी.एच.डी. की डिग्री हासिल की। कुछ समय इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करते रहे। उसके बाद विदेश मंत्रालय में भारत सरकार की सेवा में दिल्ली आ गये। इनकी प्रमुख रचनाएँ- मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर, क्या भूलूँ क्या याद करूँ आदि हैं। बच्चन जी ने उमर खैयाम की रुबाइयों का भी हिंदी में सफल अनुवाद किया। इन्हीं से प्रभावित होकर उन्होंने हालावाद का प्रवर्तन किया। आपकी कविता में परंपरा के प्रति विद्रोह, जातिवाद का खंडन और समन्वय की भावनाएँ पायी जाती हैं। इनकी मृत्यु 18 जनवरी, 2003 में हुई।

विषय प्रवेश : कवि लक्ष्य निर्धारित करने से पहले उस तक पहुँचने का मार्ग चुन लेने का आग्रह कर रहे हैं। उनका मानना है कि साहसी और कर्मवीर व्यक्ति ही निर्विघ्न रूप से लक्ष्य तक पहुँच पाता है। अपनी पंक्तियों में सुंदर एवं सहज रूप द्वारा मनुष्य को सचेत करने का प्रयास कवि ने इस प्रकार किया है ।

पूर्व चलने के, बटोही,
बाट की पहचान कर ले।
पुस्तकों में है नहीं छापी गई इसकी कहानी,
हाल इसका ज्ञात होता है न औरों की जबानी,
अनगिनत राही गये इस राह से उनका पता क्या,
पर गये कुछ लोग इस पर, छोड़ पैरों की निशानी,
यह निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ पंथी, पंथ की पहचान कर ले।

पूर्व चलने के, बटोही,
बाट की पहचान कर ले।
यह बुरा है या कि अच्छा व्यर्थ दिन इस पर बिताना
जब असंभव छोड़ यह पथ दूसरे पर पग बढ़ाना,
तू इसे अच्छा समझ यात्रा सरल इससे बनेगी,
सोच मत केवल तुझे ही यह पड़ा मन में बिठाना,
हर सफल पंथी यही विश्वास ले इस पर बढ़ा है,
तू इसी पर आज अपने चित्त का अवधान कर ले।

प्रश्न

1. 'छोड़ पैरों की निशानी' से क्या अभिप्राय है?
2. 'बाट की पहचान' क्या यह शीर्षक उचित है? क्यों?
3. कवि के अनुसार यात्रा कब सरल होती है?
4. हमें किन बातों पर समय बरबाद नहीं करना चाहिए?

SCERT TELANGANA

पूर्व चलने के, बटोही,
बाट की पहचान कर ले।
कौन कहता है कि स्वप्नों को न आने दे हृदय में,
देखते सब हैं इन्हें अपनी उमर अपने समय में,
और तू कर यत्न भी तो मिल नहीं सकती सफलता,
ये उदय होते, लिए कुछ ध्येय नयनों के निलय में,
किंतु जग के पंथ पर यदि स्वप्न दो तो सत्य दो सौ,
स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो सत्य का भी ज्ञान कर ले।

5. कवि ने स्वप्न किसे कहा है?
6. स्वप्नों का नयनों के निलय में आना और हृदय में आना' से कवि का क्या अभिप्राय है?
7. स्वप्न को साकार करने वाले तथ्य कौन से हैं?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

1. कवि ने कहा कि लोग अपने पैरों की निशानी छोड़ जाते हैं, अर्थात ऐसा कार्य कर जाते हैं जिससे दूसरों का मार्गदर्शन होता है। आप कैसे कार्य करना चाहेंगे?
2. कवि का कहना है कि किसी कार्य को करने के पूर्व उसमें आने वाली कठिनाइयों के बारे में विचार करना चाहिए। इससे काम सरल हो जाता है। कार्य करने के पूर्व योजना बनाने का क्या महत्व होता है?
3. 'असफलता यह सिद्ध करती है कि कार्य को पूर्ण रूप से नहीं किया गया'- इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. इस कविता के कवि कौन हैं? उनकी शिक्षा के बारे में आप क्या जानते हैं?
2. पंक्तियों में आये-
   - इसकी कहानी-
   - इसे-
   - इसका-
   - इस पर-
   - इन्हें-
   - ये-

   किसके लिए संबोधित किये गये हैं?
3. उन पंक्तियों का चयन करें जिनके निम्न भाव हैं-

   (क) अच्छे-बुरों की चिंता व्यर्थ है।

   (ख) यात्रा कब समाप्त हो जाएगी उसका समय अनिश्चित है।

(इ) पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं,
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं,
काम कितना ही कठिन हो किंतु उकताते नहीं,

SCERT TELANGANA

भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं,
हो गये इक आन में उनके बुरे दिन भी भले,
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले-फले।

- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (कर्मवीर)

प्रश्न

1. उपर्युक्त पंक्तियों में किस व्यक्तित्व की बात हुई है?
   (क) कर्मठ (ख) भीरु (ग) आलसी
2. 'रह भरोसे भाग्य के' से क्या तात्पर्य है?
   (क) सब पर विश्वास करना (ख) किस्मत पर विश्वास करना
   (ग) स्वयं पर विश्वास करना
3. 'आन में उनके दिन बुरे भी भले' से तात्पर्य है-
   (क) बुरे-भले दिन समान होते हैं (ख) प्रतिज्ञा द्वारा बुरे दिन भले बन सकते हैं।
   (ग) भले दिन कम समय के लिए होते हैं।
4. सब जगह सब काल में वे फूले-फले का अर्थ है-
   (क) काफी मोटे हो जाना (ख) फूल और फल लगना
   (ग) हमेशा विजयी होना

(ई) निम्नलिखित वाक्यों के भाव स्पष्ट कीजिए।

1. अनगिनत राही गये इस राह से उनका पता क्या,
   पर गये कुछ लोग इस पर, छोड़ पैरों की निशानी,
2. हर सफल पंथी यही विश्वास ले इस पर बढ़ा है,
   तू इसी पर आज अपने चित्त का अवधान कर ले।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए।

1. कवि के अनुसार वे कौन होंगे जो जीवन रूपी राह पर अपने पैरों के निशान छोड़ जाते हैं?
2. असमंजस में पड़ना हमारे लिए किस प्रकार अवरोधक सिद्ध हो सकता है?
3. स्वप्न उद्देश्य लेकर आते हैं और हमें क्षणिक आनंद की अनुभूति कराते हैं। अब आप अपने सपनों को साकार करने के लिए किस प्रकार प्रयासरत रहेंगे?
4. 'आशावान' रहने पर निराशा हमें छू नहीं सकती। इस प्रेरणास्रोत को अपने जीवन में आप कैसे बनाये रख सकते हैं?

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर दस-बारह पंक्तियों में लिखिए।

1. कविता की पंक्तियों के आधार पर 'दृढ़ इच्छा' पर प्रकाश डालिए।
2. आत्मविश्वास और पुरुषार्थ व्यक्तित्व-निर्माण को किस प्रकार प्रभावित करते हैं? अपने विचार लिखिए।
3. इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करें-

SCERT TELANGANA

“अनगिनत राही गये इस राह से उनका पता क्या,
पर गये कुछ लोग इस पर, छोड़ पैरों की निशानी।
यह निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ पंथी, पंथ की पहचान कर ले।”

(इ) नीचे दिया गया चित्र देखिए। इस तरह के पाँच प्रेरणादायक प्रसंग लिखिए।

(ई) मनुष्य को सब कुछ आत्मविश्वास, दृढ़ संकल्प एवं पुरुषार्थ के बल पर ही प्राप्त हुआ अन्यथा सीप में मोती छिपे रह जाते, धरती के भीतर रत्न दबे रह जाते, न फसल उगती, न धरती सोना उगलती। अपने अड़ोस-पड़ोस या मित्रों में से किसी दृढ़संकल्पी या कर्मठ व्यक्ति के बारे में बताइए।

भाषा की बात

(अ) सूचना के अनुसार उत्तर लिखिए।

1. पथ, यत्न, अवधान (पर्याय शब्द लिखिए।)
2. अर्थ, बाट, बटोही (शब्दार्थ लिखिए।)
3. सत्य, मूक, सफलता (विलोम शब्द लिखिए।)
4. ‘गिनत’ शब्द में ‘अन’ उपसर्ग जुड़ने से अनगिनत शब्द बना है, अब आप भी ‘अन’ उपसर्ग से अन्य पाँच शब्द बनाइए।

(आ) सूचना पढ़िये। उसके अनुसार अभ्यास कीजिए।

1. कविता में आये तुकबंदी शब्दों को छाँटिए और उन्हें लिखिए।
   जैसे - कहानी - जबानी
2. कविता में आये निम्नलिखित शब्दों के लिए विशेषण लिखिए।
   जैसे - <u>अनगिनत</u> राही .... सरल
   ....समझ .... मत
3. <u>पर</u> गये कुछ लोग इस <u>पर</u>,
   छोड़ पैरों की निशानी

उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित शब्दों का विश्लेषण कीजिए।

SCERT TELANGANA

(इ) **चित्र की घटनाएँ वर्तमान, भूत और भविष्य काल में दर्शाइए।**

जैसे : सूरज देख रहा है। सूरज ने देखा। सूरज देखेगा।

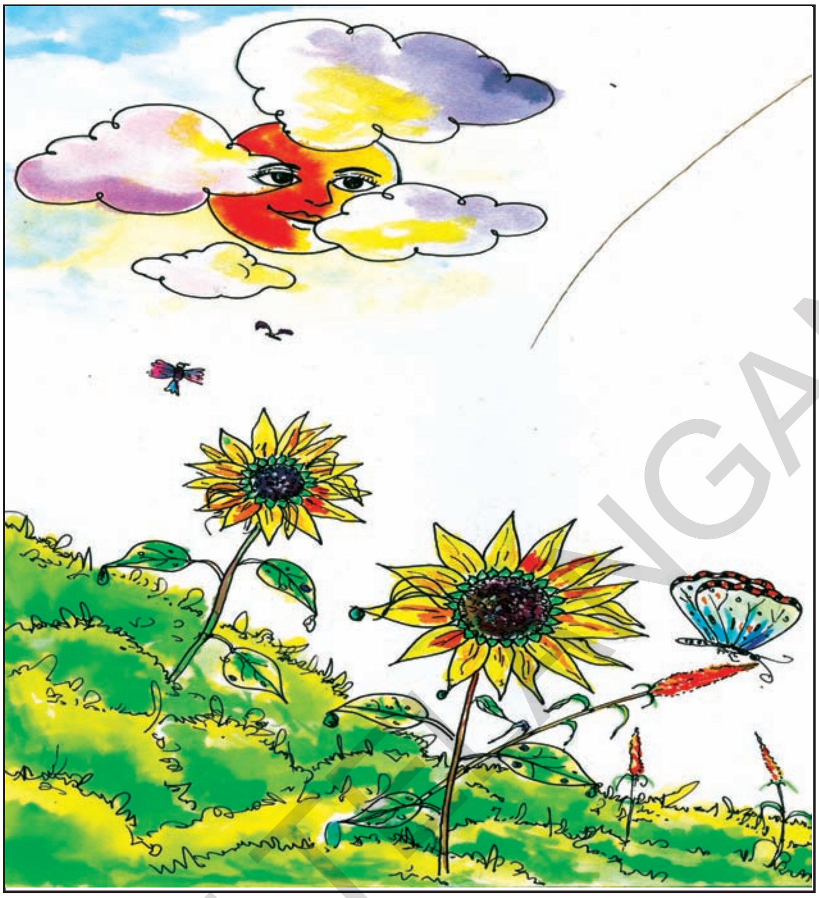

(ई) **निम्नलिखित वाक्यों में न/नहीं/मत का उचित प्रयोग कीजिए।**

1. पुस्तकों में है .... छापी गई इसकी कहानी ।

2. कौन कहता है कि स्वप्नों को .... आने दे हृदय में।

3. स्वप्न पर ही मुग्ध .... हो।

परियोजना कार्य

(अ) **कुछ महापुरुषों के चित्र एकत्र करके चिपकाइए और जीवन के प्रति उनके विचार लिखिए।**

SCERT TELANGANA

12 सफलता की चुनौतियाँ

उन्मुखीकरण

आज के समाज में विशेष आवश्यकता वाले भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वे कभी अपनी कमज़ोरी को महसूस नहीं करते बल्कि एक चुनौती के रूप में लेकर अपने लक्ष्य की ओर पहुँचने की कोशिश करते हैं। इनकी इस कोशिश में वे कई मुसीबतें खुशी से पार करते हैं। यही नहीं वे समाज में ही अपनी समस्या का समाधान खोजते हैं। इनकी इस कोशिश से कोई धावक बनता, तो कोई नृत्यकार तो कोई कुछ। वे साबित करते हैं कि जो व्यक्ति समस्या का समाधान खोजता है वही कुछ पा सकता है।

प्रश्न

1. विशेष आवश्यकता वाले मुसीबतें कैसे पार करते हैं?
2. हमें किन-किन विषयों में विशेष आवश्यकता वालों की सहायता करनी चाहिए?
3. विशेष आवश्यकता वाले को सहानुभूति की नहीं बल्कि प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। क्यों? कारण सहित बताइए।

उद्देश्य

'सफलता की चुनौतियाँ' साक्षात्कार पाठ है। इस विधा के द्वारा छात्रों में प्रश्न-निर्माण, उत्तर-प्रत्युत्तर देने की क्षमता एवं आत्मविश्वास का विकास करना ही इस पाठ का उद्देश्य है।

विधा विशेष

साक्षात्कार प्रश्नोत्तर विधा है। जिसमें उत्तर प्रत्युत्तर की शृंखला प्रश्नों के माध्यम से चलती रहती है। वास्तविक शब्दों में जो व्यक्ति साक्षात (प्रत्यक्ष) हो उससे इस विधा में संचालन करते हैं। किंतु आजकल दूरभाष और ऑनलाइन द्वारा भी साक्षात्कार लिया जा रहा है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

विषय प्रवेश : आज के समाज में विशेष आवश्यकता वाले भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वे कभी अपनी कमज़ोरी को महसूस नहीं करते बल्कि , उसे एक चुनौती के रूप में लेकर अपने लक्ष्य की ओर पहुँचने की कोशिश करते हैं। इनकी इस कोशिश में वे कई मुसीबतें खुशी से पार करते हैं। यही नहीं वे समाज में ही अपनी समस्या का समाधान खोजते हैं। इनकी इस कोशिश से कोई धावक बनता तो कोई नृत्यकार। कोई संगीतज्ञ तो कोई वेटलिफ्टर बनता है। वे साबित करते हैं कि जो व्यक्ति समस्या का समाधान खोजता है वही कुछ पा सकता है।

साक्षात्कारकर्ता - प्रीति जी, नमस्कार! देखिए हम समय पर आ गये हैं आपसे बातचीत करने।

प्रीति मोंगा - (हँसते हुए) नमस्कार, नमस्कार! बैठिए। मैं अभी आयी।
(भीतर से मिक्सी चलने की आवाज़)

साक्षात्कारकर्ता - (मन में) अरे! मुझे तो कहा कि समय का बहुत ध्यान रखती हूँ, कहाँ रह गयी, प्रीति जी?
(ट्रे में दो गिलास लिए प्रीति जी का प्रवेश)

प्रीति मोंगा - (मेज़ पर गिलास रखते हुए) बाहर बहुत गरमी है। लीजिए, पहले थोड़ा जूस पीजिए। (गिलास पकड़ाते हुए)

साक्षात्कारकर्ता - (आश्चर्यचकित भाव से उनकी आँखों की ओर देखते हुए) प्रीति जी यह क्या?

प्रीति मोंगा - मैं अपना सब काम स्वयं करती हूँ। काम भी अच्छा होता है और आनंद भी आता है। चलो, अब कुछ बातचीत का सिलसिला आगे बढ़ाएँ।

साक्षात्कारकर्ता - प्रीति जी, आप दृष्टिहीन होते हुए भी एक सफल महिला मानी जाती हैं। सफलता या कामयाबी को आप किस अर्थ में लेती हैं?

प्रीति मोंगा - मेरे लिए कामयाबी का अर्थ है- सबसे ज़्यादा चुनौतियों का सामना करना। जिसने सबसे ज़्यादा असफलताओं का सामना किया हो, जिसने सबसे अधिक चुनौतियों को स्वीकारा हो और संघर्ष कर उन पर विजय पायी हो, वही व्यक्ति सफल कहलाने का अधिकारी है। मैं तो अभी रास्ते में ही हूँ, मेरे सामने अनगिनत चुनौतियाँ हैं।

साक्षात्कारकर्ता - किसी कार्य में असफल होने पर आपको कैसा लगा है?

प्रीति मोंगा - चलते समय रास्ते में गड्ढे आते हैं। गिरने पर किसी की सहायता से उठूँगी पर अगली बार रास्ता बदलूँगी और खुद उठूँगी। असफलताएँ हमें उठाने के लिए हैं। यदि यही सोचते रहें कि गाड़ी जैसी चल रही है, चलती रहे तो कभी सफलता नहीं पा सकते।

साक्षात्कारकर्ता - प्रीति जी, आप

SCERT TELANGANA

क्या जन्म से................?

प्रीति मोंगा - नहीं, नहीं! मैं छह वर्ष की थी। तभी पाठशाला में पता चला कि मुझे आँख की बीमारी है। मैं समान आकृति वाले अक्षरों को पहचान नहीं पाती थी। बताया गया कि कुछ ही समय में मेरी दृष्टि चली जाएगी। माँ और पिता जी बहुत दुखी थे। आप समझ सकते हैं कि ऐसी हालत में दुख-दर्द और उदासी स्वाभाविक है। परंतु हमारे घर के वातावरण में कोई परिवर्तन नहीं आया। माता-पिता को मेरा सलाम! उन्होंने सब कुछ सामान्य ही रखा। पिता पहले ख़ुद कोई क्रियाकलाप या गतिविधि करते, फिर मुझे सिखाते। हाँ, मुझे वस्तुओं, रंगों को देखने और पहचानने को अधिक कहा जाने लगा। जो कुछ भी दृश्यमान था, उसे आत्मसात कराने की चेष्टाएँ बढ़ गयीं। मेरी दृष्टि की कमी का अगरतला में पता चला था परंतु वहाँ चिकित्सा की कोई सुविधा न थी। स्कूल में मोटी चीज़ों, रंगों की पहचान कर सकती थी। वहाँ मुझे डराया नहीं गया था। अपने अंधेपन से तो नहीं, (हँसते हुए) हाँ, काकरोच से डर गयी थी और एक बार मक्खी नाक में घुस गयी, तो भी डरी थी।

साक्षात्कारकर्ता - आपकी पढ़ाई का क्या हुआ?

प्रीति मोंगा - पिता का तबादला होने पर हम दिल्ली आ गये। आठवीं कक्षा तक विद्यालय की आइरिश नन ने बहुत सहायता की। ज़ुबानी गणित मैं अच्छा कर लेती थी। अलजबरा मेरे लिए चुनौती था, (हँसते हुए) अब भी अच्छा नहीं लगता। मैं सीनियर कैंब्रिज उसी विद्यालय में करना चाहती थी। परंतु अपनी नन अध्यापिका के जाने के बाद मुझे किसी अंध विद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने के लिए कहा गया। मैं पूरी तरह दृष्टिहीन हो चुकी थी। (उदास स्वर में) इस बीच मेरे पिता हृदयरोग के शिकार हो गये। उन्हें दिल का दौरा पड़ा। कितनी गहराई से महसूस करते होंगे वे मेरी दृष्टिहीनता को! पर उन्होंने अपनी उदासी और खिन्नता को छिपाकर रखा। उनके अथक प्रयासों ने ही मुझे निष्क्रिय होने से बचा लिया।

साक्षात्कारकर्ता - फिर आप स्कूल नहीं गयीं क्या?

प्रीति मोंगा - नहीं, मुझे किसी स्कूल में दाखिला नहीं मिला। मुझ जैसी लड़कियों के लिए आज भी बहुत कम विद्यालय हैं। मैं उन दिनों सबसे छिपाकर रात को बहुत रोती। हर सुबह पिता जी ज़ोर से रेडियो चलाते थे। कबीर का दोहा सुना, गुस्सा आता तो इसे ही बोलती जाती-

माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रोंदे मोहिं।

प्रश्न

1. दृष्टिहीन लोग अपने काम स्वयं कैसे कर लेते हैं?
2. प्रीति मोंगा के स्कूली जीवन के बारे में बताइए।

SCERT TELANGANA

इक दिन ऐसा आएगा, मैं रोंदूँगी तोंहि।।

और इक़बाल की ये पंक्तियाँ भी सुनीं....

ख़ुदी को कर बुलंद इतना कि हर तक़दीर से पहले।
ख़ुदा बंदे से ख़ुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है!

इनका असली मतलब जब समझ में आया तो मानो ज़िंदगी की डोर हाथ में आ गयी।

साक्षात्कारकर्ता - कैसे?

प्रीति मोंगा - मैं सकारात्मक सोचने लगी। बार-बार दोहराती- चाहती हूँ सारी कायनात मुझे देखकर कहे, ''वाह! प्रीति वाह! चुनौतियाँ तो आती ही हैं, उन्हें पहचानना ही सबसे बड़ी चुनौती है। बहुत सारे आनंद हैं जो मैं हरदम महसूस करती हूँ। मेरे पास दो कान, नाक, उँगलियाँ अर्थात श्रवण, गंध, स्पर्श आदि की सभी क्षमताएँ हैं। ये तो दृष्टिहीन नहीं? यह समझ आते ही सब सरल हो गया। मुझे रोटी (खाना) बनाना सिखाया गया। मेरी माँ अपने आपको कुरसी से बाँधकर बैठी रहतीं कि चाहे हाथ जले, चाहे रोटी, पर रसोई में मदद करने नहीं आऊँगी! बस, मेरी दृष्टिहीनता की दीवार टूट गयी।

साक्षात्कारकर्ता - आप दृष्टिहीनों वाली सफेद छड़ी का तो प्रयोग करती हैं।

प्रीति मोंगा - हाँ, सफेद छड़ी में कंपनशक्ति होती है। इसके अतिरिक्त जैसा कि मैंने पहले कहा, स्पर्श, श्रवण, स्वाद, गंध - ऐसी शक्तियाँ हैं जो मस्तिष्क से जुड़ी हैं। वहाँ मुझमें कोई कमी नहीं। यदि इन्हें मौक़ा दें तो ये हमें आगे पहुँचा सकती हैं। आत्मविश्वास आ जाने पर सब कुछ सरल और सुलभ हो जाता है। मैं कई काम-धंधों से जुड़ी हूँ। उन्हें ख़ुद चलाती हूँ। महिलाओं और विकलांगों को सिखाती हूँ कि आत्मविश्वास के बल पर आगे बढ़ो। किसी के आगे हाथ मत फैलाओ।

साक्षात्कारकर्ता - आपकी और रुचियाँ क्या हैं?

प्रीति मोंगा - खाना-पीना, गप्पें मारना, काम करना- नशे की तरह। संगीत तो है ही, मन को शांति मिलती है इससे और मैं खूब पढ़ती हूँ- जीवनियाँ, आत्मकथाएँ, उपन्यास, विज्ञान- सब कुछ!

> 3. विशेष आवश्यकता वाले चुनौतियों को कैसे महसूस करते हैं?
> 4. दृष्टिहीन लोगों को किन-किन क्षेत्रों में अधिक रुचि रहती है?

साक्षात्कारकर्ता - (आश्चर्यचकित स्वर में) पर कैसे? आपके आदर्श कौन थे?

प्रीति मोंगा - कंप्यूटर पर। मैं हेलेन केलर की बहुत आभारी हूँ जिन्होंने दृष्टिहीनों के लिए पढ़ना-लिखना सुलभ कर दिया। मैं 'गीता' और 'सुखमनी साहब' का पाठ

जिसके पास धैर्य है वह जो कुछ इच्छा करता है, उसे प्राप्त कर सकता है। - फ्रांकलिन

SCERT TELANGANA

भी करती हूँ। परिवार हमेशा मेरे साथ रहा है। पिता ने सिखाया- अपने से नीचे देखोगे तो सुखी रहोगे। तुम्हारे पास सब कुछ है। पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, पूरी प्रकृति क्या ये कम आदर्श हैं सुखमय जीवन जीने के लिए! मैं किसी पर बोझ नहीं। स्वयं कमाती हूँ। मेरे पति हैं जो हर तरह से मेरे जीवनसाथी हैं। बच्चे हैं और है एक नाती जो कहता है, 'नानी, आप मुझसे टकराती क्यों हैं? (हँसती हैं)

साक्षात्कारकर्ता - आप हमारे बच्चों को क्या संदेश देना चाहेंगी?

प्रीति मोंगा - हर काम को सच्चाई, ईमानदारी और खुशी से करो। खुशियों का हाथ पकड़ो तो और मिलेंगी। अपने सपनों को हक़ीकत में बदलो। जहाँ भी जाओ, वहाँ से कुछ लेकर आओ, सीखकर आओ। जिस दिन सीखना छोड़ दोगे, वही दिन तुम्हारे पतन का होगा। अपने सीखने के दरवाज़े खुले रखो। हाँ, विकलांगों को स्वयं आगे बढ़ने दो। उनके पास असीम शक्तियाँ हैं। काम अपने आप में एक ऐसी अद्भुत शक्ति है जो सफलता को बाँधकर ले आती है। काम आनंद है, काम सुख है और प्रत्येक सही काम होता है - मंगलमय!

साक्षात्कारकर्ता - (हँसते हुए) प्रीति जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद! बहुत आनंद आया आपसे बात करके!

(*रजनीगंधा से साभार*)

5. हेलन केलर कौन हैं? उनके बारे में बताइए।
6. अनपढ़ दृष्टिहीन लोगों की आजीविका कैसे चलती है?
7. दृष्टिहीन लोगों के लिए कौनसी सुविधाएँ उपलब्ध करानी चाहिए?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

1. विशेष आवश्यकता वाले आजकल किन-किन क्षेत्रों में आगे बढ़ रहे हैं?
2. दृष्टिहीन बनने के क्या-क्या कारण हो सकते हैं?
3. किसी को कम आंकना नहीं चाहिए। क्यों?

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. 'चलते समय रास्ते में गड्ढे आते हैं। गिरने पर किसी की सहायता से उठूँगी। असफलताएँ हमें उठाने के लिए हैं। यदि यही सोचते रहे कि गाड़ी जैसी चलती रही है, चलती रहे तो कभी सफलता नहीं पा सकते।'' ये बातें किसने किस संबंध में किससे कही है?
2. 'चाहती हूँ सारी कायनात मुझे देखकर कहे- 'वाह! प्रीति वाह! चुनौतियाँ आती ही हैं। उन्हें पहचानना ही बड़ी चुनौती है।'' इन बातों का क्या आशय है?

(इ) निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

1. मेरे लिए कामयाबी का अर्थ है- सबसे ज़्यादा चुनौतियों का सामना करना।

2. ख़ुदा बंदे से ख़ुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है!
3. जिस दिन सीखना छोड़ दोगे, वही दिन तुम्हारे पतन का होगा। अपने सीखने के दरवाज़े खुले रखो।

(ई) **1. गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

ग्रंथों एवं ज्ञानी, अनुभवी जनों का कहना है कि जीवन एक कुरुक्षेत्र है। कठिनाइयाँ, दुख और कष्ट हमारे साथी हैं। जिसका हमें सामना करना पड़ता है और उनके विरुद्ध संघर्ष करके हमें विजयी बनना है। एक यशस्वी नाटककार ने कहा, 'कायर अपनी मृत्यु से पूर्व अनेक बार मृत्यु का अनुभव कर चुके होते हैं। किंतु वीर एक से अधिक बार नहीं मरते हैं।' इन महापुरुषों को जीवन में अनेक संकटों का सामना करना पड़ा। परंतु वे घबराए नहीं। संघर्ष करते रहे और अंत में सफल हुए। परिश्रम और दृढ़ इच्छाशक्ति, व्यक्ति को संघर्ष करने और जीवन में सफलता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

प्रश्न

1. यह गद्यांश आपको कौनसी प्रेरणा देता है?
2. वीर एक से अधिक बार नहीं मरते। इस पंक्ति का आशय क्या है?
3. कौनसी बातें व्यक्ति को सफल बनाने में मदद करती हैं?

2. चित्र के मुख्यबिंदु जानकर लिखिए।

SCERT TELANGANA

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए।

1. कौनसा व्यक्ति अपने जीवन में सफल कहलाने का अधिकारी बनता है?
2. विशेष योग्यतावाले बालकों को सफलता प्राप्त करने के लिए किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर दस-बारह पंक्तियों में लिखिए।

1. 'समावेशी शिक्षा' से आपका क्या अभिप्राय है?
2. विशेष आवश्यकता वालों को स्वयं आगे बढ़ने दो। उनके पास असीम शक्तियाँ है। सिद्ध कीजिए।

(इ) इस साक्षात्कार को उचित शीर्षक देते हुए निबंध के रूप में लिखिए।

(ई) हेलन केलर विशिष्ट योग्यता वाले व्यक्तियों के लिए एक मिसाल है सिद्ध कीजिए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना के अनुसार अभ्यास कीजिए।

1. कामयाबी, मौक़ा (पर्यायवाची शब्द लिखिए।)
2. क्षमता, शक्ति, चुनौती (वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. गरमी, सकारात्मक, ईमान (विलोम शब्द लिखिए।)
4. नानी, अध्यापक (लिंग बदलकर वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना के अनुसार अभ्यास कीजिए।

1. निष्क्रिय, विद्यालय, आत्मकथा (विच्छेद कर संधि पहचानिए।)
2. दुख-दर्द, काम-धंधा, कमलनयन (विग्रह कर समास पहचानिए।)

(इ) उदाहरण के अनुसार पाठ में आये वाक्य ढूँढ़कर लिखिए।

उदाहरण - मोहन द्वारा पत्र लिखा गया।

(ई) हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

Harish a fourteen years old boy saved Pandit Nehru from an accident. Pandit Nehru then decided to honour the brave boy and such other brave children. Harish Chandra Mehta was the first boy to receive the National Bravery Award.

परियोजना कार्य

कुछ लोग एक की जगह दो-दो, तीन-तीन वस्तुओं का उपयोग करते हैं। ज़्यादा से ज़्यादा वस्तुओं का प्रयोग भी हमारे लिए हानिकारक ही है। जैसे एक घड़ी के अलावा दो-दो, तीन-तीन घड़ियाँ रखना, एक बैग के अलावा दो-दो, तीन-तीन बैग रखना आदि। अधिकाधिक वस्तु विनियोग की आडंबरता से होने वाली हानियों और उसकी रोकथाम के उपायों को स्पष्ट करते हुए एक तालिका बनाकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

SCERT TELANGANA

उपवाचक

☆ गजनंदनलाल पहाड़ चढ़े

–विष्णु प्रभाकर

यह कहानी तब की है, जब गजनंदन लाल सोलह वर्ष के थे। 'यथा नाम तथा गुण' यानी गोल-मटोल हाथी के बच्चे थे। छोटी-छोटी आँखें, बड़े-बड़े कान, मोटे-मोटे हाथ-पैर चलते वैसे ही झूम-झूम कर, बातें भी वैसी ही बुद्धिमानी की करते और स्वभाव से इतने हँसमुख कि रोतों को हँसा देते।

उन्हें एक दिन पता लगा कि स्कूल के लड़कों की एक टोली गोमुख की सैर करने जा रही है। गोमुख से गंगा जी निकलती हैं। वह गंगोत्री से भी 21 किलोमीटर आगे है। बस गजनंदन तुरन्त प्रिंसिपल के पास हाज़िर हो गये। बोले, ''सर, मैं भी जाऊँगा।''

प्रिंसिपल साहब ने कहा, ''तुम पहाड़ पर चढ़ोगे? तुमसे तो अपना शरीर ही नहीं सँभलता।''

गजनंदन ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, ''सर, शरीर अपनी फिकर आप करेगा। हमें तो देखना यह है कि मेरे जाने से लाभ कितने होंगे।''

प्रिंसिपल अचरज से हँसे, पूछा, ''क्या-क्या लाभ होंगे? बताओ तो ज़रा। तुम तो पाँच आदमियों का राशन डकार जाओगे।''

'' वह तो ठीक है सर,'' गजनंदन ने बिना हिचके जवाब दिया, ''लेकिन मुझे सर्दी भी तो कम लगेगी। ठंडी हवा को मेरी हड्डियों तक जाने का रास्ता कहाँ मिलेगा। इसलिए मैं सदा चुस्त रहूँगा। यह तो हुआ एक लाभ। अब दूसरा सुनिए। जब मेरे साथी थक जाएँगे, हिम्मत हार बैठेंगे तब मैं उन्हें हँसा-हँसा कर फिर से तरोताज़ा कर दूँगा। मुझे देखकर उनकी हिम्मत लौट आएगी। तीसरा लाभ सबसे महत्त्वपूर्ण है। मान लीजिए, हमें कहीं रस्सा बाँधने की जरूरत हुई और वहाँ चट्टान न हुई तो मेरे शरीर से यह काम बेखटके लिया जा सकता है। मैं अपने पैर बर्फ़ में गाड़ लूँगा...''

यह सुनना था कि सभी लोग ठहाका मार हँस पड़े। गजनंदन भी खूब हँसे, इतने कि तोंद हिलने लगी। ज़रा शांति हुई तो बड़ी नम्रता से निवेदन किया, ''सर, एक लाभ मेरा भी होगा। मेरा वजन कुछ कम हो जाएगा।''

''हाँ-हाँ, यह तो हमने सोचा ही नहीं था।'' प्रिंसिपल बोले, ''तुम ज़रूर जाओ।''

और इस प्रकार गजनंदन की पहाड़ पर चढ़ने की कहानी शुरू हुई। तैयारी पर तैयारी होने लगी। वह हो चुकी तो मंजिल दर मंजिल रेल, बस, जीप द्वारा यात्रा करते-करते सात लड़के, एक मास्टर जी और दो सेवक एक दिन साँझ पड़े गंगोत्री में प्रकट हो गये। वहाँ दूर-दूर तक आदमी का पता नहीं था। सब कहीं सन्नाटा छाया था। कहाँ दिल्ली की गहमा-गहमी, कहाँ ये चुप्पी! पर ऊँची-ऊँची बर्फीली चोटियों पर सूरज की किरणें चमक रही थीं। नीचे से आती गंगा की कल-कल ध्वनि में बड़ा प्यारा संगीत था। बच्चे सब थकान भूलकर मंत्र-मुग्ध से इधर-उधर देखने लगे।

SCERT TELANGANA

तभी एक स्वामी जी वहाँ आये। वे वहीं रहते थे और वे ही उन्हें गोमुख ले जाने वाले थे। उन्होंने सबसे पहले उन्हें गरम-गरम दूध के साथ एक-एक गोली दी। कहा, ''इसे खाकर दूध पी लो। बिस्तर तैयार है। सो जाओ। कल सवेरे ही हमें आगे बढ़ना है।''

बच्चे थक तो रहे ही थे। सर्दी भी खूब थी। बस दूध पीकर बिस्तरों में घुस गये। स्वामी जी उन्हें कहानी सुनाते रहें। गजनंदन फुलझडी छोड़ते रहे, इसलिए वे कब सो गये, पता नहीं लगा। सवेरे जब आँख खुली तो बाहर सुनहरी धूप चमक रही थी। गजनंदन कूदकर चबूतरे पर आ गये, बोले, ''देखो-देखो यहाँ मेरे कितने साथी पहले से ही मौजूद हैं!''

साथी विद्यार्थी चकित होकर बोले, ''तुम्हारे साथी ? कहाँ हैं वे?''

गजनंदन ने उत्तर दिया, ''क्यों, ये पहाड़ जो हैं! बड़ा होकर मैं ऐसा ही तो लगूँगा - काला-काला भारी-भरकम 'भूधराकार शरीरा'... ''

लड़के खूब हँसे, बोले, ''तुमने अपने भाइयों को बहुत जल्दी पहचान लिया।''

बात आगे बढ़ती कि मास्टर साहब ने पुकारकर कहा, ''लड़को, जल्दी तैयार हो जाओ। हमें अभी आगे बढ़ना है, नहीं तो मौसम ख़राब हो जाएगा।''

बस फिर क्या था। बच्चों ने तुरन्त बिस्तर बाँधे, राशन बाँधा, स्काउटिंग की पोशाक पहनी। अपने कंधों पर थैले बाँधे और उनमें भरा ज़रूरी सामान-मेवा, मिश्री, दवाई, बिस्कुट वगैरह-वगैरह। गजनंदन बीच-बीच में हर चीज़ चखते और झूम-झूमकर तारीफ करते। कभी बाहर भागते, कभी अंदर आते। मास्टर साहब बोले, ''गजनंदन, तुम इस तरह तो जल्दी थक जाओगे। अभी तो ऊपर चढ़ना है।''

गजनंदन ने उत्तर दिया, ''सर, उसी का अभ्यास कर रहा हूँ। जल्दी से स्वामी जी की कुटिया में आइए। गरम-गरम हलवा हमारे स्वागत में आँखें बिछाए बैठा है। इसे ग्रहण कीजिए। उसमें कस्तूरी पड़ी है। और कस्तूरी हिरन की नाभि में पैदा होती है। हिरण कूदते हैं, सो हम भी कूदेंगे।''

इस प्रकार हँसते-हँसाते चढ़ाई आरंभ हुई। गोमुख जाने वाली पगडंडी बड़ी सँकरी थी। एक लड़के ने, जिसका नाम भोलाशंकर था, मास्टर जी से कहा, ''सर, पगडंडी पर गजनंदन कैसे चलेगा? कहीं तोंद अड़ गई तो...''

मास्टर जी ने मुस्कराकर कहा, ''ज़रा आगे देखो। स्वामी जी के साथ-साथ चल रहा है।''

अचरज से विद्यार्थियों ने देखा कि सचमुच वह स्वामी जी के साथ था। वहीं से चिल्लाकर उसने कहा, ''भोलाशंकर ! दिल्ली में एक कुतुब-मीनार है लेकिन यहाँ इतनी कि गिन भी न सको।''

''बाप रे! सचमुच ये तो डरावनी हैं,'' भोलाशंकर ने काँपते हुए ऊपर देखा और कहा, ''एक भी गिर पड़ी तो...''

गजनंदन, जो उनके आने तक वहीं रुक गया था, बोला, ''गिरेगी तो गिरेगी। स्वामी जी कहते हैं कि पहाड़ में न तो सोचते हैं न रुकते हैं, बस चलते हैं। हम रुक भी गए तो मीनार थोड़े ही रुकेगा। तुम्हें डर लगता है तो ज़ोर से हँसो। हँसने से डर दूर भाग जाता है।''

और वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा। हँसी तो छूत का रोग है। गजनंदन हँसा तो सभी हँस पड़े और हँसते-हँसते उन भयानक रास्तों को ऐसा पार कर गये जैसे बत्तखें पानी में तैरती हैं। स्वामी

SCERT TELANGANA

जी ने खुश होकर गजनंदन का राशन दुगुना कर दिया।

रास्ते में उन्होंने भोजपत्र के पेड़ देखे, जड़ी-बूटियाँ देखीं, जंगली भेड़ों का गिरोह देखा, तुतराल नाम के जानवर की पूँछ देखी, रीछ के पंजों के निशान देखे। और इस प्रकार देखते-देखते, हँसते-हँसाते वे पहुँच गए गोमुख। 'गोमुख' बर्फ के पहाड़ में बन गयी गुफा को कहते हैं। इसी में से गंगा नदी तेज़ी से बहती हुई बाहर आती है और पहली बार सूरज की रोशनी से गले मिलती है।

लेकिन वे लोग वहाँ नहीं रुके। स्वामी जी उन्हें तपोवन ले जाना चाहते थे। रास्ता कुछ कठिन था पर साथ में गजनंदन हो तो कठिनाई पनाह माँगने लगती है, और फिर तपोवन तो है ही जादू का मैदान। इतनी ऊँचाई पर बर्फ से ढकी गगनचुंबी चोटियों के बीच एक अति सुंदर सुहावना, हरी-हरी घास का मैदान, नाना प्रकार के फूलों के सुंदर-सुंदर पौधे, बीच-बीच में कल-कल करके गाते नाले-झरने। गजनंदन तो सामान फेंककर उस मैदान में दौड़ने लगे। मास्टर जी ने कहा, "क्या करते हो? साँस तो फूल रहा है, मरोगे?"

दौड़ते-दौड़ते गजनंदन ने कहा, "सर, दौड़ने से खून भी शरीर में दौड़ता है। बैठ गये तो बर्फ की तरह जम जाएगा। हम शिला बन जाएँगे, जैसे ये पहाड़।"

बस फिर क्या था। सभी लड़के दौड़ने लगे, कबड्डी खेलने लगे। ऐसा शोर मचा कि पहाड़ भी गूँज उठे। गजनंदन ने कहा, "स्वामी जी, राशन तैयार कर लीजिए। पेट में चूहे कूदने लगे हैं।"

हँसते-हँसते स्वामी जी ने कहा, "चिंता न करो, अभी बिल्ली आती है। पहले थर्मसों से चाय निकालो। मूँग की दाल का हलवा गरम हो चुका है। जब तक रोटी तैयार हो, चाय-हलवे का नाश्ता करो।"

नाश्ता करने के बाद गजनंदन ने फूलों की जाँच शुरू कर दी। मौसम सुहावना था। गजनंदन ने साथियों के कान में कुछ कहा। सबने सिर हिलाकर हाँ में हाँ मिलाई। बस वे सब सुंदर-सुंदर फूल तोड़ने लगे। तोड़ते ही रहते यदि स्वामी जी ने आवाज़ न दे ली होती, "बच्चो, तुम कहाँ हो? भोजन तैयार है, जल्दी आओ। अँधेरा होने लगा है।"

खाना खाते-खाते अचानक क्या हुआ कि भोलाशंकर चीख उठा, "बिच्छू!"

सब चौंक उठे। गजनंदन उठते-उठते बोला, "कहाँ है बिच्छू?"

भोलाशंकर ने घिघियाते हुए कहा, "मेरी कमीज़ पर।"

अँधेरा हो आया था। गजनंदन ने तुरंत छलाँग लगायी और भोलाशंकर की कमीज को पकड़ लिया। बिच्छू जैसी काली वस्तु को देखा। फिर ज़ोर-ज़ोर से हँसते हुए और उस वस्तु को हिलाते हुए कहा, "देखो, यह है बिच्छू! यह गाता है।"

अचरज से सबने देखा, वह चाबियों का गुच्छा था जो भोलाशंकर की जेब से निकलकर गोद में गिर पड़ा था। फिर तो मारे ठहाकों के वे तंबू उखड़ते-उखड़ते बचे। लेकिन सहसा गजनंदन ने कहा,

"ऑर्डर ! ऑर्डर! "

इस अनोखे, पट-परिवर्तन से सब एकदम चुप हो गये। गजनंदन ने आदेश के स्वर में प्रार्थना की, "मेरा आग्रह है कि स्वामी जी, मास्टर जी और दोनों सेवक, चारों एक लाइन में खड़े हो जाएँ।

SCERT TELANGANA

उनके सामने मेरे साथी दो-दो करके खड़े हों। मैं अभी आता हूँ।''

कहकर वह रुका नहीं। पास के तंबू में दौड़ गया। जब लौटा तो उसके हाथ में चार पुष्प-मालाएँ थीं। एक माला लेकर वह स्वामी जी के सामने खड़ा हो गया। शेष तीन तीनों ग्रूप लीडरों को दे दीं। फिर सबने गायत्री मंत्र का पाठ किया। चारों के गले में मलाएँ डालीं और कोरस में कहा, ''आप चारों हमारे लिए बहुत कष्ट उठा रहे हैं। हम आपका इन फूल-मालाओं से सत्कार करते हैं। और यह भी निवेदन करते हैं कि हम और भी ऊपर जाएँगे।''

चारों इस नाटकीय स्वागत से बड़े प्रसन्न हुए। स्वामी जी बोले, ''गजनन्दन, तुम्हारी हिम्मत की दाद देता हूँ। पर आगे तो जान-लेवा चढ़ाई है। तुम चढ़ सकोगे?''

गजनंदन ने जवाब दिया, ''स्वामी जी, अब तक मेरा वजन कम से कम दस पौंड तो घटा ही होगा, इसलिए ख़तरा अब कम है।''

हँसते-हँसते स्वामी जी ने कहा, ''अच्छा सवेरे देखेंगे।''

सवेरे स्वामी जी ने चार विद्यार्थियों को आगे जाने के लिए छाँटा-गजनंदन, भोलाशंकर, तुषार और माचवे। शेष तीन विद्यार्थी, मास्टर जी और एक सेवक पाँचो नीचे डाक बँगले में लौट गये और ये छह जने आगे बढ़ गये। रास्ते में बस बर्फ़ ही बर्फ़ थी। बर्फ़ से ढकी चट्टानें थीं। धीरे-धीरे चढ़ना पड़ता था। कभी काले-काले डरावने बादल अँधेरा कर देते। कभी-कभी सूरज की किरणें आँख-मिचौली खेलने आतीं तो शिखरों पर चाँदी, सोना और मरकत मणियाँ जगमगा उठतीं।

धीरे-धीरे वे 6,000 मीटर की ऊँचाई तक पहुँच गये। चारों ओर आसमान को छूते पर्वत ऐसे खड़े थे जैसे ऋषि लोग ऊपर को मुँह करके भगवान की स्तुति कर रहे हों। 6,000 मीटर का मतलब भी तो आसमान में पाँच-छह किलोमीटर ऊपर चढ़ना है। यहाँ पहुँच कर वे विद्यार्थी भी चुप हो गये लेकिन गजनंदन कहाँ मानने वाले थे, बोले, ''स्वामी जी, हमारे बड़े-बड़े कवि यहाँ अवश्य आये होंगे।''

स्वामी जी ने कहा, ''क्यों, तुम्हें कैसे पता लगा?''

गजनंदन ने बड़े शांत भाव से कहा, ''नहीं आते तो महाकवि इक़बाल कैसे लिखते - पर्वत वह सबसे ऊँचा, हमसाया आसमां का, वह संतरी हमारा, वह पासबां हमारा। और रवींद्रनाथ कैसे गाते-अंबर चुंबित भाल हिमालय, शुभ्र तुषार किरीटिनी।''

गजनंदन की ये बातें सबकी थकान दूर कर देतीं। जब वे सब अपना राष्ट्रध्वज वहाँ गाड़ रहे थे वह बराबर, 'सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा' और 'जन गण मन' और 'वंदे मातरम्' गाता रहा।

यहीं से वे लौट पड़े क्योंकि रात दूर नहीं थी। उतरायी थी, उत्साह भी था, लड़के दौड़ने लगे। गजनंदन सबसे आगे था। स्वामी जी ने बहुत समझाया पर अल्हड़ बच्चों के कान कहाँ होते हैं। सेवक तंबू ठीक करने और आग जलाने आगे चला गया था।

रास्ते में एक झील पड़ती थी। पूरी की पूरी बर्फ़ से ढकी थी। लड़कों ने सोचा। पत्थरों में चलना बड़ा कष्टकर है। क्यों न झील की बर्फ़ पर होकर चलें।

SCERT TELANGANA

पर वे ये नहीं जानते थे कि बीच-बीच में बर्फ़ कच्ची भी होती है। जैसे ही वे बीच में पहुँचे यकायक भोलाशंकर के पैरों के नीचे की बर्फ़ फट गयी और वह नीचे झील में गड़प!

गिरते-गिरते वह चीखा। सबने उसे देखा, एक क्षण तो वे डर के मारे काँप उठे। लेकिन गजनंदन ने तुरंत चिल्लाकर कहा, "तुषार, यहाँ चट्टान नहीं है। तुम बर्फ के उस गड्ढे को और गहरा करो। माचवे, तुम लंबे हो, रस्सी को भोलाशंकर के पास फेंको।"

फिर भोलाशंकर को डाँटकर कहा, "रस्सी पकड़, जल्दी कर मूर्ख! नहीं तो जम जाएगा। डरना नहीं, रस्सी मेरी कमर में बँधी है जो तेरी कमर से तीन गुनी मोटी है!"

और यह कहते-कहते उसने रस्से का दूसरा छोर अपनी कमर में लपेटा और गड्ढे में कूद गया। तब तक चीख सुनकर स्वामीजी भी वहाँ पहुँच गये थे। उन्होंने यह सब देखा तो 'अश-अश' कर उठे। लेकिन समय कहाँ था। डाँटते हुए भोलाशंकर को आदेश दिया, "रस्से के सहारे किनारे की ओर बढ़ो।"

डाँटने से भी साहस पैदा होता है, विशेषकर खतरे में। भोलाशंकर ठंड के मारे अकड़ रहा था पर डाँट ने उसे गरमी दी। रस्से के सहारे-सहारे वह किनारे पर आ गया। स्वामी जी ने तुरंत उसे उठा लिया। तब तक गजनंदन भी बाहर आ गया था। जब तक स्वामी जी भोलाशंकर के गीले कपड़े उतारें, उसने अपना चमड़े वाला कोट उतारा और कहा, स्वामी जी, यह कोट इसे पहना दो। मैं ठहरा हाथी का बच्चा। मेरी हड्डियों तक पहुँचने की राह ठंड को नहीं मिलेगी।"

सभी गजनंदन की बात पर हँस पड़े। फिर स्वामी जी ने भोलाशंकर को कस्तूरी दी, गरम-गरम चाय दी। फिर कहा, "हमें तुरंत अपने तंबू में पहुँचना चाहिए। यहाँ ठहरना ख़तरनाक है।"

जब संकट सामने आ जाता है तो साहस भी दूर नहीं रहता। स्वामी जी ने भोलाशंकर को बहुत दूर तक पीठ पर बाँधे रखा। उसी तरह उन्होंने तपोवन पार किया, गोमुख पहुँचे। सफेद अँधेरा, काला अँधेरा बन गया था। ऊँची-ऊँची चोटियाँ उसमें खो गयी थीं लेकिन उनका सेवक तंबू लगाए उनकी राह देख रहा था। आग जल रही थी। बस खाना गरम करना था।

सब प्रसन्न हो उठे। आग के चारों ओर बैठकर चाय पीने लगे।

भोलाशंकर भी अब तक सब कुछ भूल चुका था। लेट-लेटा वह सबकी बातें सुनता रहा। तभी तुषार ने कहा, "डाक बँगले में मास्टर जी हमारी राह देख रहे होंगे।"

गजनंदन ने उत्तर दिया, "चिंता मत करो, यहाँ से पाँच किलोमीटर ही तो है। मैं अभी देसी टेलीफोन से बात करता हूँ।"

और उनके देखते-देखते वह गंगा के किनारे गया। डाक बँगले की ओर मुँह किया और ज़ोर से बोला मास्टर जी, मैं गजनंदन, हाथी का बच्चा, गोमुख से बोल रहा हूँ। हम आज नहीं आ रहे। कल सवेरे आएँगे। सब ठीक है।"

एक क्षण बाद उधर हलकी सी आवाज गूँजी, "ठीक है! सुन लिया! "

उसके बाद वे फिर आग के चारों ओर आ बैठे। जब तक खाना तैयार हो, गजनंदन उनको कहानियाँ सुनाता रहा, पैराडी सुनाता रहा, हँसता रहा। उसने यह प्रमाणित कर दिया कि मोटे लोग

SCERT TELANGANA

खुश-दिल ही नहीं होते, दिलेर भी होते हैं, दिमाग़ वाले भी होते हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ - दस पंक्तियों में लिखिए।

1. गजनंदन लाल ने गोमुख की सैर के लिए प्रिंसिपल से अनुमति कैसे ली?
2. स्वामीजी के द्‍वारा गजनंदन लाल का राशन दुगना करने का कारण क्या है?
3. कहानी में आये हास्य प्रसंगो में से अपने मनपसंद प्रसंग की व्याख्या कीजिए।
4. इस कहानी की भाषा शैली पर अपने विचार बताइए।

SCERT TELANGANA

शब्दकोश

संकेताक्षरों का विवरण					
अं	–	अंग्रेज़ी शब्द	भाव०	–	भाववाचक संज्ञा
अ०	–	अकर्मक क्रिया	मुहा०	–	मुहावरा
क्रि०	–	क्रिया	वि०	–	विशेषण
क्रि०वि०	–	क्रिया विशेषण	सं०	–	संस्कृत
पु०	–	पुल्लिंग	स्त्री	–	स्त्री लिंग
फ०	–	फारसी			

अंततोगत्वा (क्रि.वि०, सं०) - अंत में, आखिरकार

अंधड़ (पु०) - तेज़ आँधी

अंधाधुंध (वि०) - बिना सोचे-समझे

अबाध (सं०, वि) - बाधा रहित

अभियुक्त (पु०) - जिस पर आरोप लगा हो

अरिकरनी (क्रि०) - शत्रु-कर्म

अवधान (पु०, सं०) - मन एकाग्र करके किसी ओर लगाना, सावधानी

अहंवादी (क्रि०) - घमंडी

अक्षरशः (क्रि०) - ज्यों का त्यों

अक्षुण्ण (वि०, सं०) - ज्यों का त्यों, समूचा

आक्रांत (वि०) - कष्टग्रस्त, दुःखी

आखेट (पु०, सं.) - शिकार

आह (विस्मयादि बोधक, सं.) - पीड़ा, शोक

इल्ज़ाम (पु०) - आरोप

ऊहापोह (पु०) - मन में होने वाला तर्क-वितर्क

कंदरा (स्त्री०) - गुफ़ा, गुहा

कुंज (पु०, सं०) - वृक्षों या लताओं से झुरमुट मंडप की तरह ढका हुआ स्थान

SCERT TELANGANA

कुंजड़ा (सं०, पु०)	-	सब्ज़ी बेचने वाला
कवच (सं०)	-	बख्तर
क्षति (वि०)	-	नुकसान
क़ायनात (स्त्री०)	-	दुनिया, संसार
क्राल (अं०)	-	घुटनों के बल
खिन्नता (सं०,भाव०)	-	दुःख, उदासी
खोह (पु०)	-	गुफ़ा, कंदरा
चपेट में आना (मु०)	-	दबाव में आना
चित्त (पु०, सं०)	-	अंतःकरण, मन
चौपड़ (स्त्री०)	-	चौसर नामक खेल जो बिसात पर गोटियों से खेला जाता है
त्रिपुरारि धनु (सं०)	-	शिव जी का धनुष
दमखम (पु०)	-	पूरी ताक़त
दरियादिली (भाव०)	-	परोपकार की भावना
दलील (स्त्री०)	-	तर्क
नायाब (फा०, वि०)	-	बहुत बढ़िया
निहायत (वि०)	-	पूरी तरह से
निषिद्ध (वि०)	-	जिस पर रोक लगायी गयी हो
प्रचंड (क्रि०वि०)	-	अति तीव्र, प्रखर
बंध्या (वि०, स्त्री०)	-	जिसे संतान न हो सकती हो
बटोही (पु०)	-	पथिक, यात्री
बिलगाउ (पु०)	-	अलग होना
बिलोक (सं०, पु०)	-	देखना
भग्नावशेष (पु०)	-	खंडहर
भन्ना जाना (क्रि०)	-	क्रोधित होना
भंजनिहारा (संज्ञा)	-	भंग करने वाला, तोड़ने वाला
मलारन (सं०)	-	मल्हार राग
मुवक्किल (पु०)	-	वह जो अपने काम के लिए वकील नियुक्त करता है

SCERT TELANGANA

रिपु (सं०, पु०) - शत्रु
रिप्लिका (अं०) - प्रतिकृति
रिस (स्त्री०) - गुस्सा
रिसार (संज्ञा) - क्रोध करने वाला
रुग्ण (वि०) - बीमार
लरिकाई (भाव०) - बचपन
लोष्ठवत (सं०, वि०) - मिट्टी के ठेले के समान
वचन (पु०, सं०) - वाणी
वर्चस्व (वि०) - दबदबा
विरुद्ध (वि०) - खिलाफ़
विरल (वि०) - कम
विराजमान (वि०) - बैठा हुआ
विषम (सं०, वि०) - मुश्किल
विस्फरित (वि०) - और अधिक फैला हुआ
शगल (पु०) - व्यापार, मनोविनोद
शामत (फा०) - मुसीबत, दुर्भाग्य
सतह (स्त्री०) - ऊपरी भाग
समारंभ (पु०) - प्रारंभ, उद्घाटन
सरसब्ज़ (फा०, वि०) - हरा-भरा
स्वीकृति (क्रि०) - मंजूरी
संभुधनु (सं०) - शिव जी का धनुष
साक्षात्कार (पु०) - भेंटवार्ता
सिलवटें (स्त्री०) - शिकन
हया (स्त्री०) - लज्जा, शर्म
हुड़दंग (पु०) - उपद्रव युक्त उछल-कूद

छात्रो! आप लोगों ने अब तक कई नीति वाक्य पढ़े हैं। आप स्वयं भी किसी नीति वाक्य का सृजन कर सकते हैं। नीचे दिये गये खाली स्थान में एक नीति वाक्य का सृजन कर अपना नाम लिखिए।

.... - ....

SCERT TELANGANA